राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-४, अंक-१ लखनऊ अक्तूबर २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

नरेंद्र मोदी और शिंजो एबी द्वारा बुलेट ट्रेन का शिलान्यास

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत यात्रा पर आए जापान के प्रधानमंत्री शिंजो एबी ने बुलेट ट्रेन का शिलान्यास किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मौके पर जापान के प्रधानमंत्री का गुजरात की भूमि पर स्वागत करते हुए कहा कि शिंजो एबी हमारे सबसे घनिष्ठ मित्र हैं। उन्होंने कहा कि आज भारत ने अपने वर्षों पुराने सपनों को पूरा करने के लिए एक कदम उठाया है। बुलेट ट्रेन परियोजना ऐसा प्रोजेक्ट है जिसमें तेज गति भी है और तेज प्रगति भी। सुविधा भी है और सुरक्षित भी। यह प्रोजेक्ट रोजगार भी लाएगा और व्यापार भी लाएगा। आज का दिन भारत और जापान के लिए ऐतिहासिक और भावनात्मक है।

पीएम मोदी ने कहा कि हमारा उद्देश्य है इस तकनीक को भरपूर प्रयोग करते हुए इसे देश के गरीबों के जीवन से जोड़ा जाए। इस प्रोजेक्ट से रेलवे को फायदा होगा, रेलवे के नेटवर्क को नएपन की ओर जाना होगा। इस प्रोजेक्ट से मेक इन इंडिया को भी मजबूती

मिलेगी। यातायात के हर क्षेत्र में हमने एक समान इंफ्रास्ट्रकचर पर जोर दिया है।

जापान के प्रधानमंत्री ने इस मौके पर अपने भाषण की शुरुआत नमस्कार से की। उन्होंने कहा कि भारत के नए अध्याय की शुरुआत से खुशी हो रही है। ताकतवर भारत जापान के हित में है। हम प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों का पूरा समर्थन करते हैं।

बुलेट ट्रेन की तकनीक जापान की है लेकिन संसाधन भारत से ही जुटाए जाएंगे। इस प्रोजेक्ट के पूरा होने के बाद रेलवे का भार घटेगा और उसका समय भी बचेगा। मन में एक सपना है कि जब आजादी के ७५ साल पूरे हों यह योजना भी पूरी हो जाए। मुझे भरोसा है कि इस प्रोजेक्ट को समय से पूरा कर लिया जाएगा। मैं गुजरात और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री का भी आभार प्रकट करता हूं।

शिंजो आबे ने कहा, जापान का 'ज' और इंडिया का 'इ' अगर मिला दें तो यह 'जय' बन जाता है। जापान और भारत एशिया के दो बड़े लोकतंत्र हैं। मैं चाहता हूं कि अगली बार बुलेट ट्रेन में प्रधानमंत्री मोदी के साथ आऊं। मुझे गुजरात बहुत पसंद है।

एबी ने कहा कि मेरे मित्र पीएम मोदी एक दूरदर्शी नेता है। मैंने प्रधानमंत्री मोदी के बुलेट ट्रेन के सपने को पूरा करने की प्रतिज्ञा ली है। जापान और भारत के इंजिनियर दिन-रात इस प्रोजेक्ट को पूरा करेंगे। ■

प्रधानमंत्री मोदी के 'मन की बात' : सकारात्मकता पर जोर

नई दिल्ली। पीएम मोदी ने २३ सितम्बर को अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के जरिए लोगों को संबोधित किया. इस कार्यक्रम का यह ३६वां एपिसोड था. लोगों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि इस कार्यक्रम ने मुझे देश की सकारात्मक शक्ति से जुड़ने का अवसर दिया है. यह मेरे मन की बात

नहीं है, ये देश की मन की बात है. पीएम मोदी ने कहा, 'मुझे इस कार्यक्रम में लोगों के अनेक सुझाव मिलते रहते हैं और उनमें से कई बातें मुझे प्रेरणा देती है. इस कार्यक्रम के जरिए देश के कोने-कोने से लोग मुझ तक अपनी बात पहुंचाते हैं.'

पीएम मोदी ने कहा, कार्यक्रम के तीन साल पूरे हो गए हैं और अब समाज के अलग-अलग क्षेत्र से जुड़े लोग इसका आकलन करेंगे. पीएम मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में तमाम पहलुओं के बारे में लोगों को संबोधित किया, जिनमें प्रमुख रूप से स्वच्छता अभियान, खादी और पर्यटन शामिल हैं.

पीएम मोदी ने स्वच्छता अभियान को लेकर कहा कि हमने निर्णय किया था कि १५ सितंबर से लेकर २ अक्टूबर (गांधी जयंती) तक हम अपने आस-पास स्वच्छता अभियान चलाएंगे. उन्होंने कहा कि आज हर कोई इस अभियान का हिस्सा बन रहा है. संकल्प से सिद्धि हो रही है. हर कोई इसे मानता है.

पीएम मोदी ने बताया कि राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद भी इस स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं. इस मुहिम को छेड़ने के बाद सार्वजनिक स्थान पर सफाई का खास ख्याल रखा जा रहा है, अब लोग टोकते हैं. गंदगी होने नहीं दे रहे हैं. ढाई करोड़ बच्चों ने स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया. पेंटिंग, निबंध आदि में हिस्सा लिया.

पीएम मोदी ने अपने संबोधन मे कश्मीर के बिलाल डार की बात कही और बताया कि वह स्वच्छता के साथ-साथ आजीविका कमा रहा है. श्रीनगर नगर निगम ने उसे अपना एंबेसेडर बनाया है. उन्होंने कहा कि निगम से उसे गाड़ी दी है, टेलिफोन दिया है. ■

इसरो का चंद्रयान-२ अभियान, चाँद की सतह पर भेजेगा २ यान

नई दिल्ली। अगले साल इसरो भारत के दो यान चांद पर भेजेगा, जिनमें से पहला यान इसरो द्वारा और दूसरा वैश्विक प्रतियोगिता में भाग ले रही टीम इंडस द्वारा तैयार किया जा रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) २०१८ में ही इन दो चन्द्र अभियान की तैयारी में है। पहला यान चंद्रयान-२ है जो इससे पहले इसरो के अभियान चंद्रयान-१ के मुकाबले कई गुना बेहतर होगा। दूसरा यान अंतरिक्ष उत्साही लोगों के एक समूह इंडस टीम का होगा।

चन्द्रयान-२ का उद्देश्य चांद की सतह के नीचे की

(शेष पृष्ठ २ पर)

कोलकाता हाईकोर्ट ने मुहर्रम के दिन दुर्गा प्रतिमा विसर्जन पर लगी रोक हटाई

कोलकाता। मुहर्रम के दिन दुर्गा प्रतिमा विसर्जन की अनुमति न देने के पश्चिम बंगाल सरकार के फैसले को कोलकाता हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया. अदालत ने इस बारे में सुनवाई करते हुए राज्य सरकार के इस फैसले की तीखी आलोचना की थी. हालांकि हाईकोर्ट के इस फैसले पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने कहा कि कोई उनकी गर्दन काट सकता है, मगर यह नहीं बता सकता कि उन्हें क्या करना है. उन्होंने हालांकि साफ किया है कि वे राज्य में शांति बहाली के लिए जरूरी सभी कदम उठाएंगी.

मामले की सुनवाई करते हुए कार्यवाहक चीफ जस्टिस राकेश तिवारी और जस्टिस हरीश टंडन की खंडपीठ ने कहा कि मुहर्रम के दिन लोग रात १२ बजे तक मूर्ति विसर्जित कर सकेंगे. अदालत ने इसके लिए पुलिस को सारे इंतजाम करने को कहा है. उसने पुलिस से कहा कि वह दोनों समुदायों के लोगों के लिए अलग-अलग रास्ता तैयार करे. साथ ही, विज्ञापनों के जरिये लोगों को प्रतिमा विसर्जन और ताजिये के लिए तय किए गए रूटों की जानकारी दे.

अदालत ने राज्य सरकार पर फिर से बहुत कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि इस मामले में राज्य सरकार ने बिना किसी ठोस आधार के कार्रवाई की है. उसने आगे कहा कि सरकार बहुत ज्यादा क्षमतावान हो सकती है लेकिन वह चांद और कैलेंडर की गति नहीं रोक सकती.

हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद ममता बनर्जी ने कहा कि उन पर लोग तुष्टीकरण का तब आरोप नहीं लगाते, जब वे हिंदुओं के पर्व को मनाती हैं. उन्होंने कहा कि यदि मुस्लिमों को सहूलियतें देती हैं तो उन पर तुष्टीकरण का आरोप लगता है. ममता बनर्जी ने आगे कहा कि यदि यह तुष्टीकरण है तो वे आगे भी ऐसा करती रहेंगी. विपक्षी दल भाजपा ने प्रतिमा विसर्जन पर लगी रोक के बाद उन पर तुष्टीकरण की राजनीति का आरोप लगाया था. ■

कार्टून दिल्ली का डॉन कौन...? -- मनोज कुरील

स्वस्थ जीवनशैली का समर्थन पेप्सी के विज्ञापन को विराट कोहली ने कहा 'ना'

नई दिल्ली। पेप्सिको और टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली अब अलग हो चुके हैं। कोहली पिछले ६ साल से पेप्सिको से जुड़े थे। हाल में कोहली ने उन चीजों के विज्ञापन नहीं करने के संकेत दिए थे जिनका इस्तेमाल वे खुद नहीं करते या फिर जो उनके फिटनेस के आदर्श के विपरीत हैं। हालांकि कोहली को इससे करोड़ों का नुकसान तो होगा, लेकिन स्वस्थ जीवनशैली के लिए कदम उठाने पर उनकी तारीफ भी होगी।

कोहली के इस कदम से पेप्सिको को अब भारत के सबसे अधिक महंगे सेलिब्रिटी चेहरे का साथ नहीं मिल पाएगा। पेप्सिको के प्रवक्ता ने एक ईमेल में इसकी पुष्टि करते हुए लिखा है कि कोहली के साथ पुराना समझौता समाप्त हो गया है। उन्होंने कहा कि वह नई संभावनाओं की तलाश के लिए संपर्क में हैं। पेप्सिको के साथ कोहली का करार ३० अप्रैल को खत्म हो चुका है।

कोहली ने एक इंटरव्यू में वैसी चीजों के विज्ञापन नहीं करने के संकेत दिए थे, जिनका इस्तेमाल वे खुद नहीं करते। कोहली की विज्ञापनों की फीस रोजाना के हिसाब से ४.५ करोड़ से ५ करोड़ रुपये तक है। फोर्ब्स पत्रिका की दुनिया के सबसे अमीर खिलाड़ियों की २०१७ की सूची में कोहली को ८९वां स्थान मिला है। कोहली की कुल कमाई सालाना २२ मिलियन डॉलर है। इसमें ३ मिलियन डॉलर सैलरी से, जबकि १९ मिलियन डॉलर विज्ञापनों से आते हैं। ■

(पृष्ठ १ का शेष) **चन्द्रयान-२ योजना**

जांच करना है।

वहीं इंडस के अभियान का उद्देश्य २१ दिनों की यात्रा के बाद २६ जनवरी को वैश्विक चंद्र प्रतियोगिता के तहत भारत का तिरंगा चांद की सतह पर फहराना है। आईआईटी दिल्ली के पूर्व छात्र राहुल नारायण के नेतृत्व में इंडस कई युवा इंजीनियरों का समूह है। उनके अनुसार वैश्विक प्रतियोगिता जीतने वाले समूह को गूगल से तकरीबन १९२.४६ करोड़ रुपये मिलेंगे। इस प्रतियोगिता में टीम को चांद की जमीन पर ५०० मीटर तक का चक्कर लगाना है। इसके साथ हाईडेफिनेशन वाली पिक्चर धरती पर भेजनी है। ■

सुभाषित

वरमेको गुणी पुत्रो निर्गुणैश्च शतैरपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च ताराः सहस्रशः।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- एक ही गुणवान पुत्र श्रेष्ठ है, गुणहीन सैकड़ों पुत्र बेकार हैं। अन्धकार को एक ही चन्द्रमा दूर कर देता है, हजारों तारे नहीं कर पाते।

पद्यार्थ- गुणी एक सुत श्रेष्ठ है, व्यर्थ अनेक गँवार।
एक चन्द्र तम को हरै, तारे नहीं हजार।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

विकास की ओर सही पग

कोई भी नई योजना जो कोई भी सरकार लाती है, प्रारम्भ में जनता को पहेली जैसी लगती है और यदि वह योजना कम्प्यूटर व इंटरनेट जैसी इलैक्ट्रॉनिक सुविधाओं पर आधारित हो, तो सम्बंधित वर्ग को प्रारम्भ में कष्ट होना लगभग अवश्यंभावी है। केन्द्र सरकार ने सभी तरह के करों को समाप्त करके जीएसटी नाम से जो एकमात्र कर लगाने की योजना शुरू की, वह भी इसका अपवाद नहीं है। यह कर योजना अपने आप में एक क्रांतिकारी कार्य है और लम्बे समय तक सोच-विचार के बाद ही केन्द्र सरकार ने इसको लागू किया है। लेकिन इसकी सबसे बड़ी कमी या विशेषता यह है कि इसमें सारा हिसाब कम्प्यूटर पर तैयार करके इंटरनेट पर डालना होता है।

इससे जो व्यापारी अभी तक प्रायः असली या जाली कागजों पर ही अपना हिसाब-किताब रखते रहे हैं, उन्हें सारा लेन-देन, खरीद-बिक्री आदि कम्प्यूटर पर रखने में स्वाभाविक रूप से कष्ट हो रहा है। एक तो इसलिए कि उनका दो नम्बर का कार्य बन्द हो गया है और एक नम्बर में सारा कार्य होने के कारण उन्हें अपनी कमाई के एक-एक पैसे पर टैक्स देना पड़ेगा। इससे जो व्यापारी लाखों-करोड़ों कमाते हुए भी अपनी आय कुछ हजार रुपयों में बताया करते थे और टैक्स का बड़ा भाग डकार जाते थे, उनकी साँस अटकी हुई है।

दूसरा कारण यह है कि जीएसटी में रिटर्न जमा करने के लिए जो सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं वे गम्भीर कमियों से ग्रस्त हैं, जिससे रिटर्न ठीक तरह तैयार नहीं हो पा रहे और इसीलिए समय पर जमा नहीं हो पा रहे। साधारण व्यापारी तो क्या चार्टर्ड एकाउंटेंट तक ये रिटर्न तैयार करने में बहुत कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। उस पर तुर्रा यह कि ये रिटर्न हर महीने तीन बार देने थे।

इन कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार ने अभी तक के अनुभवों के आधार पर अपनी जीएसटी योजना में कई सकारात्मक सुधार किये हैं। सबसे बड़ा सुधार तो यह है कि छोटे व्यापारियों को अब रिटर्न हर महीने नहीं बल्कि तीन महीने में एक बार ही जमा करना पड़ेगा। दूसरा यह कि छोटे व्यापारियों की परिभाषा सुधार कर डेढ़ करोड़ तक के सालाना टर्नओवर वाले व्यापारियों को भी इस वर्ग में शामिल किया गया है। इससे देश के लगभग ८५ प्रतिशत व्यापारी छोटे व्यापारी कहलायेंगे। इस निर्णय का व्यापार जगत में भारी स्वागत हुआ है।

इसके अतिरिक्त कई आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं पर जीएसटी की दर कम की गयी है, जिसका सीधा लाभ देश की आम जनता को होगा।

केन्द्र सरकार के इस निर्णय से यह भी स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान सरकार जन साधारण की समस्याओं के प्रति बहुत सम्वेदनशील है और त्वरित कार्यवाही करने में विश्वास रखती है। यही मोदी जी की विशेषता है।

नोटबंदी और जीएसटी के कारण देश की अर्थव्यवस्था को प्रारम्भ में जो झटका लगा था, अब अर्थव्यवस्था उस झटके से उबर रही है। बाजारों में फिर रौनक आ गयी है और आयात-निर्यात भी बढ़ने लगा है। हालांकि कई लोग कह रहे हैं कि यह सुधार त्यौहारी मौसम के कारण हुआ है। हो सकता है कि यह बात सत्य हो, लेकिन यह कल्पना करना गलत होगा कि त्यौहारी मौसम समाप्त होने के बाद अर्थव्यवस्था फिर से गोते खाने लगेगी। विश्व मुद्रा कोष ने अर्थव्यवस्था मजबूत होने के जो संकेत दिये हैं, वे अकारण नहीं हैं। वैसे आने वाला समय ही बतायेगा कि अर्थव्यवस्था कैसी रहेगी। ■

आपके पत्र

आभार। **- प्रदीप कुमार तिवारी, अशोक दर्द, प्रीती श्रीवास्तव, हरमिंदर सिंह, सुरेन्द्र हंसपाल, भोगी प्रसाद**

बहुत सुंदर अंक आदरणीय हार्दिक आभार मेरी रचना को स्थान देने के लिए।
- नवीन कुमार जैन

हार्दिक आभार! सादर अभिनंदन! **- मनवीर शर्मा राज भोपाली**

हार्दिक आभार मेरी रचना को पत्रिका में सम्मिलित करने के लिए।
- तनूजा नंदिता

नमस्कार सर! आभार व्यक्त करता हूँ दिल से आपका, जो आपने मेरी रचना को भी जगह दी अपनी पत्रिका में। **- राज सिंह**

जय विजय का सितंबर २०१७ का अंक पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। हमेशा की तरह विशेष साजसज्जा व उच्च कोटि की रचनाएं अपने में समाहित किये हुए यह अंक भी अविस्मरणीय लगा। मेरी भी एक लघुकथा को पत्रिका में स्थान देने के लिए तथा अंक भेजने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। **-- राजकुमार कांदु**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

पितर स्मरण का महापर्व : पितृपक्ष

डॉ प्रदीप उपाध्याय

लौकिक और अलौकिक जगत की अवधारणा सभी धर्मों में मान्य की गई है। लौकिक जगत जिसमें हम निवास कर रहे हैं और अलौकिक जगत वह है जो हमें दिखाई नहीं देता किन्तु हमारी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पितृलोक भी उस अलौकिक जगत का ही हिस्सा है। पितृ लोक में विचरण करने वाले पितृजनों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करने की मान्यता प्रचलित है। ऐसा नहीं है कि हिन्दू धर्मावलम्बी ही ऐसा करते हैं। भिन्न-भिन्न रूप में श्रद्धापूर्वक स्मरण करने की परम्परा अन्य मतावलम्बियों, धर्मावलम्बियों में भी प्रचलित है।

हिन्दू धर्म में भाद्रपद पूर्णिमा से लेकर आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक पितृ पक्ष का विधान है। इन दिनों में पितरों को जल अर्पित कर उनकी मृत्यु तिथि पर श्राद्ध कर्म किया जाता है। माता-पिता तथा अन्य पितृ जनों की मृत्यु के पश्चात उनके लिए श्रद्धापूर्वक किये जाने वाले कर्म को पितृ श्राद्ध कहा जाता है।

'श्रद्धया इदं श्राद्धय' अर्थात् जो श्रद्धा से किया जाए वही श्राद्ध है। हिन्दू धर्म में पितृ जनों की सेवा को ही सबसे बड़ी पूजा माना गया है। संभवतः इसीलिए हिन्दू धर्म शास्त्रों में पितरों का उद्धार करने के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। यह अवधारणा भी इसी कारण रही होगी कि पुत्री विवाह पश्चात् अपनी ससुराल चली जाती है और इसी कारण पुत्र को यह दायित्व सौंपा गया है। पितरों को मृत्यु पश्चात् विस्मृत न कर दिया जाए, इसीलिए उनका श्राद्ध करने का विधान किया गया है। हिन्दू धर्मग्रन्थों में मनुष्य पर मुख्य रूप से तीन प्रकार के ऋण माने गए हैं- पितृ ऋण, देव ऋण तथा ऋषि ऋण। इनमें पितृ ऋण सर्वोपरि है। पितृ ऋण में माता-पिता के अतिरिक्त वे सभी बुजुर्ग भी शामिल हैं जिनकी व्यक्ति के जीवन धारण करने तथा उसके विकास में सहभागिता रही है।

पितृ पक्ष में मन, कर्म और वचन से संयम बरतने की अपेक्षा की जाती है। पितरों का स्मरण कर उन्हें जल अर्पित किया जाता है, निर्धन और ब्राह्मणों को दान दिया जाता है। मान्यता है कि जो अपने पितरों को तिल मिश्रित जल से तीन-तीन अंजलियाँ प्रदान करते हैं, उनके जन्म से तर्पण के दिन तक के पापों का नाश हो जाता है। हिन्दू मान्यता के अनुसार जन्म-मृत्यु तथा पुनः जन्म निश्चित है। सभी को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। जन्म मृत्यु का क्रम निरन्तर चलता रहता है। इसी कारण पितृ पक्ष में तीन पीढ़ियों तक के पिता पक्ष तथा तीन पीढ़ियों तक के ही मातृ पक्ष के पूर्वजों के लिए तर्पण का विधान है। तर्पण में प्रथमतः दिव्य पितृ तर्पण, देव तर्पण, ऋषि तर्पण तथा दिव्य मनुष्य तर्पण के पश्चात् स्व-पितृ तर्पण का विधान है। इसमें सभी

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

भेड़ के पीछे भेड़ न बनें

डॉ विवेक आर्य

राम रहीम, रामपाल, कुमार स्वामी, राधे माँ, निर्मल बाबा... यह सूची जितनी चाहो बड़ी कर लो। क्या कारण है पाखंड की ये दुकानें रोज खुलती जा रही हैं? इस कारण एक ही है- मनुष्य का वेद में वर्णित कर्मफल व्यवस्था पर विश्वास न करना। 'जो जैसा कर्म करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा' यह ईश्वरीय व्यवस्था है। आज इस मूल मंत्र पर विश्वास न करके हर कोई परिश्रम करने से बचने का मार्ग खोजने में लगा रहता है। विद्यार्थी यह सोचता है कि गुरु का नाम लेने से उसके अच्छे नंबर आएंगे। व्यापारी यह सोचता है कि गुरु का नाम लेने से व्यापार में भारी लाभ होगा। बेरोजगार यह सोचता है कि उसकी गुरु का नाम लेने से सरकारी नौकरी लग जाएगी। विदेश जाने का इच्छुक यह सोचता है कि गुरु का नाम लेने से उसका वीसा लग जायेगा। किसी घर में कोई नशेड़ी हो तो घर वाले सोचते है कि गुरु के नाम से उसका नशा छूट जायेगा।

अगर किसी का कोई महत्वपूर्ण काम बन भी जाता है, तो वह उसका श्रेय गुरु के नाम को देता है, न कि अपने पुरुषार्थ को, परिश्रम को। यही प्रवृति अन्ध-विश्वास को जन्म देती है। एक दूसरे की सुन-सुनकर लोग भेड़ के पीछे भेड़ के समान डेरों के चक्कर काटना आरम्भ कर देते हैं, गुरु को ईश्वर बताना आरम्भ कर देते हैं। एक समय ऐसा आता है कि तर्क शक्ति समाप्त हो जाने पर गुरु के हर जायज और नाजायज दोनों कथनों में उन्हें कोई अंतर नहीं दीखता। वे आंख बंद करके उसकी हर नाजायज मांग का भी समर्थन करते हैं। ऐसा प्रायः आपको हर डेरे के साथ देखने को मिलेगा। दिखावे के लिए हर डेरा कुछ न कुछ सामाजिक सेवा के नाम पर करता है। मगर जानिए धन की तीन ही गति होती है- एक दान, दूसरा भोग और तीसरा नाश।

अनैतिक तरीकों से कमाया गया काला धन बहुत बड़ी संख्या में इन डेरों में दान के रूप में आता हैं। ऐसे धन का परिणाम व्यभिचार, नशा आदि कुकर्म होना कोई बड़ी बात नहीं हैं। ऐसे में जब यह भेद खुल जाता है, तो मामला कोर्ट में पहुँचता है। सरकारें इन डेरों को वोट बैंक के रूप में देखती हैं, इसलिए वे इन पर कभी हाथ नहीं डालतीं। इसलिए सरकार से इस समस्या का समाधान होना बेईमानी कहलायेगी। यही डेरे भेद खुल जाने पर कोर्ट पर दवाब बनाने के लिए अपने चेलों का इस्तेमाल करते हैं। यही रामपाल के मामले में हुआ था, यही राम रहीम के मामले में हो रहा है। पात्र बदलते रहेंगे, मगर यह प्रपंच ऐसे ही चलता रहेगा।

इसका एक ही समाधान है- वैदिक सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार। यह आर्यसमाज की नैतिक जिम्मेदारी बनती है। स्वामी दयानन्द आधुनिक भारत में एकमात्र ऐसी हस्ती हैं जिन्होंने न अपना नाम लेने का कोई गुरुमंत्र दिया, न अपनी समाधि बनाने दी, न ही अपने नाम से कोई मत-सम्प्रदाय बनाया। स्वामी दयानन्द ने प्राचीन काल से प्रतिपादित ऋषि-मुनियों द्वारा वर्णित, श्री राम और श्री कृष्ण सरीखे महापुरुषों द्वारा पोषित वैदिक धर्म को पुनःस्थापित किया। उन्होंने अपना नाम नहीं अपितु ईश्वर के सर्वश्रेष्ठ निज नाम ओउम् का नाम लेना सिखाया। उन्होंने अपना मत नहीं अपितु श्रेष्ठ गुण-कर्म और स्वभाव वाले अर्थात् आर्यों को संगठित करने के लिए आर्य समाज स्थापित किया। स्वामी दयानन्द का उद्देश्य केवल एक ही था- वेदों के सत्य उपदेश से कल्याण हो, वेदों का सन्देश अधिक से अधिक समाज में प्रसारित हो। यही गुरुडम और डेरों की दुकानों को बंद करने का एकमात्र विकल्प है। ■

कर्नाटक में हिंदी विरोध

तारकेश कुमार ओझा

छात्र जीवन में एक बार दक्षिण भारत की यात्रा का संयोग बन गया। तब तमिलनाडु में हिंदी विरोध की बड़ी चर्चा होती थी। हमारी यात्रा ओड़िशा के रास्ते आंध्र प्रदेश से शुरू हुई और तमिलनाडु तक जारी रही। इस बीच केरल का एक हल्का चक्कर भी लग गया। केरल तो हम बस राजधानी त्रिवेन्द्रम तक ही जा सके थे। यह मेरे जीवन की पहली और अब तक की आखिरी दक्षिण भारत यात्रा है। ८० के दशक की इस यात्रा के बाद फिर कभी वहां जाने का संयोग नहीं बन सका। हालांकि मुझे दुख है कि करीब एक पखवाड़े की इस यात्रा में कर्नाटक जाने का सौभाग्य नहीं मिल सका।

दक्षिण की यात्रा में मैने अनुभव किया कि तमिल-नाडु समेत दक्षिण के राज्यों में बेशक लोगों में हिंदी के प्रति समझ कम है। वे अचानक किसी को हिंदी बोलता देख चौंक उठते हैं। लेकिन विरोध का स्तर दुर्भावना से अधिक राजनीतिक है। तमिलनाडु समेत दक्षिण के सभी राज्यों में तब भी वह वर्ग जिसका सम्बंध पर्यटकों से होता था, धड़ल्ले से टूटी-फूटी ही सही लेकिन हिंदी बोलता था। उन्हें यह बताने की भी जरूरत नहीं होती थी कि हम हिंदी भाषी है। समय के साथ समूचे देश में हिंदी की व्यापकता व स्वीकार्यता बढ़ती ही गई। अंतर-राष्ट्रीय शक्तियों व बाजार की ताकतों ने भी हिंदी की व्यापकता को स्वीकार किया है।

लेकिन लंबे अंतराल के बाद कर्नाटक में अचानक शुरू हुआ हिंदी विरोध समझ से परे है। वह भी उस पार्टी द्वारा जिसका स्वरूप राष्ट्रीय है। आज तक कभी कर्नाटक जाने का मौका नहीं मिलने से दावे के साथ तो कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं हूं। लेकिन लगता है कि इस विरोध को वहां के बहुसंख्यक वर्ग का समर्थन प्राप्त नहीं है। यह विरोध सामाजिक कम और राजनीतिक ज्यादा है। मुझे याद है कि लगभग पांच साल पहले एक बार बंगलोर में उत्तर-पूर्व के लोगों के साथ कुछ अप्रिय घटना हो गई थी। इसी समय मुंबई समेत महाराष्ट्र के कुछ शहरों में भी परप्रांतीय का मुद्दा जोर पकड़ रहा था, जिसके चलते हजारों की संख्या में इन प्रदेशों के लोग ट्रेनों में भर-भरकर अपने घरों को लौटने लगे।

लेकिन कुछ दिनों बाद अंधेरा मिटा और उन राज्यों के लोग फिर बंगलौर समेत उन राज्यों को लौटने लगे, जो उनकी कर्मभूमि है। मुझे याद है तब अखबारों में एक आला पुलिस अधिकारी की हाथ जोड़े उत्तर-पूर्व से वापस बंगलोर पहुंचे लोगों का स्वागत करते हुए खबर और फोटो प्रमुखता से अखबारों में छपी थी। यह तस्वीर देख मेरा मन गर्व से भर उठा था। मुझे लगा कि देश के हर राज्य को ऐसा ही होना चाहिए, जो धरतीपुत्रों की तरह उन संतानों को भी अपना माने जो कर्मभूमि के लिहाज से उस जगह पर रहते हैं।

आज तक मैने कर्नाटक में हिंदी विरोध या दुर्भावना की बात कभी नहीं सुनी थी। लेकिन एक ऐसे दौर में जब भाषाई संकीर्णता लगभग समाप्ति की ओर है, कर्नाटक में नए सिरे से उपजा हिंदी विरोध स्वादिष्ट भोजन की थाली में कंकड़ की तरह चुभ रहा है। आज के दौर में मैने अनेक ठेठ हिंदी भाषियों को मोबाइल या लैपटॉप पर हिंदी में डब की गई दक्षिण भारतीय फिल्में घंटों चाव से निहारते देखा है। अक्सर रेल यात्रा के दौरान मुझे ऐसे अनुभव हुए हैं। बल्कि कई तो इसके नशेड़ी बन चुके हैं। और अहिंदीभाषियों की हिंदी फिल्मों के प्रति दीवानगी का तो कहना ही क्या। मुझे अपने आस-पास ज्यादातर ऐसे लोग ही मिलते हैं जिनके मोबाइल के कॉलर या रिंग टोन में उस भाषा के गाने सुनने को मिलते हैं जो उनकी अपनी मातृभाषा नहीं है।

मैं जिस शहर में रहता हूं वहां की विशेषता यह है कि यहां विभिन्न भाषा-भाषी के लोग सालों से एक साथ रहते आ रहे हैं। यहां किसी न किसी बहाने सार्वजनिक पूजा का आयोजन भी होता रहता है। प्रतिमा विसर्जन परंपरागत तरीके से होता है, जिसमें युवक अमूमन उन गानों पर नाचते-थिरकते हैं जिसे बोलने वाले शहर में गिने-चुने लोग ही हैं। शायद उस भाषा का भावार्थ भी नाचने वाले लड़के नहीं समझते। लेकिन उन्हें इस गाने की धुन अच्छी लगती है तो वे बार-बार यही गाना बजाने की मांग करते हैं, जिससे वे अच्छे से नाच सके। एक ऐसे आदर्श दौर में किसी भी भाषा के प्रति विरोध या दुर्भावना सचमुच गले नहीं उतरती। लेकिन देश की राजनीति की शायद यही विडंबना है कि वह कुछ भी करने-कराने में सक्षम है। ■

३५ए जैसे कानूनों का बोझ देश क्यों उठाए?

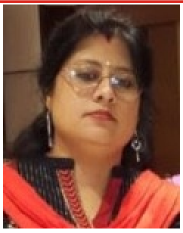

डॉ नीलम महेन्द्र

भारत का हर नागरिक गर्व से कहता कि कश्मीर हमारा है लेकिन फिर ऐसी क्या बात है कि आज तक हम कश्मीर के नहीं हैं? भारत सरकार कश्मीर को सुरक्षा सहायता संरक्षण और विशेष अधिकार तक देती है लेकिन फिर भी भारत के नागरिकों के कश्मीर में कोई मौलिक अधिकार भी नहीं है? आज पूरे देश में ३५ए पर बात हो रही है और मामला कोर्ट में विचाराधीन है।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्द भी याद आते हैं कि 'कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत से ही कश्मीर समस्या का हल निकलेगा।' किन्तु ये तीनों चीजें कश्मीर में कहीं दिखाई नहीं देतीं। कश्मीरियत आज आतंकित और लहूलुहान है। इंसानियत की कब्र आतंकवाद बहुत पहले ही खोद चुका है और जम्हूरियत पर अलगवादियों का कब्जा है।

मूल प्रश्न यह है कि जम्मू कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा प्रदान करने वाली धारा ३७० और ३५ए लागू होने के बावजूद कश्मीर आज तक 'समस्या' क्यों है? कहीं समस्या का मूल ये ही तो नहीं हैं? जब भी इन धाराओं पर कोई बात होती है तो फारुख अब्दुल्ला हों या महबूबा मुफ्ती कश्मीर के हर स्थानीय नेता का रुख आक्रामक और भाषण भड़काऊ क्यों हो जाते हैं?

सोशल मीडिया के इस दौर में 'धारा ३७० और ३५ए क्या हैं' यह तो अब तक सभी जान चुके हैं, लेकिन 'क्यों हैं' इसका उत्तर अभी भी अपेक्षित है।

धारा ३७० जो कि भारतीय संविधान के २१ वें भाग में समाविष्ट है और जिसके शीर्षक शब्द हैं 'जम्मू कश्मीर के सम्बन्ध है अस्थायी प्रावधान'। वह धारा जो खुद एक अस्थायी प्रावधान है,उसकी आड़ में १४ मई १९५४ को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की अनुशंसा पर तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद द्वारा ३५ए को 'संविधान के परिशिष्ट दो' में स्थापित किया गया था।

२००२ में अनुच्छेद २१ में संशोधन करके २१ए को उसके बाद जोड़ा गया था, तो अनुच्छेद ३५ए को अनुच्छेद ३५ के बाद क्यों नहीं जोड़ा गया? उसे परिशिष्ट में स्थान क्यों दिया गया? जबकि संविधान में अनुच्छेद ३५ के बाद ३५ए भी है, लेकिन उसका जम्मू कश्मीर से कोई लेना देना नहीं है। इसके अलावा जानकारों के अनुसार जिस प्रक्रिया द्वारा ३५ए को संविधान में समाविष्ट किया गया वह प्रक्रिया ही अलोकतांत्रिक है एवं भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३६८ का भी उल्लंघन है जिसमें निर्धारित प्रक्रिया के बिना संविधान में कोई संशोधन नहीं किया जा सकता।

एक तथ्य यह भी कि जब भारत में विधि के शासन का प्रथम सिद्धांत है कि 'विधि के समक्ष' प्रत्येक व्यक्ति समान है और प्रत्येक व्यक्ति को 'विधि का समान संरक्षण' प्राप्त होगा, तो क्या देश के एक राज्य के कुछ नागरिकों को विशेषाधिकार देना क्या शेष नागरिकों के साथ अन्याय नहीं है?

यहाँ 'कुछ' नागरिकों का ही उल्लेख किया गया है क्योंकि ३५ए राज्य सरकार को यह अधिकार देती है कि वह अपने राज्य के 'स्थायी नागरिकों' की परिभाषा तय करे। इसके अनुसार जो व्यक्ति १४ मई १९५४ को राज्य की प्रजा था या १० वर्षों से राज्य में रह रहा है वो ही राज्य का स्थायी नागरिक है।

इसका दंश झेल रहे हैं गोरखा समुदाय के लोग। इसका दंश झेल रहे हैं वो परिवार जो १९४७ में पश्चिमी पाकिस्तान से भारत में आए थे। जहाँ देश के बाकी हिस्सों में बसने वाले ऐसे परिवार आज भारत के नागरिक हैं वहीं जम्मू कश्मीर में बसने वाले ऐसे परिवार आज ७० साल बाद भी शरणार्थी हैं। इसका दंश झेल रहे हैं १९७० में प्रदेश सरकार द्वारा सफाई के लिए विशेष आग्रह पर पंजाब से बुलाए जाने वाले वो सैकड़ों दलित परिवार जिनकी संख्या आज दो पीढ़ियाँ बीत जाने के बाद हजारों में हो गई है लेकिन ये आज तक न तो जम्मू कश्मीर के स्थाई नागरिक बन पाए हैं और न ही इन लोगों को सफाई कर्मचारी के आलावा कोई और काम राज्य सरकार द्वारा दिया जाता है।

जहाँ जम्मू कश्मीर के नागरिक विशेषाधिकार का लाभ उठाते हैं, वहीं इन परिवारों को उनके मौलिक अधिकार भी नसीब नहीं हैं। जहाँ पूरे देश में दलित अधिकारों को लेकर तथाकथित मानवाधिकारों एवं दलित अधिकार कार्यकर्ता बेहद जागरूक हैं और मुस्तैदी से काम करते हैं, वहाँ कश्मीर में दलितों के साथ होने वाले इस अन्याय पर सालों से मौन क्यों हैं? ये परिवार जो सालों से राज्य को अपनी सेवाएं दे रहे हैं विधानसभा चुनावों में वोट नहीं डाल सकते, इनके बच्चे व्यवसायिक शिक्षण संस्थानों में प्रवेश नहीं ले सकते। क्या यही कश्मीरियत है? यही जम्हूरियत है? यही इंसानियत है?

वक्त आ गया है यह समझ लेने का कि संविधान का ही उपयोग संविधान के खिलाफ करने की यह कुछ (शेष पृष्ठ ३१ पर)

बच्चों का आहार

विजय कुमार सिंघल

भारत में प्रत्येक बच्चे की माँ अपने बच्चे के खान-पान के विषय में बहुत चिन्तित रहती है, जो कि स्वाभाविक भी है। यह चिन्ता पहले ही दिन से शुरू हो जाती है, हालांकि नवजात शिशु का एकमात्र आहार उसकी माँ का दूध ही होता है। शिशु के लिए माँ का दूध सर्वश्रेष्ठ ही नहीं अमृत के समान है। इसलिए यदि कोई माँ वास्तव में अपने शिशु का भला चाहती है, तो उसे कम से कम एक साल तक शिशु को अपना ही दुग्धपान कराना चाहिए। इससे शिशु न केवल स्वस्थ रहता है, बल्कि उसकी रोगप्रतिरोधक क्षमता भी बनी रहती है।

कोई मजबूरी होने पर ही वे अपने शिशु को उपलब्धता के अनुसार क्रमशः किसी अन्य महिला का दूध, गाय का दूध, बकरी का दूध या मक्खन निकला भैंस का दूध दे सकती हैं। किसी भी हालत में उनको डिब्बाबंद सूखा दूध कम से कम एक साल की उम्र तक नहीं देना चाहिए।

एक साल का होने पर ही बच्चे का पाचन तंत्र अन्न से बनी वस्तुओं को पचाने योग्य होता है। इसलिए तभी उसे अन्न से बनी हल्की वस्तुएं जैसे पतली दाल, दलिया, उपमा, खिचड़ी आदि देना प्रारम्भ करना चाहिए। प्राचीन काल में बच्चे को अन्न खिलाना प्रारम्भ करने के अवसर पर एक संस्कार और समारोह हुआ करता था, जिसे अन्नप्राशन संस्कार कहते हैं। आजकल इसकी परम्परा टूट गयी है और इसके स्थान पर हर वर्ष जन्मदिन मनाने की परम्परा चल गयी है, जिनमें मोमबत्ती बुझाने जैसी मूर्खतायें की जाती हैं।

माँ की असली समस्या तब प्रारम्भ होती है, जब बच्चा अन्न खाने लगता है और दूध से बनी वस्तुओं को कम पसन्द करता है। यही समय है जब माँ आहार के सम्बंध में अपने बच्चे का सही मार्गदर्शन कर सकती है। इस समय बच्चे को जैसी वस्तुओं का स्वाद लगाया जाएगा, वह जीवन भर वैसी ही वस्तुओं को पसन्द करेगा, इसकी चिन्ता किये बिना कि वह वस्तु उसके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है या हानिकारक। इसलिए माता का यह कर्तव्य है कि इस समय बच्चे को केवल स्वास्थ्य के लिए लाभदायक आहार ही दें और हानिकारक वस्तुओं का स्वाद उसके मुँह को न लगने दें।

बच्चे की खान-पान की पसन्द को दिशा देने के लिए वे फलों और अन्न से बनी सात्विक वस्तुएँ विभिन्न तरह से बनाकर उनको खिला सकती हैं, जैसे इडली, उपमा, दलिया, खिचड़ी, खीर, छाछ, लस्सी, फलों का रस, फल, फ्रूट चाट, आलू चाट, कस्टर्ड, शाकाहारी केक और सैंडविच, नूडल आदि। उनको अधिक चटपटेपन से बचायें और मैदा से बनी भारी व तली हुई वस्तुओं से भी दूर रखें। किसी भी हालत में उनको कम उम्र में पिज्जा, पेट्टीज, बर्गर, चाऊमीन, मंचूरियन जैसी चीजें न दें। यहाँ तक कि अंडे से बने केक भी नहीं देने चाहिए। सभी उम्र के बच्चों के लिए दिन में कम से कम एक बार फुलक्रीम दूध देना अनिवार्य है, ताकि उनके दिमाग को आवश्यक शक्ति मिलती रहे।

यदि प्रारम्भ से ही मातायें इन बातों को ध्यान में रखेंगी, तो न केवल उनके बच्चों का उचित शारीरिक और मानसिक विकास होगा, बल्कि वे बहुत सी बीमारियों से भी बचे रहेंगे। ■

दीपक बन जाऊँ या फिर मैं दीपक की बाती बन जाऊँ
दीपक बाती क्या बनना है दिपती लौ घी की बन जाऊँ
दीपक बाती घृत-युत लौ से अन्तर्मन की ज्योति जलाकर
मन-मन्दिर में बैठा सोचूँ, पूजा की थाली बन जाऊँ
पूजा की थाली की शोभा अक्षत चन्दन सुमन सुगंधित
खुशबू चाह रही है मैं भी शीतल चन्दन सी बन जाऊँ
शीतल चन्दन की खुशबू में रंगों का इक इन्द्रधनुष है
इन्द्रधनुष की है अभिलाषा
तान मैं सरगम की बन जाऊँ
सरगम के इन 'शान्त' सुरों में
मिश्रित रागों का गुंजन है
तान कहे मैं भी कान्हा के
अधरों की वंशी बन जाऊँ

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

दर्द से जिसका राब्ता न हुआ
जीस्त का उसको तजरिबा न हुआ
हाले-दिल वो भी कर सके न बयाँ
और मेरा भी हौसला न हुआ
आरज़ू थी बहुत, मनाऊँ उसे
उफ! मगर वो कभी खफा न हुआ
तब तलक खुद से मिल नहीं पाया
जब तलक खुद से गुमशुदा न हुआ
सिर्फ इक पल की थी वो कैदे-नजर
जाने क्यों उम्र भर रिहा न हुआ
मुझसे छूटे नहीं खुलूस-ओ-वफा
आदमी मैं कभी बड़ा न हुआ
अपनी खुशबू खला में छोड़के 'जय'
दूर होकर भी वो जुदा न हुआ

-- जयनित कुमार मेहता

तुमसे मिलकर मुझे यों खुशी मिल गई
जिंदगी को नई जिंदगी मिल गई
मुझको ऐसा लगा इक खजाना मिला
वर्षों पहले की जब डायरी मिल गई
प्यास अधरों की जल से नहीं बुझ सकी
वो बुझी जब उन्हें बाँसुरी मिल गई
कितने लोगों से मिलते-मिलाते हुये
अपने सागर से जाकर नदी मिल गई
एक दिन गाँव बेटे-बहू आ गये
बूढ़ी आँखों को फिर रौशनी मिल गई
राह हम चौत की देखते रह गये
हमसे पहले उन्हें जनवरी मिल गई
वक्त की चाह थी पर न उसने दिया
भेंट में हाँ उसी से घड़ी मिल गई
बाप की मौत का गम, खुशी भी उसे
उसको उसकी जगह नौकरी मिल गई
देर तो हो गई थी पहुँचने में पर
देवता की मुझे आरती मिल गई
कैसे कह दूँ बिना कुछ दिये वो गया
वो गया तो मुझे शायरी मिल गई.

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

चेहरे नहीं बदले गये तो आइने बदले गये
जब लोग बेढंगे चले तो रास्ते बदले गये
धरती का वो भगवान है, जज भी है सबसे बड़ा
लेकिन चढ़ावे चढ़ गये तो फैसले बदले गये
भ्रष्ट बाबू की शिकायत आला अफसर से हुई
उसको प्रमोशन देकर उसके ओहदे बदले गये
खूनी बरी हो जायगा तो क्या गवाही क्या सबूत
जब पोस्टमार्टम की रिपोर्टें, असलहे बदले गये
पहले भी करते थे ठगी, मंत्री बने तो भी ठगें
ये सब पुराने माल हैं
लेबल भले बदले गये
ईमान का विच्छेद कर
वो बोलता ई-मान अब
शब्दों के जंगल रह गये
जब मायने बदले गये

-- डॉ डी एम मिश्र

तुम्हारी याद में प्रियतम, नींद भी टूट जाती है
न मुझको चैन आता है, न कोई बात भाती है
तुम्हारी याद के मोती रोज आँखों से झरते हैं
नींद को भीड़ ख्वाबों की, हमेशा तोड़ जाती है
तुम्हारे बिन फुहारें, गीत, कजरी राग सावन के
मुझे हर रोज यह काली घटा भी मुँह चिढ़ाती है
बंद कमरे में तन्हाई मुझे जीने नहीं देती
खुली छत पर चाँद की चाँदनी मुझको जलाती है
रात में दूर कोई जब विरह का राग गाता है
मुझे फिर रात सारी बस
तुम्हारी याद आती है
प्रियतमे आ भी जाओ अब
हमारा दिल नहीं लगता
'दिवाकर' की दर्द से तर
गजल तुमको बुलाती है

-- डा. दिवाकर दत्त त्रिपाठी

मत कहो हमसे जुदा हो जाएगा
वह मुहब्बत में फना हो जाएगा
इश्क के इस दौर में दिल आपका
एक दिन मेरा पता हो जाएगा
धड़कनो के दरमियाँ है जिंदगी
धड़कनो का सिलसिला हो जाएगा
इस तरह उसने निभाई है कसम
वह हमारा देवता हो जाएगा
ऐ दिले नादां न कर मजबूर तू
वो मेरी जिद पर खफा हो जाएगा
पत्थरो को फेंक कर तुम देख लो
आब का ये कद बड़ा हो जाएगा
मत निकलिए इस तरह से बेनकाब
फिर चमन में हादसा हो जाएगा
अब अना से बढ़ रहीं नजदीकियां
रहमतों से फासला हो जाएगा

-- नवीन मणि त्रिपाठी

मेरे दिल को तड़पाता बहुत है
फिर भी याद वो आता बहुत है
है दीगर बात मैं सुनता नहीं हूँ
मुझे वैसे वो समझाता बहुत है
उसे भी गम कोई गहरा है शायद
बेवजह वो मुस्कुराता बहुत है
करेगा इश्क का इजहार कैसे
इस दुनिया से घबराता बहुत है
वक्त ले आएगा उसको ठिकाने
जो खुद पे आज इतराता बहुत है
पत्थर हो गए इंसान सारे
शहर में तेरे सन्नाटा बहुत है

-- भरत मल्होत्रा

भुलाता जा रहा है सादगी को
ये क्या होने लगा है आदमी को
जिधर देखो अँधेरा ही अँधेरा
चलो हम ढूँढ लाएँ रोशनी को
उठाता हाथ है औरत पे जो भी
वो गाली दे रहा मर्दानगी को
सभी को सादगी अच्छी लगे है
नहीं चाहे कोई आवारगी को
फकीरी का अलग अपना मजा है
सलामी आप ही दो साहबी को
बुरे हालात 'माही' मुल्क के हैं
भटकती है जवानी नौकरी को

-- महेश कुमार कुलदीप 'माही'

ये रिश्ते काँच से नाजुक जरा सी चोट पर टूटे
बिना रिश्तों के क्या जीवन, रिश्तों को संभालो तुम
जिसे देखो वही मुँह पर, क्यों मीठी बात करता है
सच्चा क्या खरा क्या है जरा इसको खँगालो तुम
हर कोई मिला करता बिछड़ने को ही जीवन में
मिले जीवन सफर में जो, उन्हें अपना बना लो तुम
सियासत आज ऐसी है, नहीं सुनती है जनता की
अपनी बात कैसे भी
चाहे उनको बता लो तुम
अगर महफूज रहकर के
वतन महफूज रखना है
अपने नौनिहालों को
बगड़ने से बचा लो तुम

-- मदन मोहन सक्सेना

काम वो शैतान ऐसा कर गया
नाम फिर बदनाम सारा कर गया
राम का धर वेश रावण आ गया
काम वो हैवानियत का कर गया
क्या किया इंसानियत के नाम पर
जुर्म का व्यापार कैसा कर गया
कब तलक नारी सहेगी जुल्म ये
पाप काली को बुलावा कर गया
छल कपट करता रहा पापी सदा
रहनुमा बन कर छलावा कर गया

-- जयंती सिंह 'मोहिनी'

एक था मोनू

राजकुमार कांदु

बाजार से घर आते हुए एक जाना पहचाना स्वर सुनकर पीछे मुड़कर देखा। वह 'मोनू' था।

मोनू एक दस वर्षीय अनाथ बालक था। अपनी दुकान के बगल में चाय की दुकान पर उसे पहली बार देखा था। मोनू अपना काम बड़ी जिम्मेदारी और फुर्ती से करता था। चाय वाले को भी उससे कोई शिकायत नहीं थी। लेकिल अचानक एक दिन वह गायब हो गया। चायवाले से पूछने पर उसने बताया 'कुछ सिपाही आये थे और मोनू को काम करता देखकर बाल श्रम अधिनियम कानून के तहत गिरफ्तार और जुर्माना होने की बात कर रहे थे। बस उसी दिन मैंने उसको काम से हटा दिया था। फोकट में कौन यह सरदर्दी मोल ले।'

इस बात को लगभग दो महीने बीत चुके थे और आज अचानक उसकी आवाज सुनकर आश्चर्य हुआ था। देखा कि उस छोटे से मंदिर के सामने मैले कुचैले चिथडेनुमा कपड़े पहने हाथ में कटोरा लिए वह बैठा हुआ था। बगल में रखी बैसाखी देखकर मेरा मन कुछ सशंकित हुआ और फिर जैसे ही मेरी नजर उसके पैरों पर पड़ी कलेजा मुंह को आ गया। घुटने के नीचे से उसका बायां पैर ही गायब था। अपने इसी पैर का प्रदर्शन कर वह भीख मांग रहा था।

उसकी हालत देखकर उसकी रामकहानी जाने बिना मुझसे रहा न गया और उसे इशारा करते हुए थोड़ी दूर स्थित चाय की दुकान पर आ गया। सड़क पर लगी खाली बेंच पर बैठते हुए चाय वाले से चाय लाने को कहकर मैं मोनू का इंतजार करने लगा। थोड़ी ही देर में वह भी बैसाखी के सहारे वहां पहुंच गया और मेज के किनारे खड़ा हो गया। बेंच पर बैठने में उसकी झिझक को देखते हुए मैंने उसे हाथ पकड़कर अपने बगल में ही बिठा लिया और चाय का गिलास उसके सामने सरका दिया। चाय की चुस्कियों के बीच उसकी रामकहानी का सिलसिला शुरू हो गया जो उसी के शब्दों में लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।

'उस दिन पुलिस वाले द्वारा डांट पड़ने पर मेरा चाय वाला सेठ डर गया था। उनके जाने के बाद उसने मुझे पांच सौ रुपये जो मेरे पगार के उसके पास जमा थे देते हुए मुझे काम से निकाल दिया। मैं बहुत गिड़गिड़ाया था लेकिन सेठ ने मुझे फिर से काम पर नहीं रखा। आस-पास की सभी दुकानों पर पुछा लेकिन मुझे कहीं काम नहीं मिला। एक फलों के थोक विक्रेता ने रहम खाकर एक टोकरी में कुछ केले मुझे दिए और बेचकर लाने के लिए कहा। पहले ही दिन टोकरी का सारा केला मैंने बेच दिया और उस व्यापारी ने अपने केले का दाम लेकर लेकर मुझे दो सौ रुपये का मुनाफा दिया था। मैं बहुत खुश था। अब मुझे धंदे की समझ आ गयी थी।

कुछ ही दिन बाद उस थोक विक्रेता ने अपने पास से मुझे एक ठेला दे दिया। मेरे पास जो भी रकम थी वह सब देने के बाद भी अभी उसे दो हजार रुपये और देने थे लेकिन कुछ पैसे कमाकर मेरे अंदर नए उत्साह और चैतन्य का संचार हो चुका था।

इसके कुछ ही दिन बाद शहर के मुख्य सड़क पर अपने ठेले पर केले बेचने के लिए हांक लगा रहा था कि आसपास बैठे हुए सभी रेहड़ी, ठेले वाले अपना-अपना सामान लेकर गलियों की तरफ भागने लगे। अभी मैं कुछ समझ पाता कि तभी नगरपालिका की नीली गाड़ी से कुछ लोग आए और मेरा ठेला उठाकर उस गाड़ी में लाद दिया। मेरे लाख विनती करने और पैरों पर गिरने के बाद भी उन लोगों ने मेरी एक न सुनी और उस दिन मेरा सब कुछ बर्बाद हो गया। उसी दिन मैंने तीन हजार का केला उधार ही खरीदा था जो नगरपालिका वाले ठेले सहित उठा ले गए थे।

मैं क्या मुंह दिखाता उस व्यापारी को? वहीं सड़क पर बैठा रोता रहा। वहीं फुटपाथ पर बैठकर रोते-रोते शाम होने के बाद अंधेरा घिर आया और डर के मारे मैं वहीं बैठा रहा। लोगों की भीड़भाड़ कम हो गयी थी और रात गहराते ही मैं वहीं फुटपाथ पर ही सो गया।

किसी के पैर की ठोकर से मेरी नींद खुल गयी। देखा वह एक मदहोश शराबी था। बड़बड़ाते हुए वह तो झूमते झामते अपनी राह चले गया लेकिन अब मेरी नींद खुल चुकी थी। खाने को कुछ मिल जाये इसी आस में भटकते हुए इसी मंदिर के पास आ गया। मंदिर का पुजारी बचा खुचा प्रसाद गायों को खिलाने जा रहा था कि उससे विनती करके मैंने थोड़ा प्रसाद ले लिया और अपनी भूख शांत की। कुछ देर वहीं मंदिर के सामने ही बैठ गया और ऊँघने लगा।

वहीं फुटपाथ पर बैठा हुआ एक आदमी न जाने कब से मेरी गतिविधियों को देख रहा था। उठकर मेरे पास आया और प्यार से मेरे कंधे पर हाथ रखकर पुछा 'भूखे हो?' मैंने हाँ में गर्दन हिलाई। उसने फिर पुछा 'अनाथ हो? मैंने फिर से हामी भर दी। उसने कहा 'अगर अच्छी जिंदगी चाहते हो तो आओ मेरे साथ।'

क्या करता? अच्छी जिंदगी की चाह किसे नहीं होती? उसके पीछे पीछे चल दिया। लगभग आधा घंटा चलने के बाद मैं उस आदमी के साथ शहर की सीमा पर ही बने एक बड़े से कच्चे घर में था। वहां मेरी ही तरह कई बच्चे थे जो एक कमरे में बिछी चटाई पर लुढ़के हुए थे। मुझे भी नींद आ रही थी और सोना चाहता था लेकिन उस आदमी ने एक थाली में चावल और दाल लाकर मुझे खाने के लिए कहा। उस आदमी का दिया भोजन करके मैं उसके प्रति कृतज्ञ हो उठा था। उसे धन्यवाद कहकर मैं चटाई पर लुढ़के हुए उन बच्चों के बीच ही लुढ़क गया।

सुबह देर से नींद खुली। वह आदमी सामने ही दूसरे कमरे में बैठा मिला। उसने इशारे से मुझे पास बुलाया और प्रेम से सामने पड़ी कुर्सी पर बिठाकर पुछा 'अब क्या करने का इरादा है?' मैं क्या जवाब देता? अपनी पुरी रामकहानी उसे सुना दी।

सुनकर वह बोला 'बेटे! तुम अभी बहुत छोटे हो और यह दुनिया बड़ी जालिम! लोग यूँ ही किसी को कुछ नहीं दे देते। तुम अनुभव कर ही चुके हो तुम चाहकर भी ईमानदारी का काम नहीं कर सकते क्योंकि सारे नियम कानून सिर्फ हम गरीबों के लिए ही बने हैं। रईसों के तो ठोकरों में रहते हैं ये नियम-कानून। यकीन नहीं है तो खुद को देख लो चूंकि तुम गरीब हो तुम्हें काम भी नहीं करने दिया गया जबकि फिल्मों में तो पैदा होने के तुरंत बाद वाला बच्चा भी काम कर लेता है। समझे?'

उसकी बात सुनकर मैं उससे प्रभावित हो गया था। अतः बोला 'तो तुम ही बताओ मुझे क्या करना चाहिए?' तपाक से वह बोला 'वही! जो मेरे पास सारे बच्चे करते हैं। भीख मांगना।' सुनते ही मैं चीत्कार कर उठा 'नहीं!'

'कोई जबरदस्ती नहीं है। लेकिन एक बात समझ लो यहां से निकलने के बाद तुम भीख भी नहीं मांग सकोगे क्योंकि भीख मांगने के सारे अड्डे पहले ही बुक हो चुके हैं।' उसने एक राज की बात बताई थी। 'यहां रहते हुए अगर तुम पूरे शहर में कहीं भी भीख मांगोगे तो किसी भी लफड़े से या पुलिस से मैं यानी यह विजू दादा तुम्हें साफ बचा लेगा और मुझे बदले में क्या चाहिए? मुझे बदले में चाहिए तुम जो भी कमा कर लाओगे उसमें से एक हिस्सा। दो हिस्से फिर भी तुम्हारे पास ही रहेंगे।'

मैं सिसक उठा था। भीख मांगने की सोच कर ही मुझे घिन आने लगी थी। उससे माफी मांगकर मैं उस घर से निकला और शहर की तरफ दौड़ पड़ा। सोचा था जाकर फिर से कोई धंधा कर लूंगा लेकिन तभी उस व्यापारी का चेहरा नजरों के सामने घूम गया, जिसके पैसे मेरे ऊपर बाकी थे। डरते डरते मैं वहीं जा पहुंचा जहां ठेला खड़ा करता था। एक दूसरा लड़का जो कि उसी व्यापारी से केला लेकर बेचता था मिल गया। मुझे देखते ही बोला वह व्यपारी मेरे ऊपर बहुत नाराज था और मुझे ढूंढ रहा था। डर के मारे मेरी घिग्घी बंध गयी थी। और अगले कुछ ही समय बाद मैं उसी पुराने से घर में उसी आदमी के सामने सिर झुकाए खड़ा था। मेरे सामने और कोई चारा भी नहीं था।

थोड़ी देर बाद वह आदमी जो खुद को विजू दादा बता रहा था अपने हाथों से मेरा मेकअप करने लगा। घर में ही पड़ा हुआ पुराना चिथड़ानुमा कमीज पहना कर हाथों व पैरों पर मिट्टी सना हुआ हाथ घुमाकर मुझे बिल्कुल मैला कुचैला भिखारी उसने बना दिया था। आईने में देखकर मैं खुद को ही नहीं पहचान पाया। कुछ जरूरी जानकारी देकर उसने मुझे यहां इस मंदिर पर भेज दिया। अब मैं उस व्यापारी की तरफ से निश्चिंत

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

वैश्विक परिदृश्य में हिंदी : एक अवलोकन

सय्यद ताहेर

इक्कीसवीं सदी 'विश्व समाज' की संकल्पना को साकार करने की सदी है. आज सारा जगत एक ही सूत्र में बँध रहा है. यह सूत्र जिस विचारधारा के लिए प्रवाहमान है, वह है 'आधुनिकीकरण' की विचारधारा, जो वैश्विक समाज का ताना-बाना बुनती है. वैश्विक समाज की संकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए जो अवयव महती भूमिका का निर्वहन करते हैं, उनमें से एक है- 'भाषा'. निस्सन्देह हिन्दी आज सारे विश्व में 'अंतर्राष्ट्रीय भाषा' के उच्च आसन पर विराजमान है. किंतु साथ ही अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, अरबी, मंडारिन भाषाएं भी विश्व भाषाएँ बन चुकी हैं.

आंकड़ों के अनुसार विश्व के लगभग एक सौ पचास विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है. मारीशस विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जहां की संसद ने हिंदी के वैश्विक प्रचार के लिए और उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की है. बारह लाख की आबादी वाले इस देश में पांच लाख हिंदी भाषी हैं. १५८६ से अध्यापक गण इस देश में हिंदी भाषा एवं इसके त्रिकाल गौरवशाली साहित्य में लगे हैं. मारिशस में हिंदी साहित्य की बहुतामय सर्जना की जा रही है. राजा हीरामन तथा राजरानी गोबिन जैसे कवि यूभ इस देश में बैठकर हिंदी कविता के माध्यम से पटल पर हिंदी साहित्य के महत्त्व को रेखांकित कर रहे हैं.

भारतीय हिंदी की सुंदरतम बोलियाँ यथा अवधी, मगधी, भोजपुरी और मैथिली भाषा के सम्मिश्रण से 'सूरीनाम' की हिन्दी बनी है, जिसे सरनामी हिंदी कहा गया है. सन १६७७ से 'हिंदी परिषद्' नामक स्वैच्छिक संस्था हिंदी भाषा तथा साहित्य के उत्थान पथ की विशेष मार्गदर्शिका सिध्द हुई है.

त्रिनिदाद एंव टोबैगो द्वीप समूह की जनसंख्या लगभग दस लाख है. उसमें अप्रवासी भारतीय चालीस प्रतिशत से अधिक हैं. यहाँ १६८७ से सरकारी संस्था 'निहस्तर' में हिंदी के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ. यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज में हिंदी पीठ की स्थापना हुई है. १६६६ में पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मलेन यहीं आयोजित किया गया था. काफी बड़ी संस्था में यहाँ पर शोध-कार्य हो रहा है तथा रचनात्मक साहित्य भी लिखा जा रहा है.

इंग्लैंड में भी हिंदी का स्थान अमेरिका की तरह ही यशस्वी है. यहाँ पर कार्यरत हिंदी साहित्य सेवी संस्थानों की सूची लम्बी है, जिनमें से भारतीय भाषा संगम, गीतांजलि, बहुभाषिक साहित्य समुदाय, यू.के. हिंदी समिति, हिंदी भाषा समिति, चौपाल, कृति यू.के. कृति इंटरनेशनल, कथ यू.के. आदि उल्लेखनीय हैं. इस देश में रहकर हिंदी साहित्य की सर्जना करने वाले रचनाकारों की सूची विशाल है. जिसमें दिव्या माथुर, राजेन्द्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, नीना पॉल, उषा वर्मा, महेंद दवेसर, कादंबरी मेहरा, नीरा त्यागी प्रमुख हैं. उल्लेख्य है कि भारतेंदु युग में इंग्लैंडवासी व हिंदी विद्वान श्री फ्रेडरिक पिंकाट ने साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में अनमोल योगदान दिया था. उन्होंने जब भारत पर अंग्रेजों का शासन था एवं अंग्रेजी के वर्चस्व को बढ़ाने की कुनीति ब्रिटिश सरकार अपना रही थी, तब इंगलैंड में रहते हुए विपुल मात्रा में हिंदी साहित्य का सृजन किया. जिससे वैश्विक पटल पर हिंदी साहित्य का महत्त्व स्पष्टतः परिलक्षित हो जाता है.

रशिया में प्रारंभ से ही लोग हिंदी में रुचि लेते रहे हैं. यहाँ प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी का पठन-पाठन होता है. मार्को विश्वविद्यालय, रूसी मानविकी विश्वविद्यालय, संट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संस्थान सहित लगभग दो दर्जन संस्थानों में डेढ़ हजार से अधिक विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं.

फ्रांस के सौरबेन विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा एवं साहित्य संबन्धी पाठ्यक्रम है. चीन के भी पेइचिंग विश्वविद्यालय तथा नानचिंग विश्वविद्यालय में हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है. भारतीय विद्या विभाग के संस्थापक प्रो. चिशमेन ने वाल्मीकि रामायण, गोदान, राग दरबारी का मंडारिन भाषा में अनुवाद किया है.

विश्व के सबसे प्राचीन लोकतंत्र अमेरिका में दो करोड़ से अधिक भारतीय मूल के लोग रहते हैं. वहां हार्वर्ड, पेन, मिशिगन, भेल आदि विश्वविद्यालयों मे हिंदी का शिक्षण हो रहा है. अमेरिका के लगभग ७५ विश्वविद्यालयों मे हिंदी पढ़ाई जा रही है. हिंदी का अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या १५०० से अधिक है. हिंदी के लिए कार्यरत संस्थाओं में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, विश्व हिंदी समिति, हिंदी न्यास आदि प्रमुख हैं. अमेरिका से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं विश्वा, सौरभ हिंदी जगत, डितिज विश्व विवेक, नाल भारती, हिंदी चेतना आदि प्रमुख हैं. ये पत्रिकाएँ निरंतर हिंदी साहित्य के विकास के लिए श्रमारत हैं. असंख्य हिंदी कवि, लेखकगण इस देश में रहकर हिंदी साहित्य सेवा कर रहे हैं.

निष्कर्षतः यह माना जा सकता है कि हिंदी की महती भूमिका आज न केवल राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने के लिए अनुभूत हो रही है, बल्कि उस भाषा के साहित्य में सकल विश्व को प्रेम व ज्ञान सौरभ से सज्जित व परिमार्जित करने के भी अनुपम क्षमता है. जिससे स्पष्टतः विश्व स्तर पर हिंदी साहित्य का अनुपम महत्त्व परिलक्षित व प्रतिफलित होता है. ■

खोदा पहाड़ निकली चुहिया

बिपिन किशोर सिन्हा

पन्द्रह दिन से ज्यादा हो गए, टी.वी. न्यूज चैनल पर बाबा राम रहीम के किस्से ही छाए हुए हैं। मीडिया ने कभी बाबा के किसी सुरक्षा गार्ड का साक्षात्कार लिया, तो कभी किसी पुराने असंतुष्ट कर्मचारी का। जिसको भी टी.वी. पर अपना चेहरा दिखाने की इच्छा हुई, उसने किसी न्यूज चैनल को फोन करके स्वयं को हनीप्रीत या बाबा का पूर्व सहयोगी बताया। फिर क्या था, सारे न्यूज चैनलों में उसका चेहरा और साक्षात्कार दिखाने की होड़ मच गई। चैनलों ने यह कहते हुए डेरा के फोटो जारी किए कि वह चैनल ही पहली बार ऐसी दुर्लभ तस्वीरें जारी कर रहा है। चैनलों ने खुद ही मामला बनाया, मुकदमा चलाया और फैसला भी दे दिया कि बाबा को बीस साल नहीं, जिन्दगी भर जेल में रहना पड़ेगा।

बाबा के सिरसा के डेरे को इतना रहस्यात्मक बना दिया जैसे वह पाकिस्तान के क्वेटा का परमाणु घर हो जिसमें सैकड़ों परमाणु बम छिपाकर रखे गए हों। बाबा के डेरे के टोकन को समानान्तर करेन्सी कहकर प्रचारित किया गया। हमेशा चैनलों पर छाए रहने वाले प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदी भी बाबा राम रहीम के बाद दूसरे स्थान पर फिसल गए। अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए इन टी.वी. चैनलों ने पता नहीं कितने सच्चे-झूठे, नैतिक-अनैतिक समाचार गढ़े और चटकारे लेकर सुनाए और दिखाए। आदमियों के साथ शेर के बच्चों और काले घोड़ों की भी हत्या की दास्तान सुनाई गई।

भयभीत हरियाणा सरकार १४ दिन बाद ५००० पुलिस और पारा मिलिटरी जवानों, खुदाई करने वाली भारी मशीनों, आधे दर्जन मजिस्ट्रेट, न्यायिक अधिकारी, सैकड़ों कर्मचारी, रिटायर्ड जज, स्निफर डाग, ताला तोड़ने वाले लोहारों और तरह-तरह के विशेषज्ञों के साथ डेरे पर छापा मारने गई। छापा मारने के लिए १४ दिन का समय क्यों लिया गया, यह भी डेरे के रहस्य से कम रहस्यमय नहीं है। क्या कोई भी अपराधी १४ दिनों तक अपने अपराधों का प्रमाण अपने ही घर में रख सकता है? खैर, छापामारी में अभी तक जूतों, कपड़ों, टोकन और पटाखों के सिवा कुछ नहीं मिला है।

हरियाणा पुलिस जो तलाशी अभियान की मुखिया है, बाबा के सभी सहयोगियों को भगाने में सफल रही। यह समझ के बाहर है कि जो हनीप्रीत बाबा के साथ अदालत में मौजूद थी, हेलिकाप्टर में भी बाबा के साथ बैठकर रोहतक जेल तक गई वह पुलिस के सामने से फरार कैसे हो गई। आज उसे ढूंढ़ने के लिए पुलिस की टीम मुंबई से लेकर नेपाल तक की खाक छान रही है। क्या यह जनता की आंखों में धूल झोंकना नहीं है? इसमें

(शेष पृष्ठ २१ पर)

सहेजकर रखना/मेरी इन किताबों को
मैं रहूं न रहूं/इस दुनिया में
मेरी यादें सदा रहेगी जिन्दा इनमें
जब कभी तुम खोलोगे इन्हें
मेरी खुशबू अहसास बनकर
बिखर जाएगी तुममें
मैं मरकर भी/जिन्दा रहूंगी पन्नों पे
अपने शब्दों की गहराईयों में/तुम महसूस करना
मैं मिलूंगी तुम्हें/इन्हीं किताबो में...

-- बबली सिन्हा

परिंदा आकाश में चाहे जितना ऊंचा उड़ ले
दाना चुगने उसे जमीन पर आना ही पड़ता है
आसमान में उड़कर तो तारे हाथ नहीं आते
मोती पाने के लिए गहरे
समुद्र में जाना ही पड़ता है
चाँद चौदहवीं का अपने
रूप पर जितना भी इतरा ले
अमावस में उसे अपना
मुँह छिपाना ही पड़ता है
अहंकार में आदमी चाहे जितना भी ऊंचा उड़ ले
हकीकत के लिए उसे जमीं पर आना ही पड़ता है
तरुवर गगन छूने की लाख कोशिश कर ले
उसकी जड़ को रसातल में जाना ही पड़ता है
कोई चाहे कितने भी ऊंचे महलों में रह ले
शीश झुकाने प्रभु के दर पर आना ही पड़ता है

-- जय प्रकाश भाटिया

तुम्हारे और मेरे बीच/कोई रिश्ता तो नहीं
फिर भी न जाने क्यों/तुम्हारे लिए अहसास होता है
मिलने पर अलग पहचान होती है
न ही तुम मेरा प्यार हो
न ही तुमसे कोई रिश्ता का बंधन
फिर भी तुम अपना सा लगते हो
हर समय मेरा ख्याल रखते हो
यही मुझे अच्छा लगता है
बिना किसी बंधन/बिना किसी शोर जब दो मिलते हैं
तो खुदा भी सलामत रखने का वादा करता है!

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

रोज मरती है ख्वाहिशें/अल्हड़ नादान बचपन की
एक अजीब सा डर/पीछा करती कुछ निगाहें
अनहोनी का भय/सहम जाती हूँ/आती नहीं तुम जब तक
आशंकित रहती है/ममता की छांव भी
हर बार बाहर निकलने से पहले/हजार नसीहतें
थक सी गईं हूँ/कुछ अपनों से भी
हर गली के किनारे खड़े
कुछ मनचली निगाहें से भी
सीखा दे गर आत्मा को कोई
आत्मबल का कोई नया अहसास
फिर कोई अल्हड़ नवयौवना
जी सके बिना रोक टोक/कुछ पल सुकुन के

-- अल्पना हर्ष

मैं हूँ एक नारी/मुझे गर्व हैं नारी होने पर
हर जन्म में/यही अस्तित्व पाना चाहूंगी...
स्त्री, लड़की, औरत/पहचान हैं ये सब शब्द मेरे
माँ, बेटी, बहन, पत्नी, बहू/और भी अनेक रूप हैं मेरे
सभी अस्तित्व में जीना चाहूंगी...
गर्व हैं मुझे/हर रिश्तें में, खुद को संजोने पर,
दर्द, पीड़ा सब सहकर/फिर भी हंसकर प्यार लुटाने पर
हर जन्म में/यही अस्तित्व जीना चाहूँगी...
समाज सोचे चाहे कुछ भी,
मेरा मान, स्वाभिमान डिगेगा नहीं
मैं हूँ तो ये संसार हैं,
मेरा ये विश्वास कभी मरेगा नहीं
इसलियें हर जन्म में
यही अस्तित्व पाना चाहूँगी...

-- नंदिता तनूजा

अचानक असमय उलझकर/फट जाते हैं संबंध
कारण उनका गलना नहीं था/मारी थी अहंकार ने ठोकर
इसलिए- प्रेम के धागे को/वाणी की सूई में पिरोकर
रफू करते चलो/अन्यथा तार-तार होकर बिखर जायेंगे
सिलने की जगह तक शेष न रहेगी
हाँ! रफू किए गए संबंधों में
रह जाती है कुछ कमी
पर मूल्यवान के सुधरने से
मिलती है आत्मिक शांति
मजबूती से किया जाए रफू तो
हो सकता है सालों उपयोग/धागा महीन और हूबहू हो तो
फिर कहना ही क्या/रफू का शक तक न होगा किसी को
इसमें श्रम कुछ अधिक होगा/पर रफू बेमिसाल होगा
हो जायेगा सब नया/अदृश्य रफू के प्रयोग से
पर चलना होगा संभल कर/क्योंकि रफू पर रफू करना
मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है!

-- डॉ निशा नंदिनी गुप्ता

फिर से आज दशहरा आया, मेरा पुतला बना दिया
रामवेश लेकर मानव ने, मरे हुए को जला दिया
साधुवेश में मेरे द्वारा, सीता एक बार थी ठगी गई
पाखण्डी-चंगुल में फंसती, नारी फिर भी जगी नहीं
मैंने तो बस हरण किया था, उसे तनिक भी छुआ नहीं
मुझसे बड़े अधर्मी बैठे, अवतार अभी तक हुआ नहीं
आँखें खोल घोर से देखो, कितने रावण जिंदा हैं?
जिनको रावण कहते हुए
खुद रावण भी शर्मिंदा है
हर वर्ष ही पुतले जलते,
क्यों मेरी ही निंदा है?
कलयुग का मानव भी अब तो
सबसे बड़ा दरिंदा है!

-- नीतू शर्मा

मुक्तक

वक्त जैसा भी हो वैसा ही काट लेता हूँ
गैर का दर्द भी अक्सर में बाँट लेता हूँ
जिन्दगी तुझसे ये फुर्सत कभी मिले न मिले
सुकूँ के लम्हों को गम में भी छाँट लेता हूँ

-- अंकित शर्मा

मत कर मेरा इंतजार/मैं तो तेरा ही साया हूँ
सदा साथ हूँ तेरे/महसूस करके देख एक बार
जहां जहां तू होती है/मैं भी वहीं आया हूँ
क्योंकि मैं तो तेरा ही साया हूँ
माना कि वक्त ने दिए हैं/हजारों गम हमें
पर मैं तो तेरे लिए/खुशियां ही लाया हूँ
आंखों में आंसू हैं तो क्या हुआ
उसमे नमी बनकर मैं ही तो आया हूँ
हो बेफिक्र न तलाश कर/तूने
जब याद किया मैं तेरे पास आया हूँ
क्योंकि मैं तुझसे अलग नहीं
मैं तो तेरा ही साया हूँ

-- महेश कुमार माटा

शिक्षित समाज, ये सभ्य समाज/सब्जी-भाजी की तरह
लगती है जहाँ आज भी/जिस्मों की मंडी
नजरें करें तोल-मोल/कभी छूकर
तो कभी कुटिल निगाहों से/करें अर्धनग्न
लगाएँ मोल भाव/सफेदपोशी की चादर ओढ़े
आदमखोर बेचें जमीर
और वे मजबूर लाचार
तो बस तन ही बेचें
कुछ मजबूरी में तो कुछ हो लाचार
रोज ओढ़ कफन हो तैयार
सब्जी भाजी की तरह बिकने के लिए

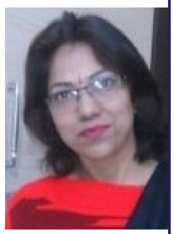

-- अंजु गुप्ता

गुड़ियाँ ही नहीं होती बेटियाँ/कि सजाई सँवारी जायें
होती हैं मनु और पद्मा भी/खेल जान पर अपनी
देश का गौरव बढ़ायें
बेटियाँ होती हैं ममता
सींच नये पौधे को
उपवन नया बनायें
चिड़ियाँ ही नहीं होती बेटियाँ
कि एक उम्र बाद उड़ जायें बिदेस
होती हैं घर का आँगन और अटारी भी
जो रौनकें लगायें और कुल का मान भी बढ़ायें
बेटियाँ होती है घर की धुरी
अलग अलग रूपों में/घर मजबूत बनायें

-- शिप्रा खरे

जीवन के संघर्षों से लड़कर भी
जिनके बाल नहीं बिखरा करते
जिंदगी में वो व्यक्ति ही निखरा करते
जिनके इरादे कभी नष्ट नहीं होते
उनके प्रयास बेकार नहीं होते
लक्ष्य हेतु जिनके रक्त की हर बूंद
बनकर स्वेद बह जाती है
उनके समक्ष विपदाओं की/दीवारें भी ढह जाती हैं
सुख दुख में जिनकी आँखों में आँसू नहीं
आशा के अंकुर पनपते हैं
असल जिंदगी में वो व्यक्ति ही निखरते हैं

-- नवीन कुमार जैन

समाधान

सुबह रमा देर से उठी, आधी रात के बाद तो आँख लगी थी! रात अपनी बारहवीं में पढ़ने वाली बेटी को फोन पर किसी लड़के से बात करते सुना था, तभी से मन चिंताओं से घिर गया था! उठते ही फिर समाधान खोजने बैठ गयी। डांटने से तो बेटी विद्रोही हो गलत कदम उठा सकती है। यादों में कालोनी में रहने वाली समता की बेटी का चेहरा ताजा हो आया, जो माँ के डांटने पर साड़ी का फंदा बनाकर फांसी पर झूल गयी थी! माता-पिता रो-रोकर हलकान हो रहे थे और कालोनी वाले किस्से गढ़ रहे थे! कोर्ट कचहरी के चक्कर में माँ ने बिस्तर पकड़ लिया और पिता मानसिक संतुलन खो बैठा!

आज रमा को पति की कमी बहुत खल रही थी, वो आज होते तो कुछ डर होता उनका। डर नहीं भी होता तो हम पति-पत्नी कोई हल निकालते! अब घर संभालूँ या नौकरी बचाये रखूं? कम थी क्या परेशानी जो अब यह भी? पर इस नाजुक विषय में किसी से सलाह माँगना यानी उन्हें चटपटे मसालेदार चर्चा का विषय देना, नहीं मुझे ही कुछ करना होगा!

मिली स्कूल से आयी तो उसे नाश्ता देकर प्यार से पास बिठाया, कुछ देर इधर-उधर की बातों के बाद सहसा पूछ बैठी, 'मिली, तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड है क्या?' मिली एकदम से अचकचा कर बोली, 'न न माँ, ऐसा क्यों पूछ रही हो?' जनवरी के महीने में भी उसके माथे पर पसीने की बूंदे छलक आयी!

'अरे, कुछ दिन पहले तुमने ही बताया था कि कॉलेज में जिसका बॉयफ्रेंड नहीं होता सब लड़कियां उसका मजाक बनाती हैं, सो मैंने सोचा बना लिया होगा!' कहकर रमा मुस्कुरा दी! मिली कुछ गंभीर सोच में डूब गयी तो रमा पुनः बोली, 'बेटी यह दुनिया बहुत जालिम और मक्कार है! तुम्हारी उम्र भी कम है, बला की सुंदरता और पिता का ना होना, कोई भी तुम्हारे भोलेपन का फायदा उठा सकता है! देखो बेटा शादी मैं तुम्हारी ही पसंद से करूँगी, लेकिन तब जब तुम आत्मनिर्भर हो जाओगी। जिस खुदा ना खास्ता कोई तुम्हें धोखा दे, तुम्हारी मासूमियत का फायदा उठा तुमसे किनारा कर ले तो तुम आर्थिक रूप से सबल रहो!'

मिली माँ की बात सुनती दोनों हाथों की उँगलियाँ चटकाने लगी, तो उसने टोका, 'अरे मिली बुरी बात! अब जरा मेरे लिए अदरक वाली कड़क चाय तो बना दे, सर दर्द से फटा जा रहा है!' रमा को पता है कि मिली तनाव में होने पर ही यह अजीब हरकत करती है! रात मिली के कमरे में दूध देने जाते वक्त देखा कि वो फिर फोन पर लगी किसी को समझा रही थी, 'देखो अगले महीने बोर्ड के इम्तेहान हैं, उसके बाद कम्पीटिशन! मुझे सीए बनने से पहले जरा भी फुर्सत नहीं है! हम फोन पर बात करेंगे, पर मिलेंगे तो कुछ बनने के बाद!' '...'

'नहीं माने! नहीं! अगर उससे पहले मिलना चाहते हो, तो तुम भी कुछ बनके माँ से रिश्ता मांगने आओ!' कहकर फोन रख दिया मिली ने।

-- पूर्णिमा शर्मा

मंत्री जी का बयान

सुबह के सात बज चुके थे, पर मंत्रीजी अभी भी खर्राटे मार रहे थे। ऐसा लग रहा था कि रात वाली विदेशी ब्रांडेड सुरा-सुंदरी ने उन्हें अब तक अपने चंगुल से मुक्त नहीं किया था। तभी मंत्री जी का सहायक बड़बड़ाता हुआ आ धमका। 'सरर... सर्र... सरजी! आप अभी तक सो रहे हैं, टीवी खोलकर देखिये!'

मंत्री जी- 'क्या हुआ?'

सहायक- 'आपने कल जिस बाबा मौजमस्ती राम को 'धर्म रत्न पुरस्कार' प्रदान किया था, वो सीबीआई द्वारा खून और बलात्कार में गिरफ्तार कर लिया गया है। टीवी पर आपकी और बाबाजी की कहानी साथ-साथ चल रही है। अब क्या होगा... सरजी?'

मंत्री जी- 'अरे कुछ नहीं होगा... खामखां डरते हो और डराते हो। पत्रकार पूछेंगे, तो कह देंगे हमें तो पहले से ही शक था, इसलिए हम खुद पुरस्कार देने के बहाने बाबा की असलियत जानने गये थे। हमारे निर्देशानुसार ही बाबा गिरफ्तार हुआ है, हम उसे कडी से कडी सजा दिलवाकर मानेंगे! वो भी सजा ऐसी- जिसे कहते हैं फांसी।'

इतना सुनते ही बेचारा सहायक अपना सिर पकड़ कर वहीं फर्श पर बैठ गया। मंत्री जी लम्बी सांस खीचते हुए बोले- 'वैसे बाबा था अच्छा, उसने हमारी सेवा में देशी-विदेशी, लगभग हर धर्म की सुन्दरियाँ उपलब्ध कराईं थी।'

सहायक- 'सरजी! क्यों न जेलरबाबू से कहकर जेल में बाबा को घर जैसी सुविधायें प्रदान की जायें, आखिर बाबा का बहुत अहसान है आप पर...'

मंत्रीजी- 'चलो देखते हैं, फिलहाल मीडिया को बुलाओ बयान जो देना है।'

-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

बढ़िया स्टोरी

गाँव के एक रिपोर्टर ने न्यूसपेपर के एडिटर इन चीफ को फोन किया, 'सर, एक बढ़िया स्टोरी है जल संकट से जूझते गाँव की कुछ स्कूली लड़कियों ने पानी की हर बूंद के अधिकतम प्रयोग का एक बिल्कुल अनूठा तरीका निकाला है। अगर इसे स्टोरी बनाएँगे तो पानी की कमी से जूझते कई इलाकों को फायदा होगा और वे जल संरक्षण को प्रेरित होंगे।'

उधर महोदय ने फोन उठाकर रख दिया था। वे किसी और से बात कर रहे थे, 'वालिया! इंस्टाग्राम और फेसबुक पर आजकल उस टीनेजर लड़की की हॉट तस्वीरें और वीडियो काफी वायरल हैं। अगले वीक की स्टोरी उस पर बनाना हैं। अभी से जुट जाओ।'

'कौन सी लड़की, सर?' वालिया ने पूछा । 'वहीं जो इस कंट्री के एक सुपर स्टार की नातिन हैं जो कहीं विदेश में पढ़ रही हैं।'

'समझ गया सर।'

गाँव का रिपोर्टर हेलो...हेलो करता जा रहा था। लैंड लाइन फोन का रिसीवर पेपर वेट की तरह पड़ा था।

-- गौतम कुमार सागर

सुख

रमन ने चकित होते हुए पूछा, 'उसके पास बहुत सारा पैसा था. फिर समझ में नहीं आता है उसने यह कदम क्यों उठाया?'

'पैसा किसी सुख की गारण्टी नहीं होता है!' मोहित ने दार्शनिक अंदाज में जवाब दिया.

'क्यों भाई? क्या तुम नहीं चाहते हो कि तुम्हारे पास गाड़ी हो, बंगला हो, कार हो और नौकर-चाकर हो?' रमन ने अपनी इच्छा व्यक्त की.

'चाहने से क्या होता है?' मोहित ने जवाब दिया, 'यह सुख हमारी किस्मत में नहीं है. हम तो दो रोटी रोज कमाते और खाते हैं. किराए की गाड़ी और किराए का अच्छा मकान ही हमारी सब से बड़ी खुशी है.'

'यही तो मैं कह रहा हूं. उसे अपने भरेपूरे घर में क्या कमी लगी थी जो उसने ऐसा किया है,' रमन बोला, 'हम जिस चीज के लिए तरस रहे हैं, वह सब उसके पास थी.'

'सही कहते हो भाई! वह जब जो चाहती थी, कर सकती थी. एक हुक्म देती और सभी नौकर उसके सामने हाजिर हो जाते थे. ऐसा सुख उसे कहां मिलेगा?' मोहित ने पूछा.

'अरे! जिस सुख की चाहत में वह अपने बच्चों और पति को छोड़कर ड्राइवर के साथ भागी वह तो उसे

मिलेगा ना?' रमन मुस्कराकर बोला, तो मोहित ने जवाब में अपने दोनों कंधे उचका दिए.

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

(दूसरी किस्त)

शान्ति

मनमोहन भाटिया

'बिलकुल छूमंतर होना चाहिए बुखार को। लेकिन आप अब जागकर बातों में अपनी शक्ति व्यर्थ न करें। आराम करके पूरे स्वस्थ हो जाइए। यदि नींद नहीं आ रही है, तब भी लेटकर पूरा आराम कीजिए।' कहकर वृन्दा ने नाईट लैंप को बुझा दिया। नीला प्रकाश कालिमा में बदल गया। थोड़ी देर तक विमल अंधेरे में घड़ी की टिक-टिक सुनता रहा, फिर नींद के आगोश में कैद हो गया। रात को काफी देर तक जागने और बुखार की कमजोरी के कारण विमल सुबह देर तक सोता रहा। वृन्दा ने आठ बजे विमल के माथे पर हाथ रखा। विमल शान्त एक छोटे बालक की भांति सो रहा था। माथे पर हाथ से स्पर्श से उसने आंखें खोलीं। एक हल्की सी मुस्कुराहट के साथ विमल ने वृन्दा को देखा।

'कैसी तबीयत है अब?' वृन्दा ने रजाई को ठीक करते हुए पूछा।

'आज बहुत अच्छा लग रहा है।' विमल ने धीरे से मुस्कुराकर कहा।

'दो दिनों से उठे नहीं हो। ब्रश कर लो, तब तक चाय बनाती हूं। थोड़ा बिस्तर से बाहर निकलो। देखो आज तो सूर्य देव भी प्रसन्न मुद्रा में सुबह-सुबह प्रकट हुए हैं।' कहकर वृन्दा ने खिड़की का परदा हटाया।

बिस्तर में लेटे हुए ही विमल ने नजरें खिड़की से बाहर दौड़ाते हुए सामने की इमारत पर टिकाई। सूरज की लालिमा से इमारत उज्ज्वल होकर नहाई हुई प्रतीत हो रही थी। उठकर बाथरूम जाकर फ्रेश हुआ, तब तक वृन्दा चाय बनाकर ले आई। चाय की चुस्कियों के बीच समाचारपत्र पढ़ने लगा। विमल को चाय देकर वृन्दा नहाने चली गई। एक घन्टे बाद सूर्य देव ने अपने प्रकाश से सभी जीव जन्तुओं के बदन में चुस्ती-फुर्ती भर दी।

सभी लोग मकानों की बालकोनी में या फिर घर के आंगन में सूर्य देव के ताप से सर्दी का सामना करने के लिए कमर कसकर ऐसी तैयारी में जुटे हुए थे, मानो किसी युद्ध में जाना हो। सर्दी को दूर भगाना किसी युद्ध से कम नहीं है। दो दिनों बाद आज विमल को भी बुखार से आजादी मिली थी। दस बजे डाक्टर से दवा लेने के बाद विमल घर वापिस आकर बरामदे में बैठकर धूप सेंकने लगा। वृन्दा डाक्टर के क्लीनिक से मार्किट में रसोई का सामान खरीदने के लिए रुक गई।

विमल समाचारपत्र पढ़ रहा था, तभी कालबैल सुनकर विमल ने दरवाजे की ओर देखा। गेट पर एक महिला खड़ी थी। सांवला सा रंग, औसत कद, साधारण सी साड़ी और शॉल पहने उस महिला ने विमल से पूछा, 'भाई साहिब, क्या मैं अंदर आ सकती हूं?'

इस प्रश्न पर विमल ने महिला को पहचानने का प्रयत्न किया, लेकिन असफल रहा। 'मैंने आपको पहचाना नहीं?' विमल ने कुर्सी पर बैठे-बैठे कहा।

हालांकि विमल ने उस महिला को नहीं पहचाना था, फिर भी वह स्वयं गेट खोलकर अंदर आ गई और विमल के सामने रखी कुर्सी पर बैठ गई। विमल उसके इस बेबाक अंदाज से हैरान हो गया। विमल के कुछ कहने से पहले ही उस महिला ने अपना परिचय दिया। 'मैं शान्ति हूं, भाई साहिब! गली में दूसरा मकान जो है वहां मैं रहती हूं। आते-जाते मैं आपको देखती हूं लेकिन आश्चर्य की बात है कि आपने मुझे नहीं पहचाना। वृन्दा भाभी तो मुझे जानती हैं। मैं उनसे मिलने आई हूं।'

'वृन्दा अभी मार्किट में है थोड़ी देर में आएगी।' विमल कहकर मन ही मन सोचने लगा कि औरतों की नजर काफी तेज होती है, कोई बच नहीं सकता। उसने आज तक शान्ति को नहीं देखा। देखा भी कैसे होगा। अभी दो महीने पहले ही तो इस मकान में आए हैं। सुबह-सुबह जल्दी आफिस जाना, रात को घर वापिस आना। यही दिनचर्या है विमल की। पड़ोस में कौन रहता है, विमल को मालूम नहीं। उसके दिल दिमाग में यह बात भी नहीं आ सकती थी कि यह महिला वही है, जो उसकी बाईक के आगे गिरी थी और लोग उसे पागल कह रहे थे, क्योंकि वह उसका चेहरा नहीं देख सका था। विमल सोच ही रहा था कि शान्ति ने मौन तोड़कर कहा। 'भाई साहिब, क्या मैं समाचारपत्र पढ़ सकती हूं?'

'हां हां, अवश्य!' विमल ने हिन्दी का समाचारपत्र आगे बढ़ाया। शान्ति समाचारपत्र पढ़ने लगी। विमल की नजरें समाचारपत्र में थी लेकिन सोच कहीं और, शान्ति की तरफ। आखिर कौन है वह? वृन्दा भी घर पर नहीं है। आज पहली बार एक अजनबी महिला से मिला। उसे झेंप हो रही थी, लेकिन वह अजनबी महिला शान्ति मजे में समाचारपत्र पढ़ रही है, जैसे घर विमल का नहीं, उसी का हो और विमल उससे मिलने आया हो। हिन्दी का समाचारपत्र पढ़ने के बाद शान्ति ने अंग्रेजी का समाचारपत्र मांगकर पढ़ा। विमल को शान्ति एक आफत लग रही थी। उससे कैसे पीछा छुड़ाया जाए, अभी वह इसी उधेड़बुन में था कि वृन्दा मार्किट से वापिस आ गई। वृन्दा को देखकर शान्ति मुस्कुराकर बोली 'हाए भाभी।' वृन्दा ने भी कहा 'हाए शान्ति! कब आई। तबीयत ठीक है न।'

'बिल्कुल ठीक है। मगर यह क्या! भाई साहब को बीमार बना दिया।' शान्ति ने अपनेपन से कहा।

वृन्दा ने हंसते हुए जवाब दिया, 'तू भी शान्ति पागलों जैसी बातें करती है। क्या मैंने अपने पति को बीमार किया है? तू खुद देख रही है कितनी ठंड है। ठंड लग गई है।'

'हां भाभी, ठंड तो बहुत है, उसी कारण मैं भी तीन दिन बिस्तर पर पड़ी रही।' शान्ति इतना कहकर वृन्दा के पीछे अंदर कमरे में चली गई और विमल ने चैन की सांस ली कि खैर है, वृन्दा शान्ति को जानती है, वरना वृन्दा नाराज होकर विमल पर ही बरसती कि बिना जान-पहचान के किसी को घर में बिठा लिया, अगर किसी गैंग की सदस्या होती, कुछ ऊंच-नीच हो जाती तो कौन जिम्मेवार होता? उधर शान्ति तथा वृन्दा आपस में बातें कर रही थीं और इधर विमल कुछ देर तक समाचारपत्र पढ़कर कमरे में आकर बिस्तर पर लेट गया। बीमारी के बाद थकान के कारण विमल की आंख लग गई।

दोपहर को खाने के समय विमल ने वृन्दा से शान्ति के बारे में पूछा। वृन्दा ने बताया 'इससे तुम मिलना चाहते थे और मेरी गैरहाजिरी में मिल ही लिए।'

'मैं समझा नहीं कि क्या कहना चाहती हो तुम।'

'यह शान्ति वही पागल औरत है जिसको तुम पूछा करते थे और मैं कहा करती थी कि वह एक अक्लमंद है। उसको पागल कहने वाले खुद पागल हैं।' यह बात सुनकर विमल इतना ही कह सका, 'हां वह पागल नहीं है। तुम और क्या जानती हो उसके बारे में?'

वृन्दा ने शान्ति के बारे में बताना शुरू किया। शान्ति सामने वाली कतार के दूसरे मकान में अपने माता-पिता के साथ रहती है। पढ़ी-लिखी महिला का जीवन एक दुखभरी कहानी है। विवाहित शान्ति अपने पति और बच्चों से दूर मायके में रहती है। वृन्दा की नजर में शान्ति में कोई कमी या खोट नजर नहीं आता, फिर भी ससुराल और पति ने घर से निकाल दिया। शान्ति के दो बच्चे हैं- दोनों लड़के और दो बच्चों की मां शान्ति को पागल घोषित करके मायके बिठा दिया।

'बातों से तो पागल नहीं लगती। अंग्रेजी का समाचारपत्र पढ़ रही थी। उसके व्यवहार, बातचीत के तरीके से हर व्यक्ति उसे सयाना ही कहेगा।'

विमल की समझ से परे था कि लोग उसे पागल क्यों कहते हैं? यह विषय ही कुछ ऐसा है। इतनी जल्दी कैसे किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है। किसी की कोई भी बात सच मानकर विश्वास करना ही पड़ता है। समय बीतने पर किसी व्यक्ति के साथ रहने पर ही उसकी असलियत पता चलती है। विमल ने इसी तर्क पर शान्ति के बारे में सोचना बंदकर टेलीविजन के चैनल बदलना शुरू कर दिया। उसे पक्का यकीन हो गया कि वृन्दा ने शान्ति को सही परखा है।

दो दिनों बाद बीमारी से छुटकारा पाकर अपने रूटीन के कार्यों में व्यस्त हो गया। वही दिनचर्या, सुबह जल्दी आफिस जाना, रात को देर से घर आना। आफिस से एक सप्ताह की छुट्टी का सारा पेंडिंग काम निबटाने के साथ नया काम भी साथ-साथ पूरा करने के चक्कर में रोज रात को देर तक आफिस में बैठकर काम करने पर वृन्दा ने एक दिन बोल ही दिया, 'अधिक काम के बोझ में फिर तबीयत बिगाड़ लोगे। काम तो कभी समाप्त नहीं होंगे।'

'क्या किया जाए श्रीमती जी? आदमी को मशीन समझकर काम करवाया जाता है आफिसों में।'

(अगले अंक में जारी)

भारत का माहौल बुरा है, सब हैं नफरत भरे हुए
दाढ़ी वाले चीख रहे हैं, मुसलमान हैं डरे हुए
मुल्ला मौलाना रोते हैं, अब सुख दायक नहीं रहा
ये भारत अब मुसलमान के रहने लायक नहीं रहा
मुंह में भरकर सत्ता की वो पान सुपारी, बोल गए
मुसलमान है डरा हुआ, हामिद अंसारी बोल गए
अब जब सब ने मान लिया है, नहीं सुरक्षित भारत है
२० करोड़ मुसलमानों के सर पर नाची आफत है
अरे तभी तो कहता हूँ मैं, कायम सबके नूर रहें
रोहिंग्या जितने मुस्लिम है, वो भारत से दूर रहें
बसना है तो जाकर बस लो, बंगलादेश पडोसी है
इंडोनिशिया बुआ तुम्हारी, और मलेशिया मौसी है
फूफा था सद्दाम तुम्हारा, उस बगदाद चले जाओ
या फिर बगल सीरिया में करने जेहाद चले जाओ
हज के खाली टेंट पड़े हैं, उनमें जाकर पिल जाओ
या अफगानिस्तान पहुँच कर तालिबान से मिल जाओ
अगर शिया से दिक्कत ना हो तो ईरान चले जाओ
और कहीं ना मिले जगह तो पाकिस्तान चले जाओ
लेकिन भारत में बसने का ख्वाब देखना बंद करो
राशन कार्ड न बनने देंगे, जाकर कहीं प्रबंध करो
सेंतालिस की भूलों को साकार नहीं बनने देंगे
वोटर पत्र भूल जाओ, आधार नहीं बनने देंगे
घुसपैठी को भाई कह दें, नहीं रही अब चाहत है
नेहरू वाला देश नहीं, ये मोदी वाला भारत है
ओवैसी के जेहादी अरमान नहीं पलने देंगे
ममता की वोटों वाली ये दाल नहीं गलने देंगे
धर्म सनातन की पीढ़ी पर दाग नहीं लगने देंगे
भारत के आंचल में फिर से आग नहीं लगने देंगे
जाग चुका है भारत, भगवा खोल नयन लहराया है
रग रग में केसरिया का रंग और अधिक गहराया है
दुनिया सुन ले, ये भारत खैराती बिस्तर नहीं रहा
हर ऐरे गैरे की खातिर
खाला का घर नहीं रहा
कवि गौरव बोले, लहजा
स्वच्छंद कर दिया भारत ने
हर कुत्ते को रोटी देना
बंद कर दिया भारत ने

-- गौरव चौहान

भारत माँ के मस्तक जगमग करता एक सितारा है
वो कश्मीर हमारा है!
बर्फ की चादर श्वेत ओढ़ कर हिमनग पहरा देते हैं
वीर सिपाही शान तिरंगा घर-घर फहरा देते हैं
शांत सहज डल झील में चलता फूलों सजा शिकारा है
वो कश्मीर हमारा है!
हवा स्वयं को करने सुरभित आती केसर घाटी में
चंदन जैसी खुश्बू आती जिसकी पावन माटी में
नैसर्गिक सौंदर्य से लिपटा जिसका गजब नजारा है
वो कश्मीर हमारा है!
जहाँ चिनारों के पत्तों से ओस की यारी रहती है
सेब के बागों में खंजन की पहरेदारी रहती है
झेलम के शुचि शीतल जल ने इसका रूप संवारा है
वो कश्मीर हमारा है!

-- अंकिता कुलश्रेष्ठ

एक अविरल और पावन प्रेम की रसधार दूँ
गीत गजलों और छंदों का तुम्हें संसार दूँ
दर्द का अहसास डूबा इस जगत की थाह में
शूल भी चुभते रहे हैं मोड़ लेती राह में
हर तरफ घन छा रहे हैं देखना जिनको कठिन
ठोकरें खाता रहा हूँ रोशनी की चाह में
डाल जीवन में तुम्हारे प्रेम का हर तार दूँ
बैठ कर छत पर कभी वो देर तक का जागना
एक दूजे से चिपक कर सर्दियों में तापना
हो गए इतने बड़े कब याद कुछ आता नहीं
याद है केवल तुम्हारा मस्त होकर नाचना
राग की वीणा बनो गर इक मधुर झनकार दूँ
भावनाएँ तृप्त कर दो सौंप कर अपने अधर
थक गया हूँ हर दुआ है आज मेरी बेअसर
बिन सहारे जिंदगी में
सिर्फ मिलती है घुटन
थाम लोगे हाथ तो
आसान होगा हर सफर
चाँदनी हो तुम अगर तो
चाँद बन कर प्यार दूँ

-- उत्तम सिंह 'व्यग्र'

एक कलम के बूते पर मैं दुनिया रोज बदलता हूँ
ये मत सोंचो कवि हूँ मैं तो बस कविता कर सकता हूँ
ठेले पर सपनो की दुनिया, लेकर चलने वाला हूँ
मैं सूरज के साथ गगन के, पार निकलने वाला हूँ
सागर को तो एक घूँट में, पीने का दम रखता हूँ
मेरी कलम सितारों को भी, आँख दिखाती चलती है
दिल के पन्नों के भीतर भी, एक नदी सी पलती है
चिंगारी लेकर आँखों में, खुद भी बहुत झुलसता हूँ
रोज इरादों की रेतीली,
मिट्टी को चुनता रहता
बीज नई आशाओं वाले,
मन ही मन बुनता रहता
मैं अतीत का व्यापारी हूँ,
कल की खेती करता हूँ

-- राहुल द्विवेदी 'स्मित'

चंचल मन की लहरों पर, एक चेहरा आता जाता है
ओझल न हो जाये ये चेहरा मन मेरा घबराता है
प्रीत से उसने प्रीत जगाई, मेरे आवारा से मन में
हुआ फिर कुछ ऐसा कि बदल गया सब जीवन में
उसके हर अल्फाज पर ये मन खो सा जाता है
वो अल्हड़ सी सावन के झूलों संग मस्ती करती है
कभी झगड़ती सखियों से कभी जोर से हँसती है
उसकी हर नादानी पर, मन उस ओर ही बढ़ता जाता है
कुमकुम मेंहँदी, चूड़ी, कंगन, श्रृंगार वो करती है
पायल की झंकार सँग वो ढेरों बातें करती है
उसकी मेहँदी मेरी खातिर, मन सोच सोच इतराता है
चूनर ओढ़े लाल ख्वाबों
में वो जब आती है
जाते जाते न जाने
कितनी यादें दे जाती है
उसके गजरे की खुशबू पर,
मन अटक सा जाता है

-- दीपिका गुप्ता 'कोयल'

जागो जागो बुंदेलखंड जागो, जागो जागो बुंदेली युवा जागो
हाथ दोनों उठाके राज मांगो
बदलो तदवीर से अपनी किस्मत, छोड़ दो मौन रहने की आदत
गरजना करने हक अपने मांगो
जागो जागो बुंदेलखंड जागो, जागो जागो बुंदेली युवा जागो
आजादी का जश्न मनाते गुजरे सालोंसाल
पर देखो बुंदेलखंड को है कितना बदहाल
लुट रहा यहां का खजाना, लखनऊ को है तनिक फिक्र ना
आल्हा ऊदल की संतति हो तुम, सोचकर भीरूता मन की त्यागो
जागो जागो बुंदेलखंड जागो, जागो जागो बुंदेली युवा जागो
नेता अफसर दोनों यहां पे हो रहे मालामाल
छाती चीरकर इस धरती को बना रहे कंगाल
तंत्र यहां का गूंगा बहरा, बस कागज पर देता पहरा
अपनी किस्मत स्वयं रचेंगे, अब यह प्रण लेकर जागो
जागो जागो बुंदेलखंड जागो, जागो जागो बुंदेली युवा जागो
वर्षो से चल रही सियासत, बदल रही ना क्षेत्र की किस्मत
नेताओं की दोहरी चाल, बुंदेली जन जन है बेहाल
राहत के जो पैकेज आए, अब उनका हिसाब मांगो
जागो जागो बुंदेलखंड जागो, जागो जागो बुंदेली युवा जागो
सूखा जब जब यहां मंडराए, नेता अफसर प्लेन से आए
राहत का करने ऐलान, हो जाते सब अंतरध्यान
पुनरावृत्ति न हो इन सबकी, यही सोचकर राज मांगो
जागो जागो बुंदेलखंड जागो, जागो जागो बुंदेली युवा जागो
गर जो जागे नहीं समझ लो, प्रबल भंवर में तुम्ही घिरोगे
मौन रहे थे क्यों हम अब तक
यही सोच सिर अपना धुनोगे
भावी पीढ़ी के हित की खातिर
उठो और अपनी तंद्रा त्यागो
जागो जागो बुंदेलखंड जागो
जागो जागो बुंदेली युवा जागो

-- उमेश शुक्ल

सम्बन्धों की दुनियादारी, अनुबन्धों की बात करो
सपने कब अपने होते हैं, सपनों की मत बात करो
लक्ष्य नहीं हो जिन राहों में, कभी न उन पर कदम धरो
जिनसे औंधे मुँह गिर जाओ, ऐसी नहीं उड़ान भरो
रंग-बिरंगी इस दुनिया में, कभी नहीं उत्पात करो
सपने कब अपने होते हैं, सपनों की मत बात करो
अपनी बोली, अपनी भाषा, सबको लगती है प्यारी
उपवन को धनवान बनाती, किसिम-किसिम की फुलवारी
सबके अपने भिन्न वेश है, ऐसा भारतवर्ष देश है
पाले की मारी बगिया में, और न अब हिमपात करो
सपने कब अपने होते हैं, सपनों की मत बात करो
अन्न जहाँ का खाते हो, जलपान जहाँ पर करते हो
अपने काले कृत्यों से,
क्यों उसे कलंकित करते हो
मानवता की प्राचीरों पर,
अब न कुठाराघात करो
सपने कब अपने होते हैं,
सपनों की मत बात करो

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

(सोलहवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

धृष्टद्युम्न की बात समाप्त होते ही युधिष्ठिर ने महाराज विराट से निवेदन किया कि आप अपने विचार रखें। इस पर विराट ने उठकर कहा- 'मैं पांचाल राजकुमार की बात से सहमत हूँ। दुर्योधन की दुष्टता की कोई सीमा नहीं है। उसने धर्मराज युधिष्ठिर और उनके पूरे परिवार को इतना कष्ट दिया है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उससे कोई याचना करना निष्फल ही होगा। इसलिए हमें एक भी दिन का समय नष्ट किये बिना युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ कर देनी चाहिए और हस्तिनापुर पर आक्रमण करना चाहिए।'

उनके निकट बैठे हुए महाराज द्रुपद सहित अनेक व्यक्तियों के सिर सहमति में हिले। उनके बाद कई व्यक्तियों ने उठकर विभिन्न शब्दों में अपना वही मत प्रकट किया, जो राजकुमार धृष्टद्युम्न और महाराज विराट पहले ही व्यक्त कर चुके थे।

इन सबकी बात सुनते हुए बलराम क्रोध में उबल रहे थे। अन्तिम वक्ता द्रुपद के बैठते ही उन्होंने खड़े होकर कहा- 'यहाँ बैठे हुए सभी लोग युद्ध के लिए लालायित लगते हैं। आप सब लोग दुर्योधन के ऊपर दुष्टता का आरोप लगा रहे हैं, लेकिन यह क्यों भूल रहे हैं कि अपनी दुर्दशा के लिए सम्राट युधिष्ठिर सहित सभी पांडव स्वयं उत्तरदायी हैं। इन्होंने अपने राज्य, भाइयों और पत्नी को भी जुए में दाँव पर लगाकर घोर पाप किया था, जिसका परिणाम ये भुगत रहे हैं।

कौरवों से युद्ध करना सरल नहीं है। उनके पक्ष में पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, कृपाचार्य, अंगराज कर्ण जैसे धुरंधर योद्धा हैं। स्वयं युवराज दुर्योधन बहुत वीर हैं। इनका सामना करने की सामर्थ्य पांडवों के पक्ष में किसकी है? युद्ध से हमें कुछ मिलने वाला नहीं है। इसलिए हमें युद्ध का विचार त्यागकर दूत भेजकर उनसे राज्य की याचना करनी चाहिए। सम्भव है कि पांडवों के कष्टों को ध्यान में रखते हुए वे इनको इन्द्रप्रस्थ लौटाने पर सहमत हो जायें।'

बलराम की बात सभी को तीर की तरह चुभ रही थी, परन्तु उनकी वरिष्ठता को ध्यान में रखते हुए कोई कुछ नहीं बोला और सभी सम्राट युधिष्ठिर की ओर देखते रहे। अपने मन की भड़ास निकालकर बलराम अपनी जगह बैठ गये।

श्रीकृष्ण अभी तक कुछ नहीं बोले थे। वे दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। जब सभी वरिष्ठ लोग अपनी-अपनी बात कह चुके, तो युधिष्ठिर को याद आया कि श्रीकृष्ण ने तो अपना मत दिया ही नहीं। इसलिए उन्होंने कृष्ण से निवेदन किया कि आप यहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों में सर्वश्रेष्ठ हो। आप अपने विचार व्यक्त कीजिए कि हमें क्या करना चाहिए।

श्रीकृष्ण ने उठकर कहा- 'पांचाल राजकुमार और महाराज विराट ने जो मत व्यक्त किया है, वह अपनी जगह उचित है। भ्राताश्री के कहने में भी तथ्य है। हम सब जानते हैं कि दुर्योधन दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति है। यद्यपि कौरव राजसभा में पितामह भीष्म, महात्मा विदुर, आचार्य द्रोण और कृपाचार्य जैसे महानुभाव धार्मिक और न्यायशील स्वभाव के हैं, लेकिन वे सभी दुर्योधन के सामने विवश हो गये हैं और उनके कथन को वहाँ अधिक महत्व नहीं दिया जाता। इसलिए हमें युद्ध करना ही पड़ेगा, क्योंकि दुर्योधन किसी भी स्थिति में पांडवों को उनका अधिकार प्रसन्नता से नहीं देगा।

इतना स्पष्ट होने पर भी परम्परा के अनुसार युद्ध की घोषणा करने से पहले हमें कौरवों के पास अपना दूत भेजकर न्याय की माँग करनी चाहिए। इससे दो लाभ होंगे। एक तो किसी को यह कहने का कोई कारण नहीं रहेगा कि पांडवों ने कौरवों को न्याय करने का अवसर नहीं दिया और सीधे युद्ध की घोषणा कर दी। दूसरे, दूत भेजने और उसके लौटने की प्रतीक्षा करने से हमें युद्ध की तैयारी के लिए अधिक समय मिल जाएगा। इसलिए हमें किसी बुद्धिमान और सम्मानित विद्वान् ब्राह्मण को अपना दूत बनाकर कौरवों के पास भेजना चाहिए। इसके साथ ही हमें युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ कर देनी चाहिए और सेना के साथ ही अस्त्र-शस्त्रों का भंडार एकत्र कर लेना चाहिए।'

भगवान श्रीकृष्ण की बात सभी को अच्छी लगी। अतः महाराज युधिष्ठिर ने उठकर कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने जो कहा है हम सभी उससे सहमत हैं। इससे अच्छा विचार दूसरा नहीं हो सकता। अब आप लोग यह विचार कीजिए कि हमें किस व्यक्ति को अपना दूत बनाकर भेजना चाहिए। इस पर महाराज द्रुपद ने कहा कि ऋषि धौम्य पांडवों के पुरोहित हैं और बहुत विद्वान् भी हैं। वे हमारी बात को कौरवों की राजसभा में अधिक अच्छी तरह रख सकते हैं। इसलिए उनको ही दूत बनाकर भेजना चाहिए। महाराज द्रुपद की यह राय सबको बहुत पसन्द आयी। अतः ऋषि धौम्य को दूत बनाकर भेजने का निश्चय किया गया। उनको राजसभा में बुलाकर सभी बातें समझायी गयीं और सुरक्षा हेतु दो सैनिकों के साथ उनको हस्तिनापुर भेज दिया गया। इसके साथ ही सभी मित्र राजाओं को युद्ध में सहायता हेतु बुलाने के लिए दूत भी भेज दिये गये।

इधर भीम, धृष्टद्युम्न और उत्तर को विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण कराने और उनका उचित रूप में भंडारण करने का दायित्व दिया गया। सहदेव और नकुल को युद्ध हेतु घोड़ों के रखरखाव का प्रबंध देखने का कार्य दिया गया। अर्जुन और अभिमन्यु सहित अन्य राजकुमारों ने सैनिक टुकड़ियों को संगठित और प्रशिक्षित करने का कार्य सँभाला। सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो गये।

पांडवों के पुरोहित ऋषि धौम्य युधिष्ठिर का सन्देश लेकर कौरवों की राजसभा में गये थे और उनके लौटने की प्रतीक्षा की जा रही थी। इधर सम्राट युधिष्ठिर की चिन्तायें बढ़ रही थीं। वे भली प्रकार अनुभव कर रहे थे कि अब युद्ध अपरिहार्य है। वे युद्ध से भयभीत नहीं थे, बल्कि इस बात से चिन्तित थे कि अब उन्हें पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य तथा कृपाचार्य से भी युद्ध करना पड़ेगा और यदि आवश्यक हुआ तो उनका वध भी करना पड़ेगा। वे जानते थे कि ये भले ही कौरवों की ओर से युद्ध करेंगे, लेकिन मन से ये सभी चाहते हैं कि युधिष्ठिर को उनका न्यायपूर्ण अधिकार मिल जाये।

युधिष्ठिर यदि कौरव पक्ष के किसी योद्धा से भयभीत थे, तो वह था अंगराज कर्ण। वे जानते थे कि कर्ण ने स्वयं भगवान परशुराम से युद्धकला सीखी है और वह बल और वीरता में अर्जुन से किसी भी तरह कम नहीं है, बल्कि उससे कुछ अधिक ही होगा। वे यह भी जानते थे कि कर्ण ही एक ऐसा योद्धा है, जो पूरे मन से कौरवों के पक्ष में युद्ध करेगा। वह पांडवों से द्वेष मानता है, विशेष रूप से अर्जुन के प्रति वह बहुत निर्मम था। यही युधिष्ठिर की चिंता का सबसे बड़ा कारण था, जिससे उन्हें रात्रि को नींद भी नहीं आती थी।

युधिष्ठिर आदि सभी पांडव जानते थे कि भले ही पुरोहित धौम्य सन्देश लेकर हस्तिनापुर गये हैं, लेकिन बिना युद्ध किये हमें हमारा राज्य मिल जाएगा इसकी कोई संभावना नहीं है। वे दुर्योधन की दुष्टता को अच्छी तरह जान गये थे और यह भी जानते थे कि उसके अंधे पिता महाराज धृतराष्ट्र केवल शारीरिक दोष से ही नहीं बल्कि पुत्र मोह में भीतर से भी अंधे हो चुके थे। वे पांडवों पर प्रेम करने का दिखावा चाहे जितना करें, परन्तु वास्तव में उनको पांडवों से लेशमात्र भी स्नेह नहीं है और वे यही चाहते हैं कि उनके छोटे भाई के वे सभी महान् गुणवान और धर्मात्मा पुत्र आजीवन वन-वन भटकते रहें और भीख मांगते रहें। इसलिए वे धृतराष्ट्र से कोई आशा नहीं रखते, लेकिन भगवान श्रीकृष्ण के कहने से ही वे दूत भेजने को तैयार हुए थे।

धौम्य ऋषि जब हस्तिनापुर पहुंचे, तो कौरवों ने उनके प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया और उनसे एक साधारण दूत की तरह ही व्यवहार किया। अवसर मिलते ही ऋषि धौम्य ने कौरवों की राजसभा में पांडवों का पक्ष भली प्रकार रखा। उन्होंने सबसे पहले युधिष्ठिर तथा अन्य पांडवों की ओर से सभी गुरुजनों को प्रणाम निवेदित किया और उनकी कुशलक्षेम पूछी। फिर उन्होंने उनका राज्य लौटाने का निवेदन स्पष्ट शब्दों में किया। उन्होंने कहा कि पांडवों ने द्यूत क्रीड़ा की सभी शर्तों का पालन किया है। वे १२ वर्ष तक वनवास में रहे हैं और पूरे एक वर्ष तक अज्ञातवास में रहे हैं। अब उनकी ओर से कोई कर्तव्य शेष नहीं है। इसलिए द्यूत की शर्तों के अनुसार उन्हें उनका राज्य वापस दे देना चाहिए। यही न्याय है और इसी में सबकी कुशलता है।

(अगले अंक में जारी)

हमारे बच्चे कितने सुरक्षित

जवाहर लाल सिंह

घटना-१ : गुरुग्राम के नामी रयान इंटरनेशनल स्कूल में दूसरी क्लास में पढ़ने वाले ७ साल के बच्चे प्रद्युम्न का शव वाशरूम में मिला है. शव के पास से चाकू बरामद हुआ है. बच्चे की गर्दन और शरीर के अन्य हिस्सों पर चाकू के निशान मिले हैं. घटना के बाद स्कूल के ही बस के कंडक्टर को आरोपी के रूप में गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है. कंडक्टर ने अपना गुनाह भी कबूल कर लिया है. उसके अनुसार वह प्रद्युम्न के साथ अप्राकृतिक यौनाचार करना चाहता था और असफल रहने पर चाकू से उसकी गर्दन पर वार कर दिया और प्रद्युम्न की मौत हो गयी. स्कूल के प्रिंसिपल को तत्काल सस्पेंड कर दिया गया है. पर पूरा मामला संदिग्ध लग रहा है और स्कूल की लापरवाही साफ झलक रही है. बाद में यह भी पता चला है कि प्रद्युम्न अभी अपनी क्लास में आया भी नहीं था. उसकी सहपाठी बच्ची से प्रद्युम्न का बैग माँगा गया और उससे उसकी डायरी निकाली गयी. उसके स्कूल बैग और पानी के बोतल को जिसमें खून के निसान थे साफ किया गया. चाकू जिससे हत्या की गयी उसे भी साफ किया गया. बाथरूम के फर्श को साफ किया गया, यानी हत्या के निशान को मिटाने की कोशिश की गयी. यह सब मामले को और ज्यादा संदिग्ध बनाता है. स्कूल प्रशासन और स्थानीय प्रशासन सभी शक के घेरे में हैं. जबकि मुख्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर न्याय की बात करते हैं. बच्चे का मामला है, कुछ दिन बाद स्वयं शांत हो जाएगा.

घटना-२ : हैदराबाद के एक संभ्रांत इलाके के स्कूल में सात साल के छात्र ने अपने से एक साल छोटे लड़के की कथित तौर पर इस कदर पिटाई की कि वह अपनी जान से हाथ धो बैठा। पुलिस के द्वारा दी गई जानकारी में पहली क्लास के मोहम्मद इब्राहिम को १२ जुलाई के दिन तीसरी में पढ़ने वाले एक छात्र ने न सिर्फ पीटा बल्कि उसके पेट में चार बार इस कदर लात मारी की दो सर्जरी के बाद भी उसे बचाया नहीं जा सका। अस्पताल में भर्ती होने के चार दिन बाद भी इब्राहिम चोटों से उभर नहीं पाया और उसकी मौत हो गई।

घटना-३ : पिछले साल दिल्ली के एक नामी स्कूल में ६ साल के बच्चे का शव वाटर टैंक में संदिग्ध हालत में मिला था. दिव्यांश नामक यह बच्चा रयान इंटरनेशनल स्कूल में पहली कक्षा का छात्र था. शनिवार को वह पोएम कम्पटिशन में भाग लेने स्कूल आया था. हैरानी की बात ये रही कि शव शनिवार दोपहर करीब सवा १२ बजे बरामद हुआ, जबकि पुलिस को इसकी जानकारी करीब २ घंटे बाद दी गई. स्कूल पहुंचकर पुलिस ने जांच शुरू की तो पता चला कि दिव्यांश सातवें पीरियड से क्लास से गायब हो गया था. स्कूल के पिछले हिस्से में एक वाटर पंप के टैंक में उसका शव मिला. जांच रिपोर्ट में स्कूल को लापरवाह और सबसे बड़ा जिम्मेदार बताया गया था. मामले में प्रिंसिपल से लेकर स्कूल मैनेजमेंट तक पर कार्रवाई की सिफारिश की गई थी. रिपोर्ट में कहा गया था कि स्कूल अपनी जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह से असफल रहा था.

घटना-४ : राजधानी दिल्ली के शाहदरा स्थित गांधी नगर इलाके में एक प्राइवेट स्कूल में एक चपरासी द्वारा पांच साल एक बालिका के साथ बलात्कार किये जाने का मामला सामने आया है. शाहदरा की पुलिस ने ४० वर्षीय आरोपी विकास को गिरफ्तार कर लिया है. वह इसी स्कूल में चपरासी है. पुलिस ने बच्ची के बताए हुलिये और पहनावे के आधार पर दबिश देकर विकास को पकड़ा, जिसके बाद उसकी तस्वीर बच्ची को दिखाई गई. बच्ची ने उसे पहचान लिया. हालांकि देर रात जब आजतक ने आरोपी विकास से बात की तो उसने इनकार कर दिया. उसने कहा कि वह तो बच्ची को जानता तक नहीं. पुलिस ने जब विकास को गिरफ्तार किया तब वह शराब पिए हुए था. पूछने पर उसने कहा कि वह रोज शराब पीता है. उसके अनुसार वह पिछले कई सालों से बच्चों को स्कूल छोड़ रहा है लेकिन कभी किसी ने शिकायत नहीं की. वहीं पुलिस ने बताया कि विकास स्कूल में पिछले तीन वर्षों से काम कर रहा था. इससे पहले वह इसी स्कूल में सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करता था. पुलिस ने बताया कि वह बच्ची को एक खाली क्लासरूम में ले गया और उसके साथ बलात्कार करने के बाद उसे गंभीर नतीजे भुगतने की धमकी दी.

यह मामला तब सामने आया जब लड़की ने अपनी मां से अपने गुप्तांग से खून आने और दर्द होने की शिकायत की. लड़की को अस्पताल ले जाया गया जहां मेडिकल टेस्ट के बाद बलात्कार की पुष्टि हुई. पुलिस के अनुसार, घटना के बाद सदमे में आई बच्ची को काउंसलिंग के लिए भेजा गया है. पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए धारा ३७६ और पोस्को के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया.

उपर्युक्त सभी घटनाएँ हाल-फिलहाल की हैं और नामी-गिरामी स्कूलों की हैं, जहाँ की बिल्डिंगें अच्छी होती हैं, व्यवस्था अच्छी कही जाती है और इन सबके बदले बच्चों के माता-पिता से ऊंची फीस वसूली जाती है, लेकिन जिम्मेवारी के नाम पर शून्य. इन स्कूलों में प्रबंधन तो मोटी कमाई करता है और एक के बाद दूसरे तीसरे स्कूल भी खोलता चला जाता है, पर अपने यहाँ के स्टाफ का खूब शोषण भी करता है. शिक्षक से लेकर तीसरे चौथे दर्जे के कर्मचारियों की नियुक्ति का पैमाना कितना सही होता है, यह नजदीक जाकर ही पता चलता है. यह नहीं कि सभी कर्मचारी या स्टाफ घटिया स्तर के होते हैं, पर कुछ तो ऐसे होते ही हैं जो अच्छे खासे स्कूल को भी बदनाम कर देते हैं. जिम्मेदारी तो स्कूल की ही है. साथ ही प्रशासन और सरकार की भी जिम्मेदारी है कि सभी शिक्षण संस्थाओं पर अंकुश रक्खे और बीच-बीच में औचक निरीक्षण कर जायजा लेती रहे.

विद्यालय विद्या का मंदिर होता है जिसमें बच्चे विकसित होते हैं. इनमें बच्चे पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ अनुशासन, खेलकूद, नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेकर अच्छे नागरिक बनते हैं.

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

देश हम सबका है लेकिन...

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

निश्चित तौर पर यह देश जितना हिंदुओ का है उतना ही मुसलमानों, सिक्खों, ईसाइयों और बौद्धों का भी है लेकिन उनका बिलकुल नहीं है जिनका लोभ देश से भी बड़ा है, जो वोट को हथियार बनाकर राष्ट्र के सामाजिक ताने-बाने के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं और देश के सभी संसाधनों पर विशेष अधिकार चाहते हैं. ऐसे लोगों से निबटने का काम केवल सरकार का नहीं है. ऐसे लोगों से निबटने के लिए अपने सभी तुच्छ स्वार्थो को त्यागकर जन-जन को आगे आना पडेगा और देश की समृद्धि के लिए सरकारी भिक्षा को त्यागकर अपने श्रम कौशल से आत्मनिर्भर बनना पडेगा. जिस श्रमकार की कभी दुनिया भर में धाक थी उसे कांग्रेसी ६५ साल में अनुदान का मोहताज बना दिया. चूँकि अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं, इसलिए कांग्रेस का बौखलाना और बेसिर-पैर की बात करना स्वाभाविक है.

कैसे कैसे बहाने बनाए जा रहे हैं. कन्हैया को दलित से जोड़ दिया जाता है, तो पत्थरबाज कश्मीरियों को अल्पसंख्यक से. समझ में नहीं आता कि अगर कांग्रेसी १०० साल शासन करते तो शायद हर नागरिक के लिए अलग-अलग कानून बना देते. अभी अभी एक पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या हुई है और संजोग से वह कांग्रेस शासित राज्य में हुई है लेकिन कांग्रेस के संभावित प्र.म. ने बिना समय गँवाए महज आधे घंटे में ही फैसला दे दिया. सवाल उठता है कि अगर गौरी की हत्या संघ विचारधारा के लोगों द्वारा की गयी है, तो चार हजार सिक्खों की हत्या किस विचारधारा के लोगों ने की थी? स्वयं इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्या किस विचारधारा के लोगों ने की थी? विचारधारा बड़ा व्यापक शब्द है उसका इतना संकुचित उपयोग नहीं होना चाहिए. डर लगता है कि जिस प्रकार सारे कांग्रेसी एक बिना विचार वाले को प्रधानमंत्री बनाने पर तुले हुए हैं और देश में लोभी मतदाताओं का एक बहुत बड़ा वर्ग विद्यमान है, कहीं सत्ता फिर इनके हाथ में चली गई, तो देश को उत्तर कोरिया बनने से कोई नहीं रोक पायेगा.

इन आंसुओं का मोल चुकाया न जाएगा
अब हमसे भी कोई गीत गाया न जाएगा
जी चाहता है अश्क ये पलकों से चुरा लूं
इस दर्द ए दिल का बोझ उठाया न जाएगा
सुन दर्द तुम्हें ही नहीं हमने भी जख्म खाए
दिल चीर के बस हमसे दिखाया न जाएगा
अहसास हो तुम्हें ये मुमकिन तो है हुजूर
कभी अपनी जुबां से दर्द बताया न जाएगा
अब नींद कहां हमको यूं होने हैं रतजगे
आंखों को आज हमसे सुलाया न जाएगा
हम सोचते हैं 'जानिब' तुम्हारा दर्द बांट लें
सुनो ये दर्द तेरा हमसे भुलाया न जाएगा

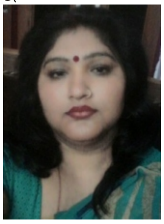

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

मन की बेचैनियां किसके साथ साझा करूँ
आओ मेरे दिल तुमसे ही कुछ वादा करूँ
कौन है जो धीरज देता इस भरी महफिल में
कुछ अनकही बातें किसके साथ बांटा करूँ
अजनबी से जहां को समझना बस का नहीं
दरिया प्रेम का भरकर खुद को निहारा करूँ
उल्फत का जमाना कहाँ से लाऊं नसीब में
जुल्फों से खेलकर मंजिल का सहारा बनूँ
शबे गम थम न जाये कहीं बस्तियों की तरह
गरीबी को दिलों की आंखों से सजदा करूँ
मायूस क्यों है ऐ दिल जमाने की बेबफाई से
चलो खुशियां भरे जज्बात को लुटाया करूँ
दिलों के तार अक्सर टूट जाते हैं तन्हाई में
सिलसिला प्यार का फिर से चलाया करूँ

-- वर्षा वार्ष्णेय, अलीगढ़

पराया हो के अपनापन बहुत है
मेरे गम में उसे उलझन बहुत है
कहाँ जाने गये दिल के परिंदे
दिले-बेजार में धड़कन बहुत है
मची है खलबली दिल के पटल पर
नजर में आज भी भटकन बहुत है
सिवा तेरे बताऊँ किसे मैं
जिगर में दर्द है तड़पन बहुत है
कली दिल की मिरे मुरझा रही है
बरसता क्यों नहीं सावन बहुत है
कभी सोचा नहीं क्या हमसफर यह
अकेली जीस्त में कलपन बहुत है
खाक छाने नहीं हम अब यहाँ-वहाँ
गम खाके जीने में अड़चन बहुत है
समाया है मिरे कल्ब-ओ-जिगर में
तेरे लहजे में मीठापन बहुत है
'रश्मि' कैसे कटे यह जिंदगानी
उदासी हर तरफ तुझ बिन बहुत है

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

निगाहों धुंध बेहद है घनी बदली सी छाई है
दिल में दस्तक देती फिर से तन्हाई आई है
आब आँखों में भरा औ प्यास कि बुझती नहीं
जाने किस डगर चलके ये तेरी याद आई है
छलछला उठी हैं माथे बूंदें सिसकती सी हुई
कुछ बरस पड़ने को अब सांसें हुई पुरवाई है
नींद छलती आँख को ख्वाब खलबल कर रहे
हथेलियों पर बेचैनियों की पकड़ी रोशनाई है
करवटों पर शेर मतले चादरों पे मचली गजल
भीगते तकियों की कोरों बैठी मिली रुबाई है
जोग बोले है कोई रोग कहे नाड़ी टटोलकर
उसी दिन जब से नजर तेरी नजर टकराई है

-- प्रियंवदा अवस्थी

सोचती हूँ इक कहानी लिखूं
तेरी और मेरी जुबानी लिखूं
लिखूं हाल ऐ दिल अपना
या सपनों की रवानी लिखूं
अरमानों की लिखूं गजल या
आँखों का बहता पानी लिखूं
बनाऊ नए फसाने फिर से, या
कहानी फिर वही पुरानी लिखूं
सजाऊ तेरे सपनो का काजल
या अपनी चुनर धानी लिखूं
गुनगुनाऊँ इश्क का कलाम या
खुद को तुझसे अनजानी लिखूं

-- प्रिया वच्छानी

गुल खिला देखिए
दिल मिला देखिए
अब न मन में रहा
इक गिला देखिए
खत्म अब पाप का
सिलसिला देखिए
झूठ का टूटता
अब किला देखिए
दंड के नाम से
वो हिला देखिए

-- डॉ सोनिया गुप्ता

कांटों में या गुलाब में लिख, नाम दिल की किताब में लिख
इतने सारे सवाल मेरे हैं, एक खत तो जवाब में लिख
मंजिल या कोई ठिकाना मिले, किनारे नहीं दोआब में लिख
वो चांद भी पूनम का आज, रोशन है तेरे शबाब में लिख
है एक सा नशा दोनों में तुझमें या शराब में लिख
सारे पुण्य खुदा तू रख ले पाप मेरे हिसाब में लिख
बस पूरा उपन्यास तेरा है 'जय' को लब्बोलुआब में लिख

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

कल पुर्जों पर ही यह जीवन, यदि मानव का निर्भर होगा
नई सदी में जरा सोचिए, जीना कितना दुष्कर होगा
यंत्रों की हो रहीं खेतियाँ, खाद-बीज निर्जीव डले हैं
फल क्यों जीवित हमें मिलेंगे, अगर जीन ही जर्जर होगा
रोटी, शिक्षा, रोजगार, घर, मूल समस्याएँ जन-जन की
मिलकर सब जन अगर विचारें, समाधान भी बेहतर होगा
कल पर ही क्यों नजरें होतीं, काल कभी कहकर आया है?
आज अगर यह अवसर खोया, महाप्रलय का मंजर होगा
मूढ़ खिवैया डगमग नैया, बीच भँवर में फँसी बेबसी
होश तभी आएगा शायद, जब पानी सिर ऊपर होगा
हुक्मरान ने उलझाया है, हर हिसाब को जाल बिछाकर
सुलझेंगे तब मसले सारे, जब हर एक जन साक्षर होगा
शिक्षित हाथों में हल लेकर, सिंचित हो यदि श्रम की खेती
खेत-खेत उपजेगा सोना, हरा गाँव का हर घर होगा
संकल्पों की थाम लेखनी, लेख उकेरें पाषाणों पर
जो लिक्खेंगे आज 'कल्पना', वही मील का पत्थर होगा

-- कल्पना रामानी

हुई अंजुमन में आपकी रात आधी
रह गई मुलाकात आधी बात आधी
हाथ जो बढ़ाया हमने खफा हो गये
महफिल से हुई रूखसत बारात आधी
नजरें उठायी जो बहकने लगे कदम
खता हो गई थी चांदनी रात आधी
करवट बदलते ही सहर हो गई साहिब
करार आया कहां था थी बात आधी
फिर मिलने का वादा करके चले वो
रो रही थी हर कली कायनात आधी
मुड़कर जो देखा मुझे करार आ गया
कह गये वो मेरी हर सौगात आधी
यादें हैं अब पास उनकी मेरे रहबर
फाड़ दी तस्वीर तहरीर किताब आधी
रो रोकर जीते हैं गैरों की महफिल में
होती रही तुमसे अक्सर मुलाकात आधी

-- प्रीती श्रीवास्तव

तू लाख कोशिश कर मुझे सताने की
मैं नहीं बनूंगी चीज अब तेरे सजाने की
हुई खता जो इश्क कर बैठी मैं तुझसे
क्यों की कोशिश मैंने तुझे आजमाने की
न अब आफताब होगा न सितारों की चाहत
न होगी अब जरूरत चिरागों को जलाने की
होगी न शिकायत मुझे तुझसे ऐ हमनशीं
तेरा मेरा इश्क, हुई बात अब गुजरे जमाने की
है इल्तजा ये मेरी मुझे भी भूल जाना तुम
न करना अब कोशिश इस रूठे को मनाने की

-- एकता सारडा

परम्परा

‘देखिए चाचा जी, आप ही समझाइए न बाबू जी को। हर रोज कामना से किसी न किसी बात पर ठान लेते हैं और निपटना मुझे पड़ता है। दफ्तर से लौटते ही उसका रोना झेला नहीं जाता।’

‘बेटा, कामना को भी तो समझाओ कि वह बड़ों से सभ्यता से बात किया करे।’

‘चाचा जी, कामना नए जमाने की लड़की है, उसे पुरानी परम्पराएँ रास नहीं आतीं, तो बाबू जी को ही समझौता करना पड़ेगा न? आज हर युवा पुरानी परम्पराएँ तोड़ रहा है, अगर कामना भी कुछ ऐसा ही करती है तो...’ कमल ने बात अधूरी छोड़ दी।

‘ठीक है, मैं भाई साहब से बात करूँगा, लेकिन मैं गारन्टी नहीं दे सकता कि वह मेरी बात मान ही लें।’

‘देखिए चाचा जी, कामना को तो मैं नाराज कर नहीं सकता। आखिर मुझे उसके साथ जिन्दगी गुजारनी है। बाबूजी तो वैसे भी अब बूढ़े हो चुके हैं। दो नहीं तो चार-छः साल और हैं। आप उन्हें समझाइए, आखिर बिना पुत्र के उनको अग्नि कौन देगा?’

‘कहते तो तुम ठीक हो, देखो, कोशिश करता हूँ।’ कहकर रामदास खाट से उठ गए। वैसे उन्हें इस हल्की सर्दी में धूप में बैठना अच्छा लग रहा था।

इशारा समझकर कमल भी उठ गया और मूछों पर ताव देता हुआ घर की ओर हो लिया। भीतर जाकर उन्होंने बहू से भोजन माँगा, तो बहू ने दूसरे कमरे से ही उन्हें सुनाते हुए कहा, ‘कोल्हू का बैल समझते हैं, जब इनको जरूरत पड़े तभी भोजन-पानी चाहिए।’ फिर जोर से चिल्लाते हुए बोली, ‘लाती हूँ’ और थाली जोर से मेज पर पटककर फिर वापस चली गई। रामदास सोच रहे थे कि वह भाई से क्या कहेंगे। उन्हें भी तो मुखाग्नि चाहिए।

थोड़ी देर बाद जब दोनों भाई इस समस्या पर बात करने बैठे तो बड़े भाई ने कहा, ‘राम! यदि परम्परा बदलने की ही बात है तो चलो अस्पताल चलते हैं।’

‘क्यों भइया?’

‘अरे तुम चलो तो सही।’ दोनों भाई रिक्शे से जिला अस्पताल चल दिए। वहाँ जाकर बड़े भइया ने अधिकारी से बात करके देहदान के दो फार्म भरवाए और दोनों भाइयों ने उन पर हस्ताक्षर करके अस्पताल को अपने शरीर दान कर दिए। घर लौटते समय दोनों भाई अपने को बहुत हल्का अनुभव कर रहे थे।

-- आशा शैली

सलीम

सौरभ और सलीम एक ही मौहल्ले में रहते थे, ईद और दिवाली पर खूब मस्ती करते थे। एक दूसरे के घर आना जाना रहता था। परिवार वाले भी मिलजुल कर रहते, पर दिवाली के कुछ दिन पहले ही दोनो परिवारों में किसी बात को लेकर बहस हो गई थी और बोलचाल बंद हो गई थी। पर बच्चे तो एक दूसरे के साथ खेलना चाहते थे। डरते-डरते कुछ कह नहीं पा रहे थे।

दिवाली का दिन आ गया था। सलीम का मन हो रहा था कि सौरभ के घर जाकर मिठाई भी खाए और खेले भी, वो दूर से ही सौरभ के घर की तरफ देख रहा था। सौरभ के मम्मी-पापा ने देख लिया। वह डर कर भागने लगा कि आँटी डांटेगी कि जब हम परिवार एक दूसरे से अब बात नहीं करते तो तुम क्या लेने आए हो?

इतने में सौरभ भागता हुआ सलीम के पास गया और उसे गले से लगा लिया और कहा- ‘यार! हम तो खेल सकते हैं आ जा मैने ममी पापा को बोल दिया है। हम दिवाली और ईद इकट्ठे मनाएंगे उन्हें रुठना है तो रूठें!’ सलीम भी झट से बोला- ‘मैंने भी अम्मी अब्बा से यही कहा है। उन्होंने आने दिया।’

सौरभ भी हँसकर बोला- ‘चल मम्मी-पापा भी तुझे बुला रहे हैं।’

सलीम खुशी खुशी सौरभ के साथ चल पड़ा।

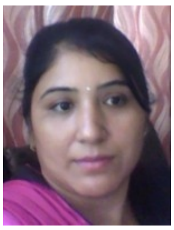

-- कामनी गुप्ता

कब तक

वर्माजी की बहू फिर से उम्मीद से थी, पहले एक लड़की थी सो इस बार सब उम्मीद लगाये थे कि जरूर लड़का ही होगा। मगर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। नर्स ने जब आकर बताया कि बधाई हो लड़की हुई है, तो औरतों ने ऐसे घूरकर देखा मानो खा ही जाएँगी। किसी ने माथे पर हाथ मारा और बोली- लो फिर ठीकरा फूट गया!

काकी-मामी बहू के सामने ही बोलने लगीं। पूनम, जो अभी प्रसव पीड़ा से थकी पपड़ाए होठों पर जीभ फिरा रही थी, यह सब सुनकर और डर गई, तब मिसेज वर्मा बहू का चेहरा देख ठंडी साँस लेती बोली- कोई बात नही इस बार नहीं, तो अगली बार सही, सुनकर पूनम सोचने लगी ‘एक बार और, इस महँगाई के जमाने में दो बेटियों के भविष्य का सवाल मुँह बाये खड़ा था और ये लोग तीसरी बार की उम्मीद लगाये बैठे हैं। यदि तीसरी बार भी लड़की हुई, तो क्या चौथी बार? आखिर कब तक और कितनी बार ये सिलसिला चलेगा?’

पूनम गंभीर हो गई, उसने मन ही मन कुछ निर्णय किया और पति सुरेश से अकेले में मिलने का इंतजार करने लगी।

-- गीता पुरोहित

पृष्ठ २५ की पहेलियों के उत्तर-

१. लड्डू, २. तोता, ३. हॉकी की गेंद, ४. बैडमिंटन कॉर्क, ५. हॉरर सीरियल

हमउम्र साथी

बेटे ने दोपहर का एपॉइंटमेंट दिया था मिलने का पर शाम ही कर दी आते आते। प्रकाश ने अपनी घड़ी पर नजर डाली, जो साढ़े सात बजा रही थी।

‘यस डैड, क्या बात करनी थी आपको?’

‘बेटा, वो मैं!’ शब्द जैसे गले में ही अटके रहे।

‘क्या हुआ डैड? कुछ प्रॉब्लम?’ बेटे ने थोड़ा घबरा के पूछा।

‘बेटा, तेरी माँ के जाने के बाद बहुत अकेला हो गया हूँ मैं। खाली घर काटने को दौड़ता है। पहले गुड्डू के साथ खेलते खेलते दिन कट जाता था पर अब वो भी नहीं।’ एक आह सी निकल गयी।

‘हां डैड, आप बोर हो जाते होंगे न ! बताइये मै क्या करूँ आपके लिए?’

‘बेटा, पता चला है कि पास ही एक वृद्धाश्रम है जहाँ मेरे जैसे लोग आते हैं समय बिताने को।’

‘नो डैड, कैसी बात कर रहे हैं आप? कुछ कहा क्या सोनाली ने आपसे?’

‘नहीं बेटा, ऐसा कुछ नही।’

‘पर डैड, लोग क्या कहेंगे? बेटा, अपने पिता को घर में नहीं रख पाया, जिम्मेदारी नहीं उठा पाया, बुढ़ापे में छोड़ दिया उसे वृद्धाश्रम में?’

‘नहीं बेटा, इसमें क्या बुराई है। गुड्डू भी तो होस्टल में रहकर पढ़ने गया है। कहने को तो लोग उसमें भी कहते ही होंगे।’

‘पर डैड?’

‘बेटा, वहां मुझे भी कुछ हमउम्र साथी मिल जायेंगे और फिर वीकेंड में जैसे तुम लोग गुड्डू से मिलने जाते हो वैसे ही मुझसे मिलने आ जाना। आओगे ना?’ अबकी बार रुंधे गले से आवाज आयी।

-- ऊषा भदौरिया

दरिद्रता का हकदार

महल जगमगाउठा था। प्रजा ने अपने घर के सभी दीपकों से राजा का महल रोशनी से भर दिया। माँ लक्ष्मी पूरे राज्य में घूम ली, सिवाय राजमहल के कहीं उजाला नहीं था। जब देवी लक्ष्मी राजमहल में प्रवेश को उद्यत हुई, दरिद्रता ने पूछ ही लिया- ‘जहां धन पहले से मौजूद है, वहां प्रवेश क्यों देवी? ये राजमहल की रोशनी तो अन्याय का परिणाम है। तनिक प्रजा की ओर भी तो देखिए।’

माँ लक्ष्मी ने जो प्रत्युत्तर दिया उसके बाद दरिद्रता ने सिर झुका दिया। माँ बोली- ‘अन्याय सहन करनेवाला दरिद्रता का ही हकदार है।’

-- विनोद दवे

रोहिंग्या मुसलमान : मानवता का पाठ बंद करे भारत

राजीव चौधरी

एक दोपहर कुछ लोग दिल्ली के जंतर-मंतर पर बर्मा में रोहिंग्या मुस्लिमों पर हमले के विरोध में शांति पूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे। इस बार न तो रोहिंग्या मुस्लिमों के पक्ष में मुम्बई के आजाद मैदान में अमर जवान ज्योति पर तोड़-फोड़ की और न ही लखनऊ में महात्मा बुद्ध की मूर्ति खंडित की। याद होगा कि पिछली बार २०१२ में करीब एक लाख मुस्लिमों ने आजाद मैदान में हिंसक उपद्रव किया था, जिसमें करीब ७ लोग मारे गये थे और बड़ी संख्या में सुरक्षाकर्मी घायल हुए थे। उस दौरान पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों को बड़ी संख्या में अपने देश में सुरक्षा की कमी महसूस हुई थी जिस कारण दिल्ली, मुम्बई बेंगलोर आदि बड़े शहरों में रह रहे पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों को पलायन करना पड़ा था।

आखिर कौन हैं रोहिंग्या मुसलमान? कहाँ से आये हैं, किधर बसाए गए हैं, भारत को उनसे क्या समस्या है, क्या हमें उनकी मदद करनी चाहिए या फिर ये किसी साजिश के तहत भारत में बसाए जा रहे हैं? ऐसे तमाम सवाल रोहिंग्या शरणार्थियों के नाम सुनते ही हमारे जेहन में आ जाते हैं। जैसे ही ४० हजार रोहिंग्या मुसलमानों को उनके देश म्यांमार वापस भेजने की बात सरकार ने उठाई तो प्रदर्शनकारी मानवतावादी सेकुलर लोगों का समूह आँखों में आंसू भरकर सरकार को मानवता का पाठ पढ़ाने आ गया। दरअसल ये लोग पिछले ५-७ साल में भारत में अवैध रूप से घुसे और देश के विभिन्न इलाकों में रह रहे हैं।

अब भारत सरकार रोहिंग्या मुस्लिमों को इनकी पहचान करने और इन्हें वापस म्यांमार भेजने की योजना पर काम कर रही है। म्यांमार की बहुसंख्यक आबादी बौद्ध है। म्यांमार में एक अनुमान के मुताबिक १० लाख रोहिंग्या मुसलमान हैं। इनके बारे में कहा जाता है कि वे मुख्यतः अवैध बांग्लादेशी प्रवासी हैं। बर्मा सरकार ने इन्हें नागरिकता देने से इन्कार कर दिया है।

मामला सिर्फ नागरिकता तक सीमित रहता तो कोई बात नहीं थी, किन्तु हाल ही में म्यांमार के रखाइन प्रांत में रोहिंग्या चरमपंथियों ने पुलिस चौकी पर हमला किया था जिसमें सुरक्षाबलों के कुछ सदस्य मारे गए थे। इस हमले के बाद भारतीय विदेश मंत्रालय ने कड़ी निंदा करते हुए बयान जारी किया था कि भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में म्यांमार के साथ मजबूती से खड़ा है। इस हमले के बाद ही रोहिंग्या समुदाय के खिलाफ सैन्य कार्यवाही शुरू हुई और रोहिंग्या संकट उत्पन्न हो गया।

पूरी दुनिया में बौद्ध धर्म अपनी अहिंसा के लिए जाना जाता है, फिर भी रोहिंग्या मुस्लिम और म्यांमार के बौद्ध आपस में सामंजस्य नहीं बैठा पाए? इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला यह कि किसी भी देश के नागरिक नहीं चाहेंगे कि उनके देश के संसाधनों पर किसी और देश के लोग किसी भी रूप में आकर कब्जा करें। दूसरा कारण ये है कि शरणार्थी भी अहिंसक हों, नियम मानने वाले हों, जिस देश में रहें उसकी देशभक्ति करने वाले हों, तो फिर भी ठीक है। वरना कोई भी देश अपने यहाँ देशद्रोहियों का जमावड़ा नहीं लगाएगा। तीसरा, प्रवास की भी समय सीमा होती है, यदि कोई वहाँ जीवनभर रहना चाहता है उसको वहाँ के मूल निवासियों की सभ्यता और संस्कृति से कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन रोहिंग्या देश से बढ़कर मजहब को मानते हैं। सबसे बड़ा कारण यही है, जिससे इतने साल म्यांमार में रहने के बावजूद रोहिंग्या मुस्लिम कभी वहां के मूल निवासियों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाए।

मानवता के नाते शरणार्थी को शरण देनी चाहिए लेकिन यहाँ मामला सिर्फ शरणार्थी का नहीं है। मैं बेहिचक कहता हूँ कि कई बार शरणार्थी अकेले नहीं आते, उनके साथ आता है उनका मजहब, उनकी अन्य मत मतान्तरों से नफरत और कट्टर मानसिकता, जो किसी भी अन्य समाज से घुलने-मिलने को तैयार नहीं होती। यूरोपीय देशों ने २०१५ में सीरियाई शरणार्थियों को शरण दी थी, क्या नतीजा निकला? जर्मनी में जर्मन युवतियों के साथ नववर्ष पर सामूहिक दुष्कर्म, फ्रांस में हमले, ब्रिटेन में आतंकी हमले। परिणामस्वरूप आज पूरा यूरोप आतंक के साये में जी रहा है। भारत में बोध गया मन्दिर में एक बम विस्फोट हुआ था और तब हमलावर ने बताया था कि बौद्ध धर्म को मानने वाले म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों की खातिर उसने बौद्ध मंदिर पर हमला किया है। बस यहीं से शुरुआत होती है इनके मजहबी पाखंड की। म्यांमार में कुछ हुआ था, तो आतंक भारत में फैलाया गया और भारत का राजनैतिक सेकुलरिज्म पूरी निर्लज्जता से 'आतंक का कोई मजहब नहीं होता' उच्चारित करके सो जाता है।

वर्ष १९९० से कश्मीरी पंडित अपने ही देश में शरणार्थी बनने को मजबूर हैं, पर मुस्लिम वोट बैंक के लिए नेताओं ने साजिश के तहत उनको कभी कश्मीर में वापस बसने नहीं दिया। कश्मीर में लगभग सभी हिन्दू या तो मार दिए गए या भगा दिए गए। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३७० के तहत कोई भी भारतीय जो कश्मीर का निवासी नहीं है, वहां जमीन नहीं ले सकता, लेकिन नेताओं ने रोहिंग्या मुसलमानों को जम्मू-कश्मीर में बसने दिया। क्यों? हालाँकि यह अभी तक साफ नहीं है कि भारत इन रोहिंग्या मुसलमानों को म्यांमार में भेजेगा या फिर बांग्लादेश या फिर भारत में ही रखेगा। रोहिंग्या मुसलमानों को निर्वासित करने का मुद्दा भारत के सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से जवाब मांगा है। रोहिंग्या मुस्लिमों की पैरवी जाने-माने वकील प्रशांत भूषण कर रहे हैं।

अब जब भारत सरकार ने रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजने का मन बना लिया है, तो इस पर मानवाधिकार संगठनों को आपत्ति है। यही मानवाधिकार संगठन उस समय घास चरने चले जाते हैं, जब कश्मीरी पंडितों को मारकर अपने ही घरों से बेदखल कर दिया जाता है, जब इराक में यजीदी महिलाओं पर मजहबी अत्याचार होता है या जब पाकिस्तानी सेना बलूचों पर जुल्म करती है। जब कराची और सिंध में जबरदस्ती हिन्दू लड़कियों को उठा लिया जाता है, तब न तो ये मानवता के पक्षधर दिखाई देते हैं, न ही विकसित देशों के वे राजनेता, जो बस दूसरों को उपदेश देते रहते हैं।

कुछ लोगों को इस पर भी आपत्ति है कि भारत ने १९५० में तिब्बती शरणार्थियों को अपनाया, १९७१-७२ में बंगलादेशी शरणार्थियों को अपनाया, तो रोहिंग्या मुसलमानों को क्यों वापस भेजा जा रहा है? जबकि सब जानते हैं हमारे पूर्व के अनुभव कड़वे ही रहे हैं। दूसरा, भारत में कितने ही लोग गरीबी रेखा से नीचे रह रहे हैं, कितने ही लोगों को एक समय का खाना भी नसीब नहीं हो रहा। अशिक्षा से हमारा मुल्क अभी भी लड़ रहा है। क्या ऐसे में ये गैर-जिम्मेदार शरणार्थी हमारे देश की समस्याएं और नहीं बढ़ाएंगे? ■

ग़ज़ल

आपका शिकवा पुराना हो गया
आज मौसम भी सुहाना हो गया
महज खोजें जो खुशी अब ले बढ़े
बस सुना गीतों हँसाना हो गया
खायशे पाये जो बड़ी कह लव खुले
दिल चमन सबको दिखाना हो गया
जिंदगी ने तो सताया है बड़ा
सोच पाये सा निभाना हो गया
एक पक्षी सा मन फसाना हो गया
आज घर में चहचहाना हो गया

-- रेखा मोहन

लघुकथा — उम्मीद बाकी है

'अरे, ओ! मोहन!' मोहन- 'हाँ मेम साब।'

'दरवाजा क्यों बंद कर रहा है ? अभी रहने दे।'

'पर मेम साब, रात के बारह बज चुके हैं!'

'हाँ पता है रे! पर रात बीती तो नहीं! अभी उम्मीद बाकी रहने दे।;

मोहन, बेचारा ठहरा नौकर। क्या समझाये मेम साब को कि नहीं लौटने वाला उनका इकलौता बेटा। कोई लौटा है विदेश से? पिछले २० साल से यही इंतजार, यही कथन। मोहन का मन भी साब को गाली देने का करता था। आधुनिकता संस्कारों पर भरी पड़ गयी। आँखें कमजोर हो गयी, पर मेम साब का इंतजार कमजोर न पड़ा।

मोहन की आँखें नम थी। आँसू पोंछते हुए- 'कोई बात नहीं मेम साब! बाद में बंद करता हूँ।'

-- महेश कुमार कुलदीप माही

कल मेरी मौत की उड़ी अफवाह
सारे अखबारों ने सम्पादकीय छापे
सारे चैनल दनदनाते रहे चौबीस घण्टे
बहस, वार्ताओं के दौरों में बड़े बड़े
दिग्गज मेरी मौत पर चिल्लाते रहे
सत्ता के माथे पर चमकी कुछ बूंदे
विपक्ष मामला लपक लेने को बेचैन
आखिर एक 'आम आदमी' की मौत को कैश करना था
तो बहती गंगा में हाथ धोना कौन छोड़े ?
मैंने कहा- 'पर मैं तो जिंदा हूँ'
सबने कहा- 'चुप रहो, तुम अब मृत हो!'
आम आदमी की तो हम कबकी चिता जला चुके
तो मेरी बहुत पहले हो चुकी मौत की उड़ी कल अफवाह

-- डॉ संगीता गाँधी

विकास की छाती पर/रख सिर रोता है पहाड़
न देखे उसकी दरकन/न ही सुने दहाड़
नंगी हो गयी उसकी काया/प्रस्फुटन दबकर सोई
पर्वतो से निकल निकल/नदिया भी बहुत रोई
उसकी गति के रास्ते रोकते किवाड़
न दुर्लभ पथ न बिहड़पन/सुषमा न न्यारी प्यारी
रहा लुभावन अब वो मंजर/रही न मखमली हरियाली
मानवो के लालच ने
सब कुछ दिया बिगाड़
खाली किये पलायन ने
पर्वत के संगीत मारे मारे ढूंढते
इत उत बादल मीत
पहले जैसा न रहा स्रष्टा का वो लाड़

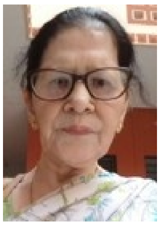

-- सुशीला जोशी

दुनिया के इन सब रिश्तों में
मेरा और तुम्हारा रिश्ता
आखिर कौन-सा है?
पूरी कायनात गवाही देती है
जिसकी वह कौन-सा रिश्ता है
शायद कुछ रिश्ते बेनाम होते हैं
होने भी चाहिए
क्योंकि हर रिश्ते को नाम देना संभव नहीं है
बस मेरा और तुम्हारा यही
बेनाम-सा रिश्ता है!

-- विकास कुमार शर्मा

होते हुए भी हैं कहाँ, हम जहान में रहते कहाँ
देही यहाँ आत्मा वहाँ, बस विचरते यों हीं यहाँ
संस्कार लगभग मिट गये, रिश्ते यहाँ के निभ गये
आकार बस हैं आँख में, उर निराकारी हो गये
छाया सरिस सब लग रहा, माया का मंजर लख रहा
मन तरंगित अब ना रहा, है अँग उसके लग रहा
कोई कहाँ अपना रहा, सपने में सब उलझा रहा
जग जगमगाता जो रहा,
वो उसी का तारा रहा
तरकीब कोई जाना ना,
तरतीब था पाया कहाँ
'मधु' तरन्नुम में मोह कर,
जीवन का रस पाया कहाँ

-- गोपाल बघेल 'मधु'

औरत की किस्मत में कितने गम है
पुरुष कहते यह तो बहुत कम है
औरत की आँखे होती हमेशा नम
पुरुषों को नहीं होता इस पर कोई गम
कहते है यह तो त्रिया चरित्र है
दुःख ही औरत का सच्चा मित्र है
दुःख को सहती जाती रह अडिग
घर सुखमय रहे करती रहती गणित
डिगा नहीं पाता कोई उसका पग
हिम्मत से बढाती हमेशा अपने डग
कितना भी कर ले कोई सितम
नहीं मनाती कभी उसका मातम
दुःख सह और भी परिपक्व हो जाती
ध्येय पर अपने खुद को अडिग ही पाती

-- सविता मिश्रा

जिन्दगी जीने के खेल में/आगे बढ़ने की होड़ में
लौटकर पीछे नहीं देखना चाहता
हर पल अग्रसर रहना चाहता
इसी भाग-दौड़ में भूल जाता है
अपनी शक्तियों का
होने लगता है कमजोर
नहीं चलता उसका जोर
गति रुकने लगती/पीछे खिसकने लगती
नहीं होता सहन/बदलता है अपना रहन
ढूंढता है कहीं शरण/अन्ततः कोई मिल जाता है
शरण दे जाता है/इसी एहसान तले दबकर
मजबूर होकर करने लगता/उसके द्वारा कही
सभी गलत सही/सभी काम मजबूरी में
हर रोज जी हजुरी में/लगा रहता है एहसान तले दबकर
आगे बढ़ने की चाहत में/पुनः वापस लौटकर।

-- रमेश कुमार सिंह 'रुद्र'

परछाइयों तक को अलग कर देती है
रौशनी जब-जब नजर आती है
भिन्न दिखता है हर कोई
अलग रूप दशा आकृति प्रवृत्ति
मैं अंधेरों के गुण गाता हूँ
मेरी परछाईं जो मुझमें समा जाती है
मैं खुद से मिल पाता हूँ
जुगनुओं सा जो जलता हूँ.
एक लौ खुद में जलाये
रुकता हूँ फिर भी चलता हूँ
थोड़ी ठोकर लगती है, थोड़े आंसू बहते हैं
मगर मेरे जख्म सभी से छिपाए रखती है
कभी गिर जाता कभी हार मान लेता हूँ
खुशी है हार अंधेरों में दिखाई नहीं पड़ती
चलता हूँ हर गम भुलाकर, मुस्कुराता सा
हर कदम मस्ती में बढ़ाए जाता हूँ
अंधेरों में हदें दिखाई नहीं पड़तीं

-- आदर्श सिंह

ग़ज़लें

चलो कुछ इस अंदाज में अपनी ये ईद मनाते हैं
बकरे की बलि की जगह रक्तदान करके आते हैं
बलि भी हो जाएगी और ये बकरे भी बच जाएंगे
चलो मिलकर हम एक नई रीत इस बार चलाते हैं
दुआ मिलेगी जब किसी की जिंदगी बचाएगा रक्त
इस ईद पर एक फर्ज इंसानियत का भी निभाते हैं
किसी के लबों पर आए मुस्कान हमारी वजह से
आओ ये सोचकर बुझते हुए चिरागों को जलाते हैं
अल्लाह भी खुश होकर रहमतों की बरसात करेगा
करके रक्तदान ईद पर किसी की जिंदगी बचाते हैं
अल्लाह भी कहता है, खुशियाँ बाँटो तुम हर रोज
जो दें खुशियाँ औरों को
वो ही फरिश्ते कहलाते हैं
रक्तदान करके, अदा करेंगे
ईद की नमाज आज
सुलक्षणा ने समझाया हमें,
हम औरों को समझाते हैं

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

तुम मिले और हम दीवाने हो गए
बागों के मौसम सुहाने हो गए
पत्तियों ने ली हैं अब अंगड़ाइयां
पतझडो के दिन पुराने हो गए
तेरी ही आवाज का जादू है ये
कानों में घुलकर तराने हो गए
तेरे घर आने की इक उम्मीद से
साफ घर के सारे खाने हो गए
हर तरफ चर्चे हमारे इश्क के
कहने को किस्से फंसाने हो गए
उम्र जाते देर लगती है कहां
कल के बच्चे अब सयाने हो गए
बच्चे भी कहते हैं अब तो आजकल
मां-बाप दोनों पुराने हो गए

-- राजेश सिंह

तेरी चाहत को पूजा है, सिर माथे बिठलाया
आँखियों में क्यों नमी तैरती, कोई जान न पाया
सबका अपना अहम बोलता, हम तो यों ही डोलें
वामा तो बस है निरीह सी, बदले में यह पाया
दीवारों में कैद लगे है, अब उड़ान सपनों की
मन का भेदी मेरे मन को, अब तक बांच न पाया
सजधज तो है ऐक दिखावा, बन्धन कसे कसे से
मनवा यहाँ घिरा है ऐसा, बाहर झांक न पाया
जागी जागी सी उम्मीदें, पलकें सजी सजी सी
अधरों पर खामोशी बरबस,
इतना हाथों आया
मुस्कानें मिल जाएं सहज
सी, अपनी चाह निराली
झांकोगे तुम दिल के अन्दर,
सब कुछ हमने पाया

-- बृज व्यास

ब्रिक्स में दिखी भारत की गर्जना

महेश तिवारी

आर्थिक विशेषज्ञों की मानें, तो ब्रिक्स देशों की आतंरिक व आर्थिक स्थिति के आधार पर भारत की स्थिति हर दृष्टिकोण से वर्तमान में सबल नजर आती है। उसके साथ भारत में वर्तमान दौर की विश्व व्यवस्था में सबसे मजबूत जनाधार की लोकतांत्रिक सरकार है। साथ-साथ अगर अर्थव्यवस्था की दिशा में भारत तेजी से बढ़ रहा है, तो विश्व परिदृश्य पर उसकी ताकत का प्रदर्शन बढ़ना अनिवार्य है। आज अगर ब्रिक्स देशों में विश्व की दो तिहाई मानवता समाहित है, तो इन्हें आपसी संवाद, परस्पर चर्चा और साझेदारी के साथ समस्याओं का निराकरण ढूढ़ना होगा। चीन में पाक पोषित आतंकवाद को लेकर जो रुख ब्रिक्स देशों का परिलक्षित हुआ, वह भारत की कूटनीतिक जीत समझा जा सकता है।

यह विश्व इतिहास में पहली बार हुआ है कि चीन के लगातार विरोधी स्वर के बावजूद घोषणा-पत्र में पाक प्रायोजित आतंकी संगठनों की कड़ी निंदा की गई। वह भी ब्रिक्स जैसे बड़े सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय मंच से। अब चीन चाहे आंतरिक अड़ंगे के रूप में जो नीति अपनाए, लेकिन भारत ने ब्रिक्स मंच से आतंकवाद का मुद्दा उठाकर पाकिस्तान और विश्व को यह संदेश देने का काम किया है कि आतंकवाद विश्व के लिए वैश्विक और स्थायी खतरा है, जिसके लिए विश्व को कतारबद्ध होना पड़ेगा। गौर करने वाला विषय ये है कि जिस जैश-ए-मोहम्मद के मुखिया मसूद अजहर पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने की दिशा में चीन अड़ंगा लगाता रहा है, उसे आज भारत ने चीन के घर में रहते हुए आतंकवादी मनाने पर विवश किया।

शियामिन घोषणा-पत्र में लिखा गया कि हम ब्रिक्स देशों समेत पूरी दुनिया में हुए आतंकी हमलों की निंदा करते हैं। इसके साथ सभी प्रकार के आतंकवाद की निंदा करते हैं, चाहे वे कहीं भी घटित हुए हों और उसे किसी ने अंजाम दिया हो। हम क्षेत्र में सुरक्षा के हालात और तालिबान, अल कायदा और उसके सहयोगी हक्कानी नेटवर्क, लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान और हिज्ब-उत-ताहिर द्वारा फैलाई हिंसा की निंदा करते हैं। इसके साथ घोषणापत्र में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की बात की गई।

इसके साथ इस बात का भी जिक्र हुआ कि किसी देश की संप्रभुता का ख्याल रखना होगा, साथ में किसी के अंदरूनी मामलों में दखल नहीं दिया जाना चाहिए। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में हम सब एक साथ हैं। इसके साथ संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ व्यापक संधि को स्वीकार किए जाने के काम में तेजी लाने की बात भी स्वीकार की गई।

देश की राजनीति में मोदी सरकार की आलोचना विपक्ष नोटबंदी जैसे मुद्दों पर कर रहा है। ऐसे में अगर मोदी सरकार की पिछले तीन वर्ष की कमाई गई पूँजी देखें, तो ज्ञात होता है कि सरकार ने कूटनीतिक और अंतरराष्ट्रीय फलक पर जोरदार उपस्थिति दर्ज कराई है। सरकार की उपलब्धियों की तूती इस तरह से बोली है कि अमेरिका और रूस जैसी वैश्विक शक्तियां भारत के साथ सहयोग के लिए तत्पर हैं। भारत की अंतर्राष्ट्रीय फलक पर बढ़ती चमक का उदाहरण एनएसजी में शामिल होने के साथ शुरू हुआ था, लेकिन दुर्भाग्य कि चीन को आजादी के साथ से ही भारत ने अपना मित्र माना। उसने ही समय-समय पर भारत को डंक दिया है। जो वीटो शक्ति चीन को भारत की बदौलत मिली, अगर वह उसी ताकत का इस्तेमाल भारत के साथ कर रहा है, तो यह भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा।

भारत भले अभी तक एनएसजी की सदस्यता न प्राप्त कर सका हो, परन्तु उसने देश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लिए खतरा बन रहे आतंकवाद पर रूस और अमेरिका का समर्थन हासिल कर लिया है। पहले हिजबुल सरगना सैयद सलाहुद्दीन को अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषित किया। इस आदेश के अनुसार ऐसे विदेशी व्यक्तियों को प्रतिबंधित किया जाता है जिन्होंने अमेरिका के खिलाफ कोई अपराध किया होता है या फिर उनके द्वारा ऐसा अपराध करने का अंदेशा होता है। इसके अलावा किसी ऐसी आतंकी गतिविधि में शामिल होना जिनसे अमेरिकी नागरिकों, राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति और अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचता हो। अमेरिका के इस कदम के बाद सलाहुद्दीन और उसके संगठन को मिलने वाली आर्थिक मदद पर सीधा असर पड़ेगा। इसके साथ ही अमेरिका सलाहुद्दीन की संपत्ति और गतिविधियों पर सीधे नियंत्रण रख सकता है। इसके अलावा पाकिस्तान पर अमेरिका का कूटनीतिक दबाव बढ़ेगा। साथ ही पाकिस्तान की सरकार अब सलाहुद्दीन की सीधे पैरवी नहीं कर पाएगी।

इन सबसे साफ है कि आतंकवाद के मुद्दे पर भारत दुनिया के सामने अपना पक्ष रखने में सफल रहा। ब्रिक्स घोषणापत्र में इस बात का भी जिक्र किया गया कि आतंक के खिलाफ दुनिया के सभी देशों को मिल जुलकर लड़ना होगा और यह जिम्मेदारी किसी एक देश की नहीं, सभी देशों की है। चीन के दबे मुँह विरोध के बावजूद शांति के लिए सहयोग जरूरी है और यह आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर ही हासिल हो सकता है। उस पर अभूतपूर्व सफलता मोदी सरकार ने हासिल की है। ब्रिक्स घोषणा पत्र में आतंकवाद से निपटने के लिए तकनीक का प्रयोग के साथ आतंकवाद का विषय शामिल होना मोदी सरकार की जीत है। इस घोषणापत्र में पाक के आतंकी संगठनों लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद की निंदा की गई। इसके अलावा लश्कर और जैश के साथ तहरीक-ए-तालिबान और हक्कानी नेटवर्क जैसे आतंकी संगठनों की भी चर्चा की गई। साथ ही साथ आतंक की फंडिंग पर भी चोट करने की मांग की गई।

इसके पहले अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने अपने वक्तव्य में कहा था कि सितंबर २०१६ में सलाहुद्दीन ने कश्मीर मसले के किसी भी शांतिपूर्ण समाधान की कोशिश को बाधित करने का संकल्प लिया था, अधिक-से-अधिक कश्मीरी युवाओं को आत्मघाती हमलावर बनाने की चेतावनी दी थी और कश्मीर घाटी को भारतीय सुरक्षाबलों की कब्रगाह में तब्दील करने का संकल्प भी लिया था। भारत ने पहले ही मई २०११ में पाकिस्तान को ५० मोस्ट वांटेड लोगों की सूची सौंपी थीं, जिसमें सलाहुद्दीन का नाम भी था। पाकिस्तान जो आतंकवाद को पुष्पित और पल्लवित करने का काम कर रहा है, उसका काला चिठ्ठा खुल चुका है। पाकिस्तान पर अब अंतरराष्ट्रीय बिरादरी का दबाव बढ़ रहा है।

अमेरिका की एक संस्था ने कहा है कि पाकिस्तान अमेरिका के लिए दोस्त से ज्यादा खतरा है। पाकिस्तान एक तरफ अपनी जमीन पर आतंकियों को पालता पोसता है और दूसरी तरफ अमेरिका से आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई के नाम पर अरबों रुपए की मदद लेता रहा है। लेकिन अब पाकिस्तान बेनकाब हो चुका है। आतंक को लेकर उसका असली चेहरा दुनिया के सामने आ चुका है। आतंकवाद के मुद्दे पर ईरान और अफगानिस्तान भी पाकिस्तान को खुली चेतावनी दे चुके हैं। ऐसे में पाकिस्तान पर चौतरफा दबाव बनता जा रहा है। अब देखने वाली बात यह होगी कि वैश्विक वज्र से पाकिस्तान अपने और पाकिस्तानी आतंकवाद को कब तक सुरक्षित रख पाता है। ■

गीत

अब मत करो तैयार सुबह, मम्मी हम स्कूल न जायेंगे
रहते वहां पर गंदे अंकल, जो मुझको बहुत सतायेंगे
भाई के जैसा मित्र प्रद्युम्न, जिसका खूनी खेल हुआ
ग्रीवा काट दिया चाकू से, बदनियती में फेल हुआ
कल कोई मुझको पकड़ेगा, बांहों में कस कर जकड़ेगा
बात न मानू जब उसकी, मां गर्दन पर चाकू रगड़ेगा
मां तू सोई थी मैं जाग रही, डर-डर कर रातें काट रही
गंदे अंकल नजर भयानक, लगता था जैसे ताक रही
मां लड़का नहीं बचा उनसे, मैं प्यारी फूल सी गुड़िया हूं
उनसे बचना तो मुश्किल है, मां तेरी ही तो गुड़िया हूं
मां सजल नेत्र से धो पीड़ा, फिर गले लगा बोली 'वीणा'
ना डर कर जी तू कुकर्मी से, इनसे लड़ने का उठा बीड़ा
तू लड़की है पर दुर्गा बन, चण्डी स्वरूप कन्या बन
तू शीतल है, तू प्रेममयी,
ना डरकर जी, युगदृष्टा बन
तू आंख मिलाकर चल उनसे,
ना कोई कमी तुझमें उनसे
निर्भय रहना, रह सावधान,
तू शक्ती है, ना डर उनसे

-- प्रदीप कुमार तिवारी

जॉनी जॉनी यस पापा...

आनन्द अजय

मुझे नई दिल्ली की सुबह नहीं सोहाती, न शाम, न रात. हर समय गाड़ियों का झुंड, हर ओर कंक्रीट का जाल, चिल्लपों, पां, पी... हर जगह लगा वो विज्ञापन का लंबा चौड़ा बोर्ड भी नहीं रिझाता, जिसमें यमी गौतम और शाहरुख खान फेयर लवली और फेयर हैंडसम बेच के मुंह चमकवा देते हैं। वो डियो का प्रचार कर रहा कच्छे में ६ पैक ऐब्स वाला हीरो और चारों ओर से लिपटती हुई लाल, पियर, चंपई रंग लिपिस्टिक लगाई मोहतरमाएँ भी नहीं सोहाती।

लेकिन जब भी छोटे-छोटे बच्चों को सड़क के किनारे चलते हुए, बस्ते में वजनदार भविष्य और आंखों में कौतूहल लिये, नन्हें-नन्हें पैरों से रोड पर पड़ी हर चीज को मारते हुए, लतियाते और उन वस्तुओं दूर मारकर खुश होते देखता हूँ, तो खुश हो जाता हूं। सीधा फ्लैशबैक होता है और बचपन में चला जाता हूं। याद आने लगता है कि कैसे हम भी मित्रों के साथ एक कलर के शर्ट और एक कलर का पैंट पहने गाँव से तीन किलोमीटर दूर पार्लेंस स्कूल पैदल जाने के लिए रवाना होते थे, मूली, अलुआ उखाड़ना या फिर आम खाने के लिए पत्थर चलाना और उसके बाद बगीचा रक्षकों को चिढाकर भागना, सारी शैतानियां आंख के सामने आने लगती हैं।

छोटे बच्चे चाहे वो बिहार में सुदूर गाँव के किसी स्कूल मे यूरिया और डाप खाद के बोरा बिछाके पढ़ रहा हो या मेट्रो सिटी के ५ स्टार होटल टाईप स्कूलों में, इनके मन कोरे कागज की तरह होते हैं। इन कोरे कागजों पर आप जो लिखना चाहें लिख सकते हैं। इनकी बात ही निराली होती है। खुद ही रूठते और खुद ही मन जाते हैं। जिनसे झगड़ते हैं, उन्हीं के साथ रहते हैं, इनके लिए कोई गैर नहीं, इन्हें किसी से बैर नहीं।

कंधों पर बैग टांगे छोटे-छोटे कदमों से चलते हुए आस-पास लगे बड़े-बड़े बोर्डों पर 'फेयर लवली' के विज्ञापन में सफेद रंग की चमकती-दमकती यमी गौतम और 'रिलैक्सो के चप्पल' के विज्ञापन वाले सलमान खान से ज्यादा इन्हें आकर्षित करता हैं, लगा हुआ आइसक्रीम का चलता फिरता रिक्शा।

ये वीवो और ओप्पो के शोरूम की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखते, लेकिन पास में किसी गोलगप्पे वाले ठेले पर रखी गणेशजी की मूर्तियों को देखते ही इशारा करते हैं- 'अरे, आर्यन, आदित्य, रिया वो देख-माई फ्रेंड गणेशा!' इस पीछे और अगल-बगल देखने और आगे चलने की क्रिया में कभी किसी गड्ढे में गिरते-गिरते बचते हैं तो कभी किसी से टकरा भी जाते हैं फिर मासूमियत से जल्दी बोलते भी हैं- सॉरी अंकल, गणेशा को देख रहा था। फिर अपने घर पहुंचते, फिर अगले दिन तो स्कूल जाना है, मैथ वाला होमवर्क भी करना है, नहीं होमवर्क किया तो मैथ वाली मैम डांटेगी, पेट दर्द का बहाना इस हफ्ते में एकबार कर ही चुका हूं, इसे अब अगले हफ्ते।

परसो भी सुबह वैसे ही हुई थी, जैसे अन्य दिन हुआ करती है, हां सूर्यदेव थोड़ें गरमाए लग रहे थे। मम्मी सो कर उठी, शाम को ही बेटे ने कहा था कि टिफिन में सैंडविच रख देना और हां, कल मेरे क्लासमेट सौरभ का बर्थडे है, चाकलेट भी रख देना।

गंगा-यमुना दोआब के किसानों को जो खुशी अपने खेतों में लहलहाती फसल को देखकर होती है न, मां भी उतनी ही खुशी से अपने बच्चों को तैयार करती है। हर वक्त काजल लगाना चाहती है, ताकि नजर न लगे मेरे लाल को। माँ ने अपने बेटे को तैयार किया, आज फिर वो चांद लग रहा। उसे क्या पता कि आखिरी बार आज वो इसे तैयार कर रही है। पिता ने भी समय पर स्कूल पहुचां दिया, सर चूमते हुए स्कूल गेट पर ड्राप किया। मासूम कंधों पर वजनदार बैग टांगे कक्षा के बजाय बाशरूम की ओर गया है। उस मासूम को क्या पता कि मौत उसका इंतजार कर रही है? अगले ही क्षण बस कंडक्टर, जिसकी यौन इच्छाएँ उस मासूम को देखते ही जाग्रत हो उठीं, अरे इस ७ साल के मासूम को तो गुड टच और बैड टच के बारे में भी नहीं पता। प्रतिरोध स्वरुप जब मासूम चिल्लाया तो उस हैवान ने चाकू से गले पर वार किया। क्या उस राक्षस के हाथ नहीं कांपे होंगे? यमराज भी ऐसे मासूमों का प्राण नहीं लेना चाहता होगा।

२० मिनट बाद ही पिताजी की फोन आया है कि आपका पुत्र जिसे आप अभी-अभी स्कूल छोड़कर गए है, उसका एक्सीडेंट हो गया है। माँ भी रोती-बिलखती हुई आई है, उसकी उम्मीदों की हत्या हो चुकी है। पूरा स्कूल रो रहा है, हत्यारे बस कंडक्टर को तो पुलिस ले गई है, मीडिया की जमात भी उमड़ रही है। दो तीन दिनों तक न्यूज मे छाया रहेगा, फिर सभी भूल जाएंगे। भारतीय न्यायव्यवस्था भी कछुआ की चाल से चलती, गुरुकती हुई १५-२० साल बाद सजा सुनाएगी। लोग तो भूल ही चुके होंगे। परसों से छोटे-छोटे बच्चों की उंगली पकड़े उनकी मम्मियां भी स्कूल छोड़ आया करेंगी।

वाशरुम में चारों ओर खून पसरा है। बैग, बोतल, किताब भी खून से सना हुआ है। हवाओं के वेग से किताबों के पन्ने उलटने लगे हैं। आंसू भरी आंखों से सबकी नजर किताब की ओर गई है। आखिरी पन्ने पर शायद अंग्रेजी की कोई हस्तलिखित पोएम होगी- जॉनी, जॉनी यस पापा...! ■

जल प्रलय बनाम जनप्रतिनिधि

विनोद कुमार विक्की

विगत दिनों जहां बिहार राज्य के आधे जिलों की लाखों आबादी जल प्रलय की त्रासदी से त्राहिमाम थी, वहीं लालटेन की लौ पीड़ित परिवार तक पहुंचने की बजाय एवं 'कृष्ण-अर्जुन की युगल जोड़ी' बाढ़ आपदा राहत में शामिल होने के बजाय 'जनादेश अपमान यात्रा' के तीर्थाटन में लगी थी। बिहार की विपक्षी टीम के भलेमानस नेता लालू काका के फैमिली टीम के नेतृत्व में बाढ़ पीड़ितों को ढूंढने की बजाय टेलीस्कोप से 'सृजन के दुर्जनों' की खोज में लगे हुए थे। ये लोग लगातार सदन का बहिष्कार कर रहे थे एवं इस्तीफे की मांग कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो सीएम एवं डिप्टी सीएम के इस्तीफा देने से राज्य प्राकृतिक आपदा से त्राण पा लेगा और राज्य में नैतिक शासन के सुराज का आगाज हो जाएगा।

जहां जल प्रलय में सैकड़ों लोग अपनी जान गंवा चुके थे और लाखों लोग जिंदगी के लिए संघर्ष कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर सत्तारूढ़ पार्टी जद(यू) के वरिष्ठ बागी चचा शरद यादव एवं नीतीश के खेमों के नेता शक्ति प्रदर्शन कर अपनी-अपनी साख बचाने को संघर्ष कर रहे थे। जहां एक ओर राज्य में बाढ़ जल तांडव कर रहा था वहीं दूसरी ओर नीतीश गुट व शरद गुट के बीच वाक् युद्ध चल रहा था।

एक ओर यूपी, बिहार एवं बंगाल में बाढ़ का प्रकोप चरम पर था और पीड़ितों को अपने जन प्रतिनिधियों से राहत सहायता की आस लगी थी, तो इनके आलाकमान इनकी चिंता करने की बजाय भाजपा से देश को बचाने की चिन्ता में लगे थे। बंगाल की ममता दीदी, यूपी के अखिलेश भैया, जदयू के शरद चचा, बिहार के लालू काका अपने कृष्ण-अर्जुन के साथ गांधी मैदान से भाजपा के विरुद्ध शंख फूंकवा रहे थे। ये सभी राजद के बैनर तले महागठबंधन प्रोडक्शन हाउस में मल्टी पार्टी वाली राजनीतिक फिल्म 'भाजपा भगाओ देश बचाओ' के प्रोमो में व्यस्त थे।

कांग्रेस की गॉड मदर सोनिया काकी भले ही आपदा पीड़ितों के लिए संवेदना व्यक्त करना भूल गई हो किंतु रैली में उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के लिए अपना रिकार्डेड संदेश भिजवाना ना भूली, आखिर बात देश को भाजपा से बचाने की जो थी। तेजप्रताप भैया ने स्वयं को कृष्ण एवं भाई तेजस्वी को अर्जुन बताकर भाजपा के विरुद्ध महाभारत का शंखनाद भी कर डाला। अब इन्हें कौन समझाए कि महाभारत में कौरव सेना कई वीर योद्धाओं का महागठबंधन ही तो था। और इनका हश्र क्या हुआ ये तो सर्वविदित है।

बहरहाल बाढ़पीड़ितों के लिए राहत सामग्री भले ही ना बंटी हो, किंतु इस रैली में शामिल होने वाले

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

दोषी कौन?

अवधेश कुमार 'अवध'

हम मानसिक रूप से आज भी गुलाम हैं और इस गुलामी को बनाये रखने में हमारी असफल शिक्षा व्यवस्था की भूमिका अहम है। वास्तविक रूप से शिक्षित हुए बिना ही कालेजों-विश्वविद्यालयों से डिग्रियाँ मिल जाती हैं और येन-केन-प्रकारेण उच्च पद या उच्च सफलता को हथियाने में सफलता मिल जाती है। कम पढ़े लिखे, असफल या संघर्षमय दौड़ में शामिल न हो सकने वाले लोग तथाकथित सफल एवं उच्च पदस्थ लोगों को अपना आदर्श मान लेते हैं।

आइये, जरा विचार करें। किसी आशाराम, रामपाल या रामरहीम के पास भक्तों की अग्रिम पंक्ति में कौन होते हैं? निस्संदेह हमारा इशारा कुछ डीएम, एस पी, न्यायाधीश, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर, पूँजीपति एव राजनेताओं की ओर होगा। बेचारी जनता जब बाबा के पास ऐसे महाभक्तों को देखती है, तो खुद सोचना छोड़ देती है और आँख बंद करके पीछे लग जाती है, क्योंकि अग्रिम पंक्ति के तथाकथित महान हस्तियों की अंधभक्ति उसके विवेक पर भारी पड़ती है। फलस्वरूप भीड़ बढ़ने लगती है और बाबा के आशीर्वाद की रोचक व चमत्कारी कथाएँ जंगल की आग की तरह फैलने लगती हैं।

फिर तो भक्तों की जमात देखकर बाबा भी खुद को जगद्नियंता समझने लगते हैं। उनकी वाणी ईश्वर इच्छा सी हो जाती है। उनके भक्त बाबा की आलोचना या मूल्यांकन पर मरने-मारने के लिए तत्पर हो जाते हैं। कालान्तर में भक्ति परिवर्तित होते हुए शक्ति बन जाती है। पापलीला का अभ्युदय, बिजनेस की तरक्की और शक्ति प्रदर्शन शुरू हो जाते हैं।

आए दिन कुकुरमुत्तों की भाँति नये-नये बाबाओ के काले कारनामे उजागर होकर नरसंहार होना, महिलाओं की आबरू भंग होना और फिर सलाखों के पीछे पहुँचना आम बात हो गई है। दोगली मीडिया जो पहले बाबाओं के छींकने को भी कवरेज कर रहा होता है, बाद में साँप से भी तेज केचुल बदल लेता है। शासन और प्रशासन के नुमाइंदे यू टर्न ले लेते हैं।

हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये बाबाओं के साथ। किसी अपराधी बाबा को सजा हो जाती है, जेल में रहने लगता है और हम इतिश्री कर लेते हैं। फिर नये बाबा पैदा हो जाते हैं। क्यों होता है ऐसा? नये नये बाबाओं की आपराधिक पापलीला क्यों नहीं रुकती? सबका अंत एक जैसा ही क्यों होता है? आइये विचार करें।

इसके पीछे वही अग्रिम पंक्ति के भक्त हैं। अगर हम इस मसले को लेकर गम्भीर हैं और धर्म के नाम पर पापाचार रोकना चाहते हैं, तो हमें अग्रिम पंक्ति के भक्तों के खिलाफ कठोर कार्यवाही करनी होगी। उनके सर्टिफिकेट को रद्द करना होगा, उनके रजिस्ट्रेशन को अवैध ठहराना होगा, ऐसी मीडिया को बाबाओं के साथ जेल में सहचर बनाना होगा, राजनेताओं को सत्ताच्युत करके चुनाव से प्रतिबंधित करना होगा। सही मायने में तभी ऐसे बाबाओं का अभ्युदय रुक सकेगा। ■

बच्चों की खेल से दूरी क्यों?

देवेन्द्र राज सुथार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में खेल को लेकर आधुनिक पीढ़ी के रवैये पर टिप्पणी की है। उन्होंने कहा है कि एक जमाना था जब मां बेटे कहती थी कि बेटा खेलकर घर वापस कब आओगे, और एक आज का जमाना है जब मां बेटे से कहती है कि बेटा खेलने के लिए घर से कब जाओगे। निश्चित ही बदलते तकनीकी दौर में आज की पीढ़ी का मैदान के खेलों के प्रति अरुचि और मोहभंग होता जा रहा है, जिसे किसी भी हालत में अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसको लेकर प्रधानमंत्री की चिंता वाजिब है।

मैदान के खेलों का महत्व कम होने का एक कारण तो इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (स्मार्ट फोन, मोबाईल, लेपटॉप) इत्यादि के प्रचलन में तीव्रगामी परिवर्तन आना है। आज खेल तो खेले जा रहे हैं, लेकिन केवल मोबाईल और कम्प्यूटर की स्क्रीन पर। दिन-रात बच्चों से लेकर जवान और बूढ़े तक सभी कम्प्यूटर के खेल खेलने में व्यस्त हैं। यह व्यस्तता ऐसी है कि न तो उन्हें अपने खाने का ध्यान और न पीने का। अधिक समय तक अधिक रोशनी वाले उपकरण पर दिमाग खपाने से आंखों की रोशनी पर विपरीत प्रभाव पड़ता जा रहा है। वस्तुतः उम्र से पहले ही आंखों पर चश्मा आना इसी का एक परिणाम समझा जाये। यह भी प्रायः देखा गया है कि मोबाईल के खेल खेलने से अक्सर बच्चे चिढ़चिढ़ेपन से ग्रस्त हो जाते हैं और अकेलापन महसूस करते है। बात-बात पर आक्रोश की मुद्रा धारण करना और नकारात्मक हो जाना इसी का दुष्परिणाम है।

मैदान के खेलों का क्रेज खत्म होने का दूसरा कारण खेल मैदानों की निरंतर कमी होना है। भौतिकवादी सुविधाओं के मोह में मैदानों की जगह दस-बारह मंजिल की अट्टालिकाओं का निर्माण किया जाने लगा है। गांव में तो आज भी खुली जगह बच्चों को खेलने के लिए आमंत्रण देती है, लेकिन शहर की घुटन भरी जिंदगी में निकटवर्ती कोई मैदान बच्चों के खेलने के लिए सुरक्षित नहीं रहा है। इसके कारण बच्चे खाली समय में बोरियत कम करने के लिए अनायास ही मोबाईल और कम्प्यूटर के खेलों के प्रति आकर्षित होते जा रहे हैं।

तीसरा कारण यह भी है कि हमारे समाज में अक्सर बड़े-बुजुर्गो के मुंह से कहावत सुनने को मिलती है कि 'खेलोगे कूदोगे तो होगे खराब और पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब'। ऐसी कहावत बच्चों को केवल किताबों तक ही संकुचित करती है। पढ़ाई के साथ खेल भी बहुत ही जरूरी है। मानव मस्तिष्क एक हद तक ही पढ़ाई कर सकता है। मन को हरा-भरा रखने और शरीर को तरोताजा करने के लिए खेल खेलना भी अति आवश्यक है।

चौथा कारण है अभिभावक के पास समय का अभाव होना। रोजमर्रा की जिंदगी में धनार्जन करने की प्रवृत्ति ने हर किसी को व्यस्त कर दिया है। दूसरों के लिए तो छोड़िए, स्वयं और परिवार के लिए भी समय निकालना व्यक्ति के लिए दूभर होता जा रहा है। ऐसे में आज के मासूमों को कौन बचपन के खेल (डब्बा स्पाइस, सतोलिया, लुका छिपी, लगंड़ी, कबड्डी, खो-खो) इत्यादि के बारे में बतायेगा, जिससे मासूम मन में इन खेलों को खेलने की जिज्ञासा और चाह उत्पन्न हो सके?

बेशक, कुछ गलतियां तो अभिभावक की भी है जिन्हें समय रहते सुधारा जा सकता है। अगर समय रहते हम बालमन के मनोवैज्ञानिकता को लेकर सचेत नहीं हुए तो ब्लू व्हेल नामक खूनी खेल हमारे देश के नौनिहालों की जान के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे। आज जरूरत है कि मैदान के खेलों के प्रति बाल और युवा पीढ़ी का ध्यान आकर्षित किया जाये। उन्हें बताया जायें कि मोबाईल और कम्प्यूटर पर क्रिकेट खेलने से कई गुना अधिक मजा मैदान में जाकर क्रिकेट खेलने से है।

भारत सदैव से ही खेल परंपरा का संवाहक रहा है। यहां मिल्खा सिंह से लेकर मेजर ध्यानचंद जैसे हॉकी के जादूगर ने जन्म लिया है। सचिन से लेकर साइना तक और मिताली से लेकर कृष्णा पूनिया तक के खिलाड़ियों ने दमखम के साथ विश्वपटल पर तिरंगे का नाम ऊंचा किया है। आज इन्हीं सबसे प्रेरणा लेकर बच्चों में खेलों के प्रति उत्साह और आशा का माहौल बनाने की जरूरत है, क्योंकि देश की एकता को बरकरार रखने के लिए भाईचारे, प्रेम और मैत्री की भावना खेलों से ही विकसित की जा सकती है। ■

(पृष्ठ ८ का शेष)**खोदा पहाड़ निकली...**

कोई दो राय नहीं कि बाबा राम रहीम बलात्कारी, ढोंगी और अपराधी है, लेकिन इसमें भी कोई शक नहीं कि उसकी पहुंच ऊंचे अधिकारियों और राजनीतिक गलियारे तक है। सिरसा की इस घटना ने हरियाणा सरकार की छवि धूमिल की है। मुख्यमंत्री खट्टर भाजपा शासित राज्यों के सबसे कमजोर मुख्यमंत्री सिद्ध हुए हैं। सरकार की लापरवाही और बाबा से मिलीभगत के लिए हरियाणा सरकार पर भी मुकदमा चलना चाहिए। ■

विश्वविद्यालयों को अशांत करने की राजनीति

मृत्युंजय दीक्षित

देश के विश्वविद्यालय एक बार फिर अशांत हो रहे हैं। ये अशांत हो रहे हैं या किये जा रहे हैं, यह तो जांच का विषय है, लेकिन हालात वास्तव में चिंताजनक हो गये हैं जिसकी हानि सत्ता समर्थक विद्यार्थी परिषद को उठानी पड़ रही है। चुनावों में हार-जीत तो लगी रहती है, लेकिन आजकल भारत में एक विचित्र बात यह हो गयी है कि भारत के किसी भी कोने में यदि कोई भी चुनाव हो रहा होता है तो उसके परिणामों को मोदी सरकार व राज्य सरकार की लोकप्रियता से जोड़कर देखा जाता है तथा फिर सभी दल उसी आधार पर आगे की रणनीति तय करने के लिए जुट जाते हैं।

अभी हाल ही में देश के कई विश्वविद्यालयों व डिग्री कालेजों में छात्रसंघ चुनाव हुए जिसमें भाजपा व संघ समर्थित विद्यार्थी परिषद को पराजय का सामना करना पड़ा है। राजस्थान, असम, जेएनयू, दिल्ली तथा हैदराबाद विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी परिषद की पराजय से विरोधी छात्र संगठनों के हौसले बुलंद हो गये हैं। अब ये ही लोग देश के अन्य विश्वविद्यालयों को भी फतह करने के लिए राजनैतिक ताना-बाना बुनने लगे हैं।

विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी परिषद की पराजय को धर्मनिरपेक्ष छात्र संगठन व तथाकथित सेकुलर मीडिया ने अपने हिसाब से जनता के बीच सुर्खियां बनाकर परोसा है। जेएनयू में कम्युनिस्टों की जीत व उसके बाद दिल्ली विवि में दो पदों पर कांग्रेस समर्थित उम्मीदवारों की जीत से कांग्रेस व अन्य दलों का मनोबल बढ़ना स्वाभाविक ही था। यह वही जेएनयू है जहां कम्युनिस्टों ने "हमें चाहिए आजादी" के नारे लगाये थे और देशभर के विश्वविद्यालयों का वातावरण अशांत किया था। सभी मोदी विरोधी दलों व नेताओं ने इन नारों का समर्थन करके अपनी राजनैतिक गोंटियां सेंक ली थीं।

विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी परिषद की पराजय से सेकुलर खेमे को राहत की सांस ही नहीं मिल रही है अपितु यह बल भी मिल रहा है कि २०१८ के लोकसभा चुनावों में ये ही छात्र उनकी नैया पार लगा सकते हैं। पीएम नरेंद्र मोदी अपने हर भाषण में युवाओं का उल्लेख अवश्य करते हैं। युवाओं के विकास के लिए नित नये आयाम पेश कर रहे हैं तथा स्किल इंडिया जैसे कार्यक्रमों व अन्य योजनाओं का बखान कर रहे हैं। लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा है कि विश्वविद्यालय के युवाओं को उनके कार्यक्रम पसंद नहीं आ रहे हैं या फिर राष्ट्रवाद की हाईडोज छात्र समुदाय को पसंद नहीं आ रही है। यह भी हो सकता है कि सत्ता में रहने के कारण छात्रों के बीच विद्यार्थी परिषद के छात्रों के बीच जो जुझारू तेवर होते थे वह अहंकार व गुंडई के कारण गायब हो गये हों। ऐसा नहीं है कि विद्यार्थी परिषद का हर छात्र नेता साफ सुथरे व राष्ट्रवादी चरित्र का है।

विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी परिषद की पराजय को हलके में नहीं लिया जा सकता, क्योंकि अब भाजपा विरोधी दलों ने इन्हीं चुनाव परिणामों के सहारे आगे की रणनीति का ताना बाना बुनना शुरू कर दिया है। सोशल मीडिया व टी वी चैनलों में इस बात की खूब चर्चा की गयी। जेएनयू व दिल्ली में विद्यार्थी परिषद की पराजय के बाद विश्वविद्यालयों व भाजपा विरोधी मीडिया में ऐसा जश्न मनाया गया जैसे कि इन लोगों ने मोदी की सत्ता को उखाड़कर फेंक दिया हो।

अब इन दलों के छात्र संगठनों ने उप्र में भी छात्र संघ चुनाव कराने के लिए आंदोलन छेड़ दिया है। बसपा नेत्री मायावती ने देश के कई विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी परिषद की पराजय को देश में राजनैतिक बदलाव का शुभ संकेत बताया है। उन्होंने कहा कि अब जनता भाजपा नेताओं को उनके बुरे दिन दिखाने का मन बना रही है। उन्होंने यहां तक कहा कि हैदराबाद में विद्यार्थी परषिद की हार वास्तव में दलित छात्र रोहित वेमुला को सच्ची श्रद्धांजलि है। इससे साफ है कि अब सभी दल छात्रों के कंधे पर बंदूक रखकर अपनी राजनीति साधने का काम कर रहे हैं। वेमुला प्रकरण पर केंद्र सरकार ने जो जांच आयोग बिठाया था उसकी रिपोर्ट आ चुकी है लेकिन हैदराबाद में छात्रसंघ चुनावों के दौरान विद्यार्थी परिषद उस आयोग की रिपोर्ट को अपने हित में भुनाने में नाकाम रही। इस समय विद्यार्थी परिषद गहरे दबाव में है। कई विश्वविद्यालयों में परिषद को हराने के लिए राष्ट्रीय राजनीति की तर्ज पर गठबंधन भी किये जा रहे हैं। आज विश्वविद्यालयों में कोई भी छोटी-मोटी घटना घट जाती है तो उसे कम्युनिस्ट तथा अन्य सेकुलर छात्र संगठन अपने हित में साधने के लिए लग जाते हैं।

हाल ही में काशी विश्वविद्यालय में एक छात्रा के साथ छेड़छाड़ की शर्मनाक घटना घटी, लेकिन प्रशासनिक लापरवाही के कारण यह घटना बेहद बड़ी होती गयी और इस घटना की आड़ में अन्य दलों ने अपनी राजनैतिक रोटियां भी सेंकनी प्रारम्भ कर दीं। अब यह साफ हो गया है कि बीएचयू की घटना के लिए वहां का प्रशासन दोषी है। वहां लापरवाह अधिकारियों पर कार्यवाही भी की जा रही है तथा पीएम मोदी का संसदीय क्षेत्र होने के कारण केंद्र सरकार व मुख्यमंत्री योगी कड़े तेवरों के साथ घटना पर नजर रखे हैं।

बीएचयू की घटना ने कई प्रश्नचिन्ह भी खड़े कर दिये है कि आखिर जिस प्रदेश का मुख्यमंत्री इतने सख्त तेवर कानून व्यवस्था के प्रति अपना रखे हों, उस समय बीएचयू जैसे विश्वविद्यालय में छात्रा के साथ छेड़छाड़ की जाती है, शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं की जाती तथा उसके बाद छात्रायें अपनी सुरक्षा की मांगों के साथ धरने पर बैठ जाती हैं। इस बीच घटनाक्रम तेजी से घूमता है और पीएम मोदी के दौरे के समय ही छात्राओं पर लाठीचार्ज कर दिया जाता है, जिसके बाद वहां पर हिंसा और आगजनी हो जाती है।

लेकिन इस बीच धरने पर बैठी छात्राओं को यह बात भी समझ में आ जाती है कि उनके आंदोलन को बाहर से अराजक तत्वों ने हाइजैक कर लिया और हिंसा व उपद्रव करके बीएचयू की अस्मिता को तार-तार कर दिया। बीएचयू का घटनाक्रम जिस तरह से चला वह पूरी तरह से पहले तो सुनियोजित प्रतीत हुआ लेकिन विश्वविद्यालय प्रशासन पूरी तरह से लापरवाह था। यदि कुलपति या कोई अन्य अधिकारी छात्राओं से धरनास्थल पर आकर बात कर लेता तो यह मामला इतना न बिगड़ता। फिलहाल बीएचयू की घटना से विरोधी दलों के हौसले एक बार फिर बुलंद हो गये है तथा योगी सरकार की कार्यक्षमता पर सवालिया निशान उठा रहे हैं तथा अब बीकएचयू की घटना को पूरे प्रदेश ही नहीं अपितु दूसरे प्रदेशों में भी भुनाने की तैयारी कर ली है।

इस बीच विश्वविद्यालयों में नकरात्मक राजनीति की धारा बहाने वाले राजनैतिक दलों की इकाईयां अब विद्यार्थी परिषद को हराने के लिए गठबंधन की राजनीति का सहारा लेने लगी हैं। आगामी छात्रसंघ चुनावों में बीएचयू एक मुख्य मुद्दा बनेगा तथा गठबंधन करके विद्यार्थी परिषद को पराजित करने के बाद केंद्र में मोदी सरकार के खिलाफ एक वातावरण बनाने की साजिशें रची जायेंगी। अब विरोधी दल इस घटना को गोरखपुर में बच्चों की मौत की तरह उप्र के उपचुनावों में मुद्दा बनायेंगे। इसलिए अब सभी विश्वविद्यालयों को हाई एलर्ट कर दिया गया है कि छात्रसंघ चुनाव कराने की मांग की आढ़ में कोई नया उपद्रव न हो जाये।

यह बात भी कुछ हद तक साफ हो गई है कि पीएम मोदी के न्यू इंडिया मिशन व विकास के मुद्दे को बेपटरी करने के लिए छात्रों के कंधे पर बंदूक रखकर राजनीति हो रही है। इन्हीं दलों ने किसानों के हित के खूब मुद्दे उठाये थे लेकिन सफलता नहीं मिली, अब नोटबंदी व बेनामी संपत्ति के खिलाफ कार्यवाही से परेशान लोगों ने विश्वविद्यालयों को राजनीति का अखाड़ा बना लिया है। बेरोजगारी का लाभ उठाकर छात्रों को अशांत किया जा रहा है। इन दलों के पास और कोई मुद्दा नहीं है, इसलिए छेड़छाड़ को ही मुद्दा बना लिया।

विश्वविद्यालयों तथा लड़कियों के डिग्री कालेजों के बाहर पिछली सरकारों के समय में छेड़छाड़ की घटनायें आम थीं, लेकिन तब मीडिया व अन्य लोग इतना हल्ला नहीं मचाते थे। क्यों? कहीं यह योगी सरकार की परीक्षा लेने के लिए शातिर लोगों ने फंडिंग के सहारे साजिश तो नहीं रच डाली और लापरवाही के कारण वह साजिश सफल हो गयी, जिसे अब विरोधी दलों ने अपना मुद्दा बना लिया है। इसलिए विश्वविद्यालयों में घट रही घटनाओं की काफी गहराई के साथ न्यायिक जांच की आवश्यकता है और यूपी सरकार ने इस पर त्वरित कार्यवाही की है वह प्रशंसनीय है। ■

(दूसरी और अंतिम किस्त)

संन्यास

नीतू सिंह

उसे इस समय सुनैना की बहुत याद आ रही थी। वह उसकी सीमित आय में किसी तरह घर को ठेल-ठालकर चला रही थी। जब और पैसे कमाने के लिए वह जोर देती, तो वह खीझ जाता था। जब उसके घर की तंग हालत पर उसके अड़ोस-पड़ोस से भी सुनने को मिलने लगा तो वह और तंग आ गया। उसे लगा हो न हो सुनैना जगह-जगह उसकी घर न चला पाने की असमर्थता का प्रदर्शन कर रही है।

उफ! लेकिन आज से ज्यादा असहाय और असमर्थ तो वह कभी न था। वह तो अकेलेपन का स्वाद उठाने आया था, जब सभी जिम्मेदारियों से मुक्त हो। मगर अब वह किसी के सामीप्य के लिए तरस रहा है। वह प्रतीक्षा कर रहा है उस धर्मगुरु की जो अभी थोड़ी देर में यहाँ से गुजरेंगे।

धर्मगुरु आए, साथ में सब चेले-चपाटे भी आए। उसने चैन की साँस ली कि अब वह अवश्य बच जाएगा। उसने पूरा दम लगाकर 'पानी-पानी' की गुहार लगाई। पर फुसफुसाने से ज्यादा कुछ न कर सका। मगर गनीमत कि उसकी फुसफुसाहट सुन ली गई।

'गुरुदेव! एक घायल व्यक्ति वहाँ पड़ा पानी के लिए पुकार रहा है।' सबने करीब जाकर देखा। गुरुदेव के आदेश से एक अनुयायी उसे पानी पिलाने के लिए कमंडल नीचे करते हुए झुका।

'अपना कमंडल संभालो, चिदानंद। उसे छुआकर कमंडल अपवित्र मत करो। यह पूजा का पात्र है। ऊपर से ही जल गिराओ।'

उस एक क्षण के लिए घायल अवस्था में भी उसके शरीर का एक-एक रोयां काँप उठा कि क्या वो इसी प्रकार के जीवन का वरण करने घर से निकला था।

अभी चिदानंद ने कमंडल से जल गिराना शुरु ही किया था कि लगभग गरजते हुए से गुरू बोले- 'ठहरो! इसकी कोई मदद न की जाए। पंद्रह दिन पहले श्री जी की मूर्ति चुराने वाला चोर यही है। इसे ईश्वर इसके पापों का दंड दे रहा है। दूर हट जाओ सभी और ईश्वर के विधान में हस्तक्षेप न करो।'

अभी कमंडल से एक बूँद भी नहीं गिरी थी और कमंडल वापस उठा लिया गया। सभी स्तब्ध हो अपने गुरू के चमत्कार को देख रहे थे। तभी एक शिष्य ने उनकी महिमा का मंडन किया, 'गुरुदेव को क्या दिव्य दृष्टि प्राप्त है। जय हो! जय हो! इस चोर की दाढ़ी देखकर पता चलता है कि पंद्रह दिन पुरानी है।' अब वह घायल अवस्था में भी अपने ही ऊपर खीझ गया कि घर त्यागने से पहले उसने दाढ़ी क्यों नहीं बनाई।

गुरु की जय-जयकार करते हुए वह झुंड वहाँ से चलता बना। इस बार किसी ने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। देखते भी कैसे, सबको जल्द से जल्द पहुँचकर संध्यावंदन करना था, नहीं तो आज की पूजा में विघ्न पड़ जाता जो नियम के विरुद्ध था।

उसने सारी उम्मीद छोड़कर अपने आप को दर्द के हवाले कर दिया और शीघ्र ही अर्धमूर्च्छित अवस्था से पूर्णमूर्च्छित अवस्था को प्राप्त हो गया।

उस अवस्था में जहाँ-कहीं उसकी चेतना जागती थी, उसे आभास हो रहा था कि किसी ने उसका हाथ खींचा था। उसके हाथ के बल थोड़े देर के लिए पूरा शरीर था और फिर लगभग शून्य में तैरता हुआ उसका शरीर किसी अन्य शरीर से चिपक गया था।

उसने जब आँखें खोलीं, तो उसके ऊपर किसी मढ़ैया की छत थी। उसने दाएं-बाएं सिर हिलाया, तो अपने को एक सुतली की खटिया पर लेटा पाया। उसने उठने का प्रयास किया, तो पैरों में फिर टीस उठी और उठ न पाया। उसकी दृष्टि अपने पैरों पर गई। उसके पैरों पर चारों ओर बाँस के डंडे लगाए गए थे और डंडों के भीतर केले के पत्ते साफ नजर आ रहे थे। पत्तों के भीतर कोई ठंडा-ठंडा लेप लगाया गया था, जिसकी ठंडक उसके सूजे पैरों में महसूस हो रही थी।

उसके सिरहाने कहीं चूल्हा जल रहा था, जहाँ से 'नहीं-नहीं उठना नहीं' कहती हुई एक काली-सी पसीने से लथपथ औरत उसकी ओर दौड़ी आई।

उस औरत को देख एक पल के लिए वह डर गया। बिना ब्लाउस की मैली-कुचौली साड़ी लिपटी उस औरत के शरीर में केवल सफेद दाँत ही चमक रहे थे और बाकी सब अंधकार में विलीन लगता था। मगर उसकी ममतामय आँखों को देखकर वह थोड़ा आश्वस्त हुआ। 'उठना नहीं। नहीं तो पैर का सब मरम्मत टूट जाएगा।'

इतने में उस झोंपडी में एक उतने ही काले आदमी ने सिर पर लकड़ियों का ढेर-सा गठ्ठर और दूसरे हाथ में कुल्हाड़ी लेकर प्रवेश किया। उसने झोंपड़ी के एक कोने में गठ्ठर फेंककर इन दोनों को देखा और चारपाई के करीब आ गया। एक मचिया पास खींचते हुए वह लकड़हारा चारपाई के करीब बैठ गया। 'होश आ गया साहब को तो चावल का पानी पिलाओ।'

'हाँ हाँ। अभी लाई।'

फिर वो लकड़हारा उससे बातें करने की कोशिश करने लगा। 'वो तो अच्छा हुआ कि लकड़ी काटने में मुझे देरी हो गई, तो आप मिल गया। नहीं तो उधर पड़ा-पड़ा तो आपको कोई जानवर खा जाता रात में।'

वह टुकुर-टुकुर लकड़हारे को देख रहा था। बोलने की कोशिश की तो सूखे होंठ हिलकर रह गए।

'आप आराम करो साहब। अभी तो ठीक होने में आपको बहुत समय लगेगा। अभी तो चार दिन के बाद होश आया है।' वह भीतर ही भीतर बुदबुदाया 'चार दिन! वह चार दिन से पड़ा है और उसे होश ही नहीं।'

इतने में दो बच्चे उछलते-कूदते उसकी खाट के करीब आए। छोटे लड़के ने उसे और करीब आकर देखा और आँखें खुली देखकर अपने पिता से सवाल किया। 'ये लंगड़े आदमी को होश आ गया बाबा?'

लकड़हारे ने गुस्से से थप्पड़ दिखाते हुए उसे डाँटा, 'अभी थप्पड़ दूँगा कसकर। ऐसे बात नहीं करना।' बच्चा सहम गया और धीरे से खाट के करीब आकर बोला 'आपको चोट लगी है न। कोई बात नहीं। सब ठीक हो जाएगा। मेरे बाबा सब ठीक कर देंगे। मेरे बाबा को सब कुछ आता है।'

उसे अपने बच्चों की याद आ गई। यों ही घर पर जब बच्चों की बातें सुनता था, खासकर छोटे वाले की, तो हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाया करता था। घर में बच्चों के कारण ऐसी रौनक होती थी कि कभी-कभी वह कहीं चले जाने का ख्याल भी भूल जाया करता था।

एक बार उसे किसी रिश्तेदार की बारात में दो दिनों के लिए जाना था, तो बच्चे छोड़ ही नहीं रहे थे। बड़ी मुश्किल से खिलौने और मिठाइयों का झूठा वादा किया, तो माने। वापस आने पर पता चला कि उसकी उपस्थिति में दो दिन से ऐसे शांत बैठे हैं कि खाना-पीना त्याग दिया है। वापस लौटने पर बच्चे इतने खुश हुए कि खिलौने और मिठाइयों के उसके वादे को भी भूल गए।

जाने अब बच्चे क्या कर रहे होंगे? सुनैना उन्हें क्या-क्या भुलावा देकर मना रही होगी? मन में एक टीस उठी और पैरों में भी।

उसने अपने आप को उस लकड़हारे और उसकी पत्नी की दया पर छोड़ दिया। उस दंपति ने बड़े ही मनोयोग से उसकी सेवा की। उनके आपस के तालमेल को देखकर उसे दांपत्य जीवन के सुख की अनुभूति हो आती थी। उसे लगा यही जीवन है। परमार्थ के कारण साधु-संत शरीर धरते हैं परंतु आज तक उन्हें सेवा करते नहीं, लेते ही देखा है। असली सेवा तो पारिवारिक जन उनकी करते हैं और ये उनसे लेते हैं।

वह चाहता था कि दान-दक्षिणा के असली पात्र तो ये दंपति हैं, उन्हें कुछ दे। मगर उल्टा उसे ही उनसे लेना पड़ा ताकि वह घर लौटते समय खिलौने-मिठाइयां ले सके। कुछ ही दिनों में वह आस-पास में चलने-फिरने लायक हो गया। वह जल्द से जल्द घर जाने को उतावला हो रहा था। मगर उस दंपति ने उसे पूरी तरह ठीक होने पर ही विदा किया।

(समाप्त)

(पृष्ठ ३२ का शेष)

विचार गोष्ठी

मनीषियों को याद करते हुए कहा कि आज उन्हीं के कारण संस्कृत के बाद यदि कोई भाषा विश्वगुरु के रूप में स्थापित होने योग्य है, तो वह मात्र हिन्दी है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए एकेडमी के प्रमुख सुधीर भारद्वाज ने कहा कि विश्व के १३६ देशों में हिन्दी का व्यवहार तथा ६६ देशों में अध्ययन-अध्यापन होता है। धन्यवाद ज्ञापन एकेडमी की निदेशक श्रीमती मनीषा भारद्वाज द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं व गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। ■

जय हिंदी, जय भारत

प्रिय बच्चो,

जय हिंदी, जय भारत!

कविता लिखना सीखने के इस क्रम में हम आपको अनेक विषयों पर कविता लिखना सिखाते हैं. आज हिंदी दिवस है. आप जानते हैं, कि १५ अगस्त १९४७ को देश आजाद हुआ तो देश के सामने भाषा का सवाल एक बड़ा सवाल था. भारत जैसे विशाल देश में सैकड़ों भाषाएं और हजारों बोलियां थीं. १४ सितंबर १९४९ को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को अंग्रेजी के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया था. बाद में भारत सरकार ने इस ऐतिहासिक दिन के महत्व को देखते हुए हर साल १४ सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया.

पहला आधिकारिक हिंदी दिवस १४ सितंबर १९५३ को मनाया गया. हिंदी दिवस के उपलक्ष में आपके समक्ष हम हिंदी में हिंदी व देश के नाम कुछ संदेश लिखना सिखा रहे हैं. ऐसे छोटे-छोटे संदेश या नारे आप भी लिख सकते हैं. कोशिश करके देखिए.

१. हिंदी भाषा देश की शान, इससे भारत बने महान
अपनी भाषा अपनाएं तो, बढ़े देश का मान-सम्मान
२. सद्भावना जीवन सार बने, हर मानव का श्रृंगार बने
सद्भावना से कायम धरती, धरती पर क्यों भार बनें?
३. भेदभाव की कारा तोड़ो, भारत जोड़ो, भारत जोड़ो
४. वैर-भाव को दूर हटाकर, प्रेम का अलख जगाएंगे
भारत मां, हम तेरे बच्चे, देश की शान बढ़ाएंगे
५. हिंदी भाषा अपनी भाषा, जीवन को दिखलाती आशा
हिंदी को अपनाकर हम सब, इसको आगे बढ़ाएंगे

आपकी नानी-दादी-मम्मी जैसी

-- लीला तिवानी

बाल कविताएं

फूलों पर मंडराती तितली, चंचल पंख हिलाती तितली
डाल-डाल पर फूल-फूल पर
है देखो इठलाती तितली
फूलों का मकरन्द चूसकर
चंचल पंख हिलाती तितली
रंग भरे परिधान पहनकर
बगिया में है आती तितली।

-- शशांक मिश्र भारती

छूमन्तर मैं कहूँ और फिर, जो चाहूँ बन जाऊँ
काश, कभी पाशा अंकल सा, जादू मैं कर पाऊँ
हाथी को मैं कर दूँ गायब, चींटी उसे बनाऊँ
मछली में दो पंख लगाकर, नभ में उसे उड़ाऊँ
और कभी खुद चिड़िया बनकर, फुदक-फुदक उड़ जाऊँ
रंग-बिरंगी तितली बनकर, फूली नहीं समाऊँ
प्यारी कोयल बनकर कुहकूँ, गीत मधुर मैं गाऊँ
बन जाऊँ मैं मोर और फिर, नाँचूं, मेघ बुलाऊँ
चाँद सितारों के संग खेलूँ, घर पर उन्हें बुलाऊँ
सूरज दादा के पग छूकर, धन्य-धन्य हो जाऊँ
अपने घर को, गली नगर को, कचरा-मुक्त बनाऊँ
पर्यावरण शुद्ध करने को, अनगिन वृक्ष लगाऊँ
गंगा की अविरल धारा को, पल में स्वच्छ बनाऊँ
हरी-भरी धरती हो जाए,
चुटकी अगर बजाऊँ
पर जादू तो केवल धोखा,
कैसे सच कर पाऊँ
अपने मन की व्यथा-कथा
को, कैसे किसे सुनाऊँ

-- आनन्द विश्वास

लघुकथाएँ

एक ही तरीका

'आपका बच्चा क्लासरूम में पढाई पर ध्यान ही नहीं देता, मैथ का एक क्वेश्चन सेम तरह से कई बार समझाया पर समझ में ही नहीं आता इसके, या यूँ कहें कि ध्यान नहीं देता ये।'

'जब एक ही तरीके से समझ में आना होता, तो पहली बार में ही समझ में आ जाता। बार-बार समझाने की जरूरत ही नहीं पड़ती।' कुशाग्र की मां बोली।

'मतलब हम लोग पढ़ाना नहीं जानते।' इस बार टीचर चिढ़ गई।

'मैंने ये कब कहा? जिस राह पर चलकर मंजिल न मिले, तो दूसरी राह पकड़ लेते हैं। एक तरीके से नहीं समझे, तो तरीका बदलकर समझाते हैं।' अभी तक वह कड़क टीचर सुनाने के लिए प्रसिद्ध थी। आज दांव उल्टा था।

-- रजनी विलगैयां

राहत

माँ बेटी रोशनी को बाजार से सामान खरीदने को साथ ले गई। माँ राशन का सामान लेने लगी, बेटी किताबें और कापियां देख उलट-पलट करने लगी। माँ ने डाँटा, 'तू जल्दी कर! तुझे इन किताबों से क्या लेना-देना? लोगों के घर में काम करना है। तुम झाडू लगाना, मैं बर्तन कर लूंगी। काम जल्दी खत्म कर घर चलेंगे।'

बेटी रोशनी, 'माँ आंगन बाड़ी की मैडम मुझे मुफ्त में किताबें और कापी कल दे देंगी।' माँ घूर के बोली, 'तू खाना खाने जाती हैं या पढ़ाई करने, हमारे काम जरूरी है। कलम पकड़ के तू क्या करेगी?'

बेटी रोशनी, 'नौकरी करके तुझे राहत, झूठन सफाई से निजात।'

-- रेखा मोहन

बाल कविताएं

बादल मचा रहे हैं शोर, नाच रहा जंगल में मोर
बहुत डराते काले बादल, लेकिन मोर हुए हैं पागल
बदरा आये साँझ-सकारे, मोर झूमते पंख पसारे
पिहू-पिहू की भाषा बोलें, राज प्रेम के अपने खोलें
देख मोरनी हर्षित होती, आपा-धापा अपना खोती
मन में है बस यही पिपासा, कभी न जाये अब चौमासा
देते मोर यही सन्देशा, हरा-भरा हो देश हमेशा
चातक कभी रहे ना प्यासा,
पूरी हों सबकी अभिलाषा
चारों ओर रहे हरियाली,
जन-जीवन में हो खुशहाली
मिलकर खुशियाँ सभी मनायें,
लोग हमेशा नाचें-गायें

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

चुन्नू मुन्नू पढ़ने जाते, रोज रोज वे उधम मचाते
मम्मी पापा जब समझाते, सुन कर भूल दुबारा जाते
एक दिन एक सिपाही आया, मुन्नू को तब बहुत डराया
चुन्नू उसके अब घबराया, उसने फिर न उधम मचाया

चंदा के घर जाऊंगा
किसी को नहीं ले जाऊंगा
खूब मजे उड़ाऊंगा
गगन घूमके आऊंगा
चंदा संग सो जाऊंगा
सूरज संग उठ जाऊंगा
तारों संग खुशी मनाऊंगा
फिर घूम धरा पर आऊंगा

-- भारत विनय

शिशु गीत

१. मुखौटे

बंदर, भालू और सियार, पुलिस, सिपाही, चौकीदार
जो चाहें बन जाएँ आप, पहन मुखौटे तो लें यार

२. चश्मा

मेले में से चश्मा लाया, आँखों पर जब आज चढ़ाया
वाह-वाह सबने ही बोला, लाल फ्रेम मुखड़े पर भाया

३. सैनिक

सैनिक सबकी रक्षा करते, नहीं किसी से हैं वे डरते
देश हमारा उनके दम पर, नमन उन्हें हम सब हैं करते

४. चौकीदार

दरवाजे पर चौकीदार, पल-पल रहता वो तैयार
घुसे न कोई ऐरा-गैरा, बस मालिक का हो अधिकार

५. पुलिस

सायरन जब-जब पुलिस बजाती,
चोरों की टोली घबराती
इधर-उधर वे भागे फिरते,
पकड़ उन्हें लेकिन ले जाती

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल साहित्य कैसा हो?

विजय कुमार सिंघल

अनुभवी अध्यापक लोग बताते हैं कि बी.ए., एम.ए. आदि ऊँची कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाना सरल है लेकिन कक्षा १ से ५ तक के बच्चों को पढ़ाना बहुत कठिन है। ठीक यही बात साहित्य के विषय में कही जा सकती है कि वयस्कों और प्रौढ़ों के लिए साहित्य रचना सरल है, उसकी अपेक्षा बाल साहित्य रचना कठिन है। यही कारण है कि सामान्य साहित्यकारों की संख्या जहाँ हजारों और लाखों में है, वहीं बाल साहित्यकारों की संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है।

इसका कारण यह है कि बच्चों के लिए साहित्य रचते समय हमें स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यहाँ हमारी विद्वता और वाक्पटुता का उपयोग नहीं है, बल्कि अपने मस्तिष्क को बच्चों के मस्तिष्क के स्तर पर लाना पड़ता है। जब हम स्वयं बच्चे बनकर बच्चों के लिए साहित्य रचेंगे, तभी वह साहित्य बच्चों के दिमाग में जाएगा और अपना उचित प्रभाव छोड़ेगा।

इस सम्बंध में मैं अपने एक अनुभव को साझा करना चाहता हूँ। उन दिनों मैं लखनऊ में रहते हुए कम्प्यूटर विषय पर पुस्तकें लिखा करता था। एक बार एक प्रकाशक महोदय की ओर से मुझे कक्षा १ से ५ तक के छात्रों के लिए कम्प्यूटर की पाठ्य पुस्तकें लिखने का आदेश मिला। मैंने अपने ज्ञान और अनुभव के अनुसार वे पुस्तकें लिख दीं और वे प्रकाशित भी हो गयीं। मुझे उनकी नमूना प्रतियाँ भी प्राप्त हो गयीं।

इसके कुछ दिन बाद रक्षाबंधन पर मैं अपने शहर आगरा गया, तो उनकी एक-एक प्रति अपने भांजे हार्दिक को दे आया, जो उस समय कक्षा ३ में पढ़ रहा था। फिर कुछ समय बाद जब दीपावली पर मैं फिर आगरा गया और वहाँ भांजा मिला, तो मिलते ही वह अपने आप बोला- 'मामा जी! पहले मेरी समझ में कम्प्यूटर नहीं आता था, पर आपकी किताब पढ़कर सब समझ में आ गया।' मुझे इस बात से कितनी खुशी हुई इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। मैं यही तो जानना चाहता था कि मेरी पुस्तकों का छात्रों पर वांछित प्रभाव पड़ता है या नहीं।

बाल साहित्य रचते समय भी हमें हमेशा अपने पाठक वृन्द को ध्यान में रखकर ही शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। इस सम्बंध में कुछ मोटे-मोटे सुझाव इस प्रकार दिये जा सकते हैं-

१. जहाँ तक सम्भव हो वाक्य छोटे होने चाहिए, ताकि बच्चों के दिमाग पर अधिक जोर न पड़े।
२. हमेशा बोलचाल के प्रचलित सरल शब्दों का प्रयोग करें, भले ही वे शुद्ध हिन्दी में न होकर अन्य भाषाओं के हों।
३. पैराग्राफ अधिक बड़े न हों। दो या तीन वाक्यों के पैराग्राफ उचित रहेंगे।
४. वाक्यों का गठन इस प्रकार हो कि जैसे आप सामने बैठे किसी बच्चे को समझा रहे हों, भले ही एक ही बात को दो या तीन तरह से कहना पड़े।
५. छोटी छोटी कहानियों और संवादों के माध्यम से किसी विषय को स्पष्ट करना अधिक अच्छा है।
६. संवाद अधिक हों तो भी चलेगा। यह कल्पना मत कीजिए कि शेष संवाद पाठक अपने आप समझ लेगा।
७. कविताओं में एक पंक्ति की लम्बाई अधिक न हो।
८. बच्चों की कवितायें आवश्यक रूप से तुकान्त होनी चाहिए।

इन सुझावों को ध्यान में रखकर रचा गया बाल साहित्य निश्चय ही अपने उद्देश्य में सफल रहेगा। ■

ग़ज़लें

सिमटने लगे हैं घर अब दादी के दौर के
बिखरने लगे हैं लोग जब गाँव छोड़ के
हो गया बड़ा मेरा गाँव, सरहद के छोर से
बनने लगे मकां, जब घरों को तोड़ के
सिमट गई नजदीकियां, मिटने के कगार तक
देखे हैं जब से रिश्ते, बस पैसों से जोड़ के
नहीं आता कोई काम, मुश्किल में आजकल
अब जीने लगे हैं लोग,
स्वार्थ से नाता जोड़ के
नैतिकता का देखिये
कितना हुआ पतन
औलाद भी चलने लगी,
अब मुँह मोड़ के

-- डॉ अ. कीर्तिवर्धन

आया शुभ त्योहार, दशहरा खास रहे
कटकुटिया की रात, गोबर्धन वास रहे
जगमग है दिवाली, अवली दियों की है
भैया दूज सुहाय, बहन मन आस रहे
रावण का संहार, महिषासुर सु मर्दन
विजय पताका राम, शम्भु कैलाश रहे
शरद ऋतु जब आए, नाचे खंजन पक्षी
शीतल मंद बयार, विकल मधुमास रहे
कार्तिक बोले मोर, शोर बैल रि घंटी
खेती करे किसान, प्रवल विश्वास रहे
भारत की पहचान, दिखे मंदिर मस्जिद
धर्म सार ईमान, शुद्ध इतिहास रहे
'गौतम' मन का मीत, मिला है मेले में
लिए हाथ में फूल, महके सुबास रहे

-- महातम मिश्र, गौतम गोरखपुरी

गीत

आज है तम तू सूरज बनके, करले उसका सामना
वीरता से आगे बढ़कर, डोर समय की थामना
समय कभी रुकता ही नहीं है, समय कभी भी झुके नहीं
कैसा वीर सपूत है वह जो, डर रोड़ों से रुके कहीं
देश-समय की टेर है ये, तू छोड़ न इसको भागना
वीरता से आगे बढ़कर, डोर समय की थामना
शोर से पूरित गली-गली, छाया आतंक चहुं ओर है
दु:खी लगें जो संत-भाव के, सुखी जो मन से चोर हैं
शेर बन तू दिलेर बन तू, हार कभी मत मानना
वीरता से आगे बढ़कर, डोर समय की थामना
शीत से तू डरा न अब तक, उष्णता को भी है वरा
आंधियों को, बारिशों को,
चाहे तो तू सके डरा
आज अपने देश के
उत्थान की कर कामना
वीरता से आगे बढ़कर,
डोर समय की थामना

-- लीला तिवानी

बाल पहेलियाँ

१. मीठी-मीठी, पीली गेंद, सबको खूब लुभाती
फैशन के इस दौर में, कई रंगों में आती
२. सबकी नकल उतारनेवाला, हरा-भरा यह साथी
सबके सिर पर जा बैठे यह, घर हो या हो हाथी
३. मार सभी से खाती रहती, बेचारी लाचार
बाइस डंडों से लड़ती पर, करे न खुद से वार
४. नकली चिड़िया फिर भी उड़ती, पंख बिना फैलाए
मार-मार हम इसे उड़ाते, कोई नाम बताए
५. नहीं देखना कोई इनको
मन पर ये छा जाते
सपनों में रातों को आकर
सबको बहुत डराते

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ १६ पर देखिए।)

ग़ज़ल

खेल जो चल रहा मुहब्बत का
ये नया ढंग है अदावत का
हर किसी ने नकाब ओढ़ा है
झूठ पर सत्य का शराफत का
सच भला याद क्यूँ रहे उनको
चढ़ गया है नशा सियासत का
मुफलिसी का कहीं नहीं चर्चा
अब जमाना है सिर्फ दौलत का
दर्द कुछ और बढ़ गया जब से
उसने पूछा पता शराफत का
माँगने से नहीं मिले हक तो
रास्ता सिर्फ है बगावत का
सोचकर खूब कीजिये 'बंसल'
अब भरोसा किसी की चाहत का

-- सतीश बंसल

बुलेट ट्रेन : भारतीय रेलवे को मिलेगी गति

सुरेश हिन्दुस्तानी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जापान के सहयोग से हवा से बातें करने वाली उच्च गति वाली बुलेट ट्रेन लाकर भारत के विकास की आधारशिला रखी है। हालांकि बुलेट ट्रेन लाने के प्रयासों की यह कहकर आलोचना भी की जाएगी कि जब वर्तमान रेल यातायात अनियंत्रित हो रहा है, तब बुलेट ट्रेन चलाकर कौन सी प्रगति होगी। लेकिन यह सत्य है कि आगे बढ़ने के लिए खतरों का खिलाड़ी बनना होगा। यह बात एकदम सही है कि देश के इतने बड़े रेल यातायात संचालन की जिम्मेदारी रेल विभाग की होती है, सरकार को इसके नियंत्रण के लिए उचित कदम भी उठाने होंगे, लेकिन यह भी सच है कि जब उच्च तकनीक के साथ किसी विभाग का विस्तार किया जाएगा तो कुछ समस्याएं तो अपने आप ही दूर हो जाएंगी। इसलिए यह कहा जाना सर्वथा उपयुक्त ही होगा कि बुलेट ट्रेन रेल विभाग की कई समस्याओं का समाधान करेगा।

एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि आज तकनीक के जमाने में खतरों की चिन्ता न करते हुए आगे बढ़ते रहने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने कार्यकाल में आगे बढ़ने के लिए खतरों से खेले हैं। वे वास्तव में खतरों के खिलाड़ी हैं। देश की जनता खुलकर इस सत्य को स्वीकारने लगी है कि नरेन्द्र मोदी जो भी काम करते हैं, उसमें भारत का उत्थान समाहित होता है। चाहे वह तकनीकी का क्षेत्र हो या फिर सांस्कृतिक क्षेत्र हो। नरेन्द्र मोदी ने हर जगह अलग अंदाज में अपने काम की प्रस्तुति दी है।

जापान के सहयोग से भारत में बुलेट ट्रेन का सपना पूरा हो रहा है। इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने अहमदाबाद में भारत की पहली बुलेट ट्रेन की नींव रखी। इसके साथ ही देश में उच्चगति की रेलसेवा की उल्टी गिनती शुरू हो गयी। अहमदाबाद के साबरमती स्थित रेलवे के एथलेटिक्स स्टेडियम में आयोजित एक भव्य समारोह में दस हजार से अधिक लोगों के समक्ष दोनों प्रधानमंत्रियों ने यहां बनने वाले मुख्य स्टेशन, यार्ड और वडोदरा में निर्मित होने वाले हाईस्पीड रेल ट्रैक प्रशिक्षण संस्थान के निर्माण की आधारशिला पट्टिका का अनावरण किया।

वास्तव में यह बुलेट ट्रेन परियोजना की नहीं बल्कि नये भारत की नींव रखी गयी है। इससे गुजरात और महाराष्ट्र के लाखों लोगों को रोजगार मिलेगा। दोनों राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी। यह मोदी की दूरदृष्टि का परिणाम है। इससे ना केवल गुजरात बल्कि पूरे देश का विकास होगा। बुलेट ट्रेन दो मित्र देशों भारत और जापान के बीच संबंधों में भाईचारे का प्रतीक होगी। यह प्रधानमंत्री मोदी के न्यू इंडिया के सपने को पूरा करेगी। बुलेट ट्रेन के माध्यम से भारतीय रेल दुनिया की आधुनिकतम तकनीक से जुड़ेगी और देश की आर्थिक तरक्की को और गति देगी।

करीब १६० साल पुरानी भारतीय रेल में विगत चार-पांच दशकों से तकनीक विकास जरूरत के अनुसार नहीं हो पाने से अनेक संकटों में घिरी है। देश में शिन्कान्सेन तकनीक आने से भारतीय रेलवे तेजी से आगे बढ़ेगी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के माध्यम से भारत में मेक इन इंडिया के माध्यम से सस्ती बुलेट ट्रेनें बनेंगी जिन्हें निर्यात करके पैसा कमाया जा सकेगा। बुलेट ट्रेन की लागत में कमी आने से उस तकनीक से भारतीय रेल नेटवर्क को भी उन्नत बनाया जा सकेगा।

इस परियोजना के लिये भारतीय रेलवे के ३०० युवा अधिकारी जापान में हाईस्पीड ट्रैक प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण ले रहे हैं। जापान की सरकार ने भी मानव संसाधन विकास की जरूरतों को देखते हुये अपने देश के विश्वविद्यालयों में भारतीय रेलवे के अधिकारियों के लिये मास्टर्स प्रोग्राम के लिये २० सीट प्रतिवर्ष आरक्षित कर दी हैं। बुलेट ट्रेन परियोजना को मेक इन इंडिया कार्यक्रम से भी जोड़ा गया है। जापान इसके लिए भारत को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण भी करेगा। प्रारम्भ में इस परियोजना को पूरा करने का लक्ष्य दिसंबर २०२३ तय किया गया था, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने इसके लिए १५ अगस्त २०२२ की नयी समय सीमा निर्धारित की है, ताकि देश की आजादी की ७५वीं वर्षगांठ पर देश को यह नयी सौगात पेश की जा सके। ■

पैसा बहुत कुछ है, लेकिन सब कुछ नहीं

पंकज 'प्रखर'

वर्तमान मनुष्य पैसे के लिए पागल हुआ घूम रहा है। जिसे देखो अधिक से अधिक पैसा कमाकर अमीर बनने और अपने जीवन को अधिक सुविधायुक्त बनाने की धमाल चौकड़ी में लगा हुआ है। यह प्रवृत्ति आज के युवाओं की मानसिकता का एक हिस्सा है और हो भी क्यों न? हम उन्हें बचपन से यही सिखाते हैं कि बेटा अच्छा पढ़ेगा तो अच्छी नौकरी लगेगी, अच्छी नौकरी लगेगी तो अच्छा पैसा मिलेगा, अच्छा पैसा मिलेगा तो जीवन में अच्छी सुविधाएं आएँगी, बस फिर तो लाइफ सेट है। यह पाठ आज के माता-पिता अपने बच्चे को पढ़ाने में लगे हैं। माता-पिता वे सब काम अपने बच्चों से करवाना चाहते हैं, जिन्हें वे स्वयं नहीं कर सके।

महाभारत की एक घटना याद आती है। एक दिन धृतराष्ट बहुत दुखी बैठा था, क्योंकि दुर्योधन ने भरी सभा में साफ कह दिया था कि वह सुई की नोंक के बराबर भूमि भी पांडवों को नहीं देगा। तब विदुर ने धृतराष्ट से पूछा- भैया पांडव और कौरव एक ही वंश के हैं, उनके गुरु भी एक ही हैं, जिनसे उन्होंने शिक्षा पायी है और हम भरतवंशियों ने उनमें बिना भेदभाव किये दोनों को ही समान स्नेह और प्रेम दिया है। फिर भी पांडव इतने विनम्र और सदाचारी हैं, जबकि दुर्योधन इतना अहंकारी और क्रोधी है। ऐसा क्यों है? तब धृतराष्ट ने जो उत्तर दिया वह बहुत महत्वपूर्ण है. उसने कहा- 'दुर्योधन मेरी महत्वाकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब है। जो मैं अपने जीवन में हासिल नहीं कर पाया, वह मैं हमेशा दुर्योधन से प्राप्त करवाना चाहता था. मैंने उसे अपनी अपूर्ण महत्वाकांक्षाओं का विष पिला-पिलाकर पाला है।' आज के माता-पिता की स्थिति भी यही है।

मनुष्य धन संग्रह के लिए रोज नई-नई तिकड़म लगाता रहता है, जिसमें उसके जीवन का एक बड़ा भाग खो जाता है। पैसे के लिए वह अपने परिवार और रिश्तेदारों से कटता चला जाता है। उसे मालूम ही नहीं पड़ता कि समय कैसे निकल गया। जब उसे होश आता है, तब तक उसके अपने उसके लिए अपनापन खो चुके होते हैं। इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि पैसे का संग्रह न किया जाए। पैसे का संग्रह किया जाना चाहिए, लेकिन जरूरत से ज्यादा किसी भी वस्तु का संग्रह दुखदायी ही होता है।

एक समय था जब एक व्यक्ति कमाता था और दस व्यक्ति खाते थे। मोटा कपड़ा पहनते थे और सब बड़े ही प्रेमभाव से जीवन जीते थे। हाँ घर में सुविधाओं की वस्तुओं का अभाव था, लेकिन मानसिक शांति थी। छीन-झपट जैसी मानसिकता के कम ही उदाहरण मिलते थे। पिता के बाद परिवार में बड़े भाई को बाप के समान दर्जा दिया जाता था और भाभी मां की भूमिका अदा करती थी। मां भूखी सो जाती थी, लेकिन अपने बच्चों को रोटी खिलाती थी। विपत्ति के समय में पिता बेटे के कंधे पर हाथ रखता और कहता कि सब ठीक हो जायेगा। लोग एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। हाँ पैसा इतना नहीं होता था, लेकिन जीवन सरलता एवं शांति से बसर हो जाता था। पैसे से ही परिवार और व्यक्ति सुखी हो सकता है यह सत्य नहीं है। इस संसार में ऐसे अनेक मनुष्य थे, जिनकी जेब में एक पैसा नहीं था या जिनकी जेब ही नहीं थी, फिर भी वे धनवान थे और इतने बड़े धनवान कि उनकी समता दूसरा कोई नहीं कर सकता। वैसे भी जिसका शरीर स्वस्थ है, हृदय उदार है और मन पवित्र है, यथार्थ में वही बड़ा धनवान है। स्वस्थ शरीर चाँदी से कीमती है, उदार हृदय सोने से मूल्यवान है और पवित्र मन की कीमत रत्नों से अधिक है।

जिसके पास पैसा नहीं, वह गरीब कहा जायगा, परन्तु जिसके पास केवल पैसा है, वह उससे भी अधिक

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

भारतीय महिलाओं की दिशा एवं दशा

शालिनी तिवारी

वर्तमान हालात

यह एक गौरवशाली तथ्य है कि आजाद भारत में महिलाएं दिन-प्रतिदिन अपनी लगन, मेहनत एवं सराहनीय कार्यो द्वारा राष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं. मौजूदा दौर में महिलाएँ नए भारत के आगाज की अहम कड़ी दिख रही हैं. लम्बे अर्से के अथक परिश्रम के बाद आज भारतीय महिलाएँ समूचे विश्व में अपने पदचिह्न छोड़ रहीं हैं. मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि पुरुष प्रधान रूढ़िवादी समाज में महिलाएँ निश्चित रूप से आगामी स्वर्णिम भारत की नींव और मजबूत करने का हर सम्भव प्रयास कर रहीं हैं, जो सचमुच काबिले तारीफ है. हाँ, यह जरूर है कि कुछ जगह अब भी महिलाएँ घर की चहरदीवारी में कैद होकर रूढ़िवादी परम्पराओं का बोझ ढ़ो रहीं हैं. वजह भी साफ है, पुरुष प्रधान समाज का महज संकुचित मानसिकता में बँधें होना.

संवैधानिक अधिकार एवं आधार

भारतीय संविधान सभी भारतीय महिलाओं को समान अधिकार (अनुच्छेद १४), राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद १५(१)), अवसर की समानता (अनुच्छेद १६), समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद ३९(घ)) की गारंटी देता है. इसके अलावा यह महिलाओं एवं बच्चों के पक्ष में राज्य द्वारा विशेष प्रावधान बनाए जाने की अनुमति भी देता है (अनुच्छेद १५(३)), महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं का परित्याग करने (अनुच्छेद १५(ए)ई) और साथ ही काम की उचित एवं मानवीय परिस्थितियाँ सुनिश्चित करने, प्रसूति सहायता के लिए राज्य द्वारा प्रावधानों को तैयार करने की अनुमति देता है (अनुच्छेद ४२).

ध्यातव्य है कि समय-समय पर महिलाएँ अपनी बेहतरीकरण हेतु सक्रियता से आवाज उठाती रही हैं. पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, तीन तलाक, हलाला व अन्य इसके उदाहरण हैं. आज समूचा भारत हर सम्भव तरीके से समाज की सभी बहन, बेटियों की हिफाजत चाहता है. एक कदम आगे बढ़कर भारत सरकार ने सन् २००१ को महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित किया था और सशक्तीकरण की राष्ट्रीय नीति भी सन् २००१ में ही पारित की थी.

ऐतिहासिक स्वर्णाक्षर

१- आजाद भारत में सरोजिनी नायडू संयुक्त प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल बनीं.
२- सन् १९५१ में डेक्कन एयरवेज की प्रेम माथुर प्रथम भारतीय महिला व्यवसायिक पायलट बनीं.
३- सन् १९५९ में अन्ना चाण्डी केरल उच्च न्यायलय की पहली महिला जज बनीं.
४- सन् १९६३ में सुचेता कृपलानी पहली महिला मुख्यमंत्री (उत्तर प्रदेश) बनीं.
५- सन् १९६६ में कमलादेवी चट्टोपाध्याय को समुदाय नेतृत्व के लिए रेमन मैग्सेसे अवार्ड दिया गया.
६- सन् १९६६ में इंदिरा गाँधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं.
७- वर्ष १९७२ में किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा में भर्ती होने वाली पहली महिला बनीं.
८- वर्ष १९७९ में मदर टेरेसा नोबेल शान्ति पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय महिला थी.
९- साल १९९७ में कल्पना चावला पहली महिला अंतरिक्ष यात्री बनी.
१०- वर्ष २००७ में प्रतिभा देवी सिंह पाटिल की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनीं.
११- साल २००९ में मीरा कुमार लोकसभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं.
१२- साल २०१७ में निर्मला सीतारमन पहली पूर्णकालिक महिला रक्षामंत्री बनीं.

शैक्षिक आँकड़ा

सामाजिक सम्बलता हेतु बदलते भारत में महिलाओं की साक्षरता दर लगातार बढ़ती जा रही है, परन्तु यह पुरुष साक्षरता दर से अब भी कम ही है. लड़कों की तुलना में कम लड़कियाँ ही स्कूल में दाखिला लेतीं हैं और उनमें से कई बीच से ही अपनी पढ़ाई छोड़ देती हैं. दूसरी तरफ शहरी भारत में यह आँकड़ा संतोषजनक है. लड़कियाँ शिक्षा के मामले में लड़कों के लगभग बराबर चल रही हैं. एक सबल राष्ट्र बनाने के लिए महिलाओं की शिक्षा एवं उनकी सक्रिय भागीदारी अति आवश्यक है. इसलिए हम सबको महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए.

श्रमशक्ति में भागीदारी

आम धारणा के विपरीत महिलाओं का एक बड़ा तबका कामकाजी है. शहरी भारत में महिला श्रमिकों की एक बड़ी तादात मौजूद है. साफ्टवेयर उद्योग में ३० फीसदी महिला कर्मचारी हैं. पारिश्रमिक एवं कार्यस्थल के मामले में पुरुष सहकर्मियों के साथ बराबरी पर हैं. कृषि एवं सम्बंधित क्षेत्रों में कुल महिला श्रमिकों को अधिकतम ८९.५० प्रतिशत रोजगार दिया है. फोर्ब्स मैगजीन की सूची में जगह बनाने वाली दो भारतीय महिला ललिता गुप्ते और कल्पना मोरपारिया भारत के दूसरे सबसे बड़े बैंक ICICI को संचालित करती हैं.

महिलाओं के विरूद्ध अपराध

पुलिस रिकाड़ को देखें तो महिलाओं के विरूद्ध भारत में एक बड़ा आँकड़ा मिलता है, जो हम सबको चिन्तन करने पर मजबूर करता है. यौन उत्पीड़न, दहेज प्रताड़ना, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, गर्भपात, महिला तस्करी व अन्य उत्पीड़न के आँकड़े दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं. वर्ष १९९७ में सर्वोच्च न्यायालय ने यौन उत्पीड़न के खिलाफ एक विस्तृत दिशा निर्देश जारी किया. एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में होने वाले बाल विवाहों का ४० प्रतिशत अकेले भारत में होता है. भ्रूण हत्या को ध्यान में रखते हुए इस पर प्रतिबन्ध लगाने का सराहनीय कार्य भारत सरकार ने किया और घरेलू हिंसा पर रोकथाम के लिए २६ अक्टूबर २००६ को महिला सरक्षण एक्ट भी लाया.

अभी हाल में ही २२ अगस्त २०१७ को सर्वोच्य न्यायालय की पाँच जजों वाली बेंच ने झटपटिया तीन तलाक जैसी कुरीतियों पर प्रतिबन्ध लगाकर मुस्लिम समाज को एक नई दिशा प्रदान की है.

चलो बदलाव करें

निष्कर्ष यह है कि महिलाओं के बेहतरीकरण के लिए हम सबको अपनी कुत्सित एवं रूढ़िवादी मानसिकता से बाहर निकलना होगा. उन्हें सम्मान के साथ-साथ शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी व अन्य सभी स्थानों पर बराबरी देनी होगी. उल्लेखनीय है कि भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र की प्रगति में अपना अधिकाधिक योगदान देकर राष्ट्र को शिखर पर पहुँचाने हेतु सदैव तत्परता दिखायी है. सच पूछो तो नारी शक्ति ही सामाजिक धुरी और हम सबकी वास्तविक आधार हैं. महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार द्वारा चलायी जा रही नीतियों में पूर्ण सहयोग देकर उसको परिणाम तक पहुँचाना होगा. युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानन्द ने कहा था- "जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेगी।" हमें भारतीय सनातन संस्कृति की "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" धारणा को साकार करते हुए महिलाओं को आगे बढ़ने में सदैव सहयोग करना चाहिए. ■

कुंडलियाँ

बाबा जी के ढोंग से,
मिली आज यह सीख
झूठों को पतियात जग,
सच को मिले न भीख
सच को मिले न भीख,
सदा ही वह दुख पाता
झूठ रहे मदमस्त, महल में मौज उड़ाता
पाखंडी हर जगह, तीर्थ स्थल हो या काबा
रहें सदा ही सजग, बहुत हैं ढोंगी बाबा

बाबाओं की धूर्तता, समझ न पाते लोग
स्वारथ में अंधे हुए, लगा विकट यह रोग
लगा विकट यह रोग, बहिन-बेटी दे आते
करें न सोच विचार, उन्हें भगवान बताते
सुरा-सुंदरी लिप्त, सुरक्षा फौज खड़ी की
नेताओं तक पहुँच, बढ़ी है बाबाओं की

-- डॉ. रमा द्विवेदी

(भाग ५)

दिव्यांगों के आदर्श - श्री बच्चू सिंह

स्वतन्त्रता के समय एक आंतकवादी संगठन 'मजगर' ने पंजाब और सिंध के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में आंतक फैला दिया था, जो उनसे जुड़े हिन्दू क्षेत्रों में भी फैल गया। हिन्दू बहुल रियासतों ने अपनी प्रजा को बचाने के लिए केंद्र से सहायता मांगी, मगर नेहरू ने कोई चिंता नहीं की, जिससे अव्यवस्था हो गई।

माउण्टबेटन ने भारत विभाजन का काम सिरिल रेडक्लिफ को सौंपा था जो भारत के विषय से पूर्णतः अनभिज्ञ था। रेडक्लिफ ने केवल भारत का नक्शा देखकर कुछ पूछताछ के बाद पूर्व और पश्चिम में दो लाइनें खींचकर भारत को विभाजित कर दिया, जो बहुत अव्यवस्थित भी था, जैसे बंगाल का १००% हिन्दू-बौद्ध क्षेत्र चटगांव पाकिस्तान को दिया गया और मुस्लिम बहुल मालदा भारत को मिला।

पंजाब में लाहौर हिन्दू-सिख बहुल क्षेत्र था, जहां लाला लाजपत राय और सर छोटू राम के समर्थक थे, जिससे बच्चूसिंह को सीधा समर्थन मिल रहा था। १९४६ की क्रांति के समय से लाहौर पर ब्रिटिश प्रशासन की पकड़ खत्म हो गई थी, इसलिए लाहौर पर नियंत्रण केवल मुस्लिम पुलिस अधिकारियों को दिया गया था। इसी आधार पर लाहौर को जबरदस्ती पाकिस्तान में मिलवाया गया। इसी से कश्मीर जाने वाला मार्ग पाकिस्तान को मिला।

रियासतों को ब्रिटिश संसद ने स्वेच्छा का विकल्प दिया था, परंतु मजगर आंतकवाद से सिंध के पूर्वी क्षेत्र में स्थित रियासतों में संकट हो गया। नेहरू ने उनकी मदद करने में कोई रुचि नहीं दिखाई, अतः रियासतें स्वतंत्र हो गईं, किन्तु साथ ही आंतकवाद से पीड़ित भी हो गईं। इस समय जिन्नाह ने पाकिस्तान सीमा से सटी हिन्दू रियासतों को मदद के बदले पाकिस्तान में मिलने का न्यौता दे दिया। इसी कारण अमरकोट जैसी ८०: हिन्दू बहुल रियासत भी पाकिस्तान में शामिल हुई। इसी से सरक्रीक तक पाकिस्तान का कब्जा हो गया।

जोधपुर, बीकानेर आदि बड़ी रियासतों के साथ भी जिन्नाह ने समझौता कर लिया। इस समय भरतपुर के पास भी दो ही मार्ग थे- या तो पाकिस्तान में मिलकर शांति से जागीर या कुछ अधिकार ले लेना, या फिर लड़कर जबरदस्ती भारत के साथ मिलना। भरतपुर ने दूसरे मार्ग को अपनाया।

बच्चूसिंह ने अपनी जीप में हथियार लादे और भरतपुर की सेना के साथ मजगर आंतकवादियों पर हमला कर दिया। जहां भी आंतकवादी उत्पात करते, बच्चूसिंह अपनी सेना सहित वहाँ पहुँच जाते और उनका सफाया करते। नेहरू द्वारा आंतकवाद पर अपनी उपेक्षा करने से आत्मरक्षा के लिए अलवर, धौलपुर व करौली रियासतें भी भरतपुर के साथ जुड़ गई। इसी के साथ इनका प्रभाव बढ़ने लगा।

विभाजन, दंगे और आंतकवाद से पीड़ित लोगों के पुनर्वास, राहत, भोजन-पानी, दवा व चिकित्सा के लिए प्रबंध भी आवश्यक था, लेकिन इसका नेहरू ने विरोध ही किया। तब सीकर रियासत के जाट महाराजा कल्याण सिंह की शरण में रह चुके पंडित दीन दयाल उपाध्याय इसके लिए आगे आए। १९३७ से आरएसएस से जुड़े पंडित दीन दयाल उपाध्याय उस समय आरएसएस के उत्तरी प्रांत के सह-प्रांत प्रचारक थे। अतः उनके साथ अन्य बहुत से आरएसएस कार्यकर्ता भी इस काम में जुड़ गए। दीन दयाल उपाध्याय और बच्चूसिंह में बहुत समानताएं थीं। दोनों ही एकीकृत भारत में जरूरतमंदों के संरक्षण के पक्षधर थे और दोनों को ही नेहरू का विरोध था। दोनों प्रखर देशभक्त तो थे ही। अतः दोनों हर मोड़ पर एक होते गए।

बच्चूसिंह भरतपुर की सेना के साथ अपने आर्य समाज और अजगर स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिया करते थे। यह प्रशिक्षण अलवर में भी होने लगा था। दीन दयाल उपाध्याय के साथ जुड़े आरएसएस के सदस्यों को भी मई-जून १९४७ में अलवर के प्रधानमंत्री खरे ने प्रशिक्षण में जोड़ दिया। प्रशिक्षण के दौरान बच्चूसिंह की टीम से जुड़कर आरएसएस पूरे भारत का सबसे बड़ा संगठन बन गया, किन्तु व्यवस्थित रूप से यह बच्चूसिंह की टीम थी। (अगले अंक में जारी)

हास्य-व्यंग्य

ट्रेन का डब्बा और ज्ञानी पुरुष

रविन्दर सूदन

'सफर का मजा लेना हो तो सामान कम रखिये, जिंदगी का मजा लेना हो तो अरमान कम रखिये।' मुझे इसमें थोड़े संशोधन की जरूरत महसूस हुई। 'सफर का मजा लेना हो तो ट्रेन की सामान्य श्रेणी में चलिए। देश के हालात की असली तस्वीर के लिए इनमे सफर करते ज्ञानियों से मिलिए।'

वैसे तो ज्ञानी पुरुष देश के कोने-कोने में फैले हुए है पर वास्तविक ज्ञानी ट्रेन की सामान्य श्रेणी में आसानी से मिल जाते हैं। जब एक यात्रा पर जाना पड़ा, तो यही तय किया कि क्यों न ज्ञानियों से मिला जाए, एक पंथ दो काज। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि मुझे अरस्तू और सुकरात जैसे फिलास्फरों की इस बात की सच्चाई का पता चला कि जैसे-जैसे आप जानते जायेंगे, आपको पता चलेगा कि आप तो कुछ भी नहीं जानते। इन ज्ञानियों से मिलकर तो मेरे ज्ञान चक्षु खुल गए।

स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही मैं दौड़कर सामान्य श्रेणी में चढ़ गया। एवेरेस्ट पर चढ़कर जो खुशी शेरपा तेनजिंग या चाँद पर पहला कदम रखने वाले आर्मस्ट्रोंग को मिली होगी, वही खुशी डिब्बे में चढ़ने में सफल होने पर मिलती है, इस बात का भी पता चला। हाथ जोड़कर विनती करने पर एक अधेड़ व्यक्ति ने पास बैठने की जगह देने की कृपा की। उसके पास ही एक नवयुवक भी बैठा था। आसपास नजर दौड़ाई तो दरवाजे पर मैले कुचैले कपडे पहने मूंगफली खाकर छिलके वहीं फेंकती एक स्त्री नजर आई जो मोदी जी के स्वच्छता अभियान की धज्जियाँ उड़ा रही थी। कुछ लोग बैठे ताश खेल रहे थे। एक कोने में एक बुर्के वाली औरत बच्चे के साथ बैठी थी।

ट्रेन के छूटने का समय हो रहा था उसी समय वे नवयुवक खाली प्लास्टिक की बोतल लिये अधेड़ से बोले- 'दद्दू भूल गया होत तनिक ले आवत हूँ।' शीघ्र ही वो पानी लेकर वापस आ गया। इतने में ट्रेन चल पड़ी। अधेड़- 'मैं तो डर गया होत कहुं पानी के लाने ट्रेन ही न छूट जाओ तुमरी।' नवयुवक- 'ऊ का है कि दद्दा पानी के नल पर आजकल भीड़ नहीं रहत। सारा नल का पानी बोतलों में भर-भरके जे लोक करोड़ों कमा रये हैं। कहत हैं इस पानी से पेट खराब होत है। जनता मूरख है हमरो पेट तो कबहुं नईं खराब भओ। मोदी जी कहत हैं कि भ्रष्टाचारी बंद भई है सब बकवास है।'

इतने में बुर्के वाली औरत बच्चे के साथ टॉयलेट तक गयी। नवयुवक- 'दद्दा, मोदी जी ने जे अच्छो कियो कि इनका तलाक खत्म करवा दओ।' (उसे नहीं मालुम था कि तलाक कोर्ट के फैसले से खत्म हुआ।) दददू- कछु न होण को, कोई फर्क न पड़बो, तलाक वैसे ई चलबो, कौन औरत अदालत के बरसों चक्कर लगावे?' नवयुवक- 'दद्दा जे राम रहीम का का भओ? ससुरा जेल चला गओ, दूसरों से थोड़ा हुशियार होत। डाका नई डालों ओमें कित्ता मिलत? जनता लुटन को तैयार तो जे लूटन को तैयार। हमसे न पूछो हतो, इत्ते लोगन को जितवाय दियो उनकी सरकार बनवाय दी। पाकिस्तान के आतंकी हाफिज सईद से भी कछु न सीखो। काय नईं खुद की पार्टी बनाके इत्ते जितवा दिए होत, तो आज मुखमंत्री की कुर्सी पर होतो। फिर कौन माई का लाल उसे जेल भिजवात।' आसपास के लोग भी उस ज्ञानी के ज्ञान से चकित रह गए। मेरा स्टेशन आ गया था, अतः ज्ञानी की और ज्ञानपूर्ण बातों से वंचित रह गया। ■

(दूसरी किस्त)

छोटी अम्मा की बेटी

सुधीर मौर्य

हालाँकि यकीनन मेरे पिताजी से लड़की के विवाह कर लेने की यह वजह रही होगी, पर एक और वजह थी जिससे उस लड़की ने पिताजी से शादी की थी। उसका खुलासा मैं बाद में करूँगा। उस लड़की ने शादी के बाद नियत समय पर एक लड़के को जन्म दिया। वह लड़का मैं था, इसलिए मैं अब से उस लड़की के लिए 'माँ' का सम्बोधन प्रयोग करूँगा।

पिताजी चाहते तो मेरी माँ से विवाह के बाद शहर में जाकर रह सकते थे, पर वे चाहते थे कि आगे से मेरी माँ की तरह कोई और लड़की उस आठ गाँव में सताई न जाये। इसलिए पिताजी मेरी माँ के साथ अपनी पुश्तैनी हवेली में रहने लगे। हालाँकि पिताजी मेरी माँ का बेहद ख्याल रखते थे, पर मेरी माँ को हवेली में बेहद अपमानित होना पड़ता था। पिताजी के अलावा हवेली के सभी सदस्य मेरी माँ को छोटे ताऊ की मौत का जिम्मेदार समझते थे। अब लाजिमी है कि एक गर्वीला जमींदार खानदान ऐसी औरत से नफरत ही करेगा और उसे गाहे-बगाहे अपमानित करेगा ही।

यद्यपि मेरी माँ भी पिताजी का बेहद ख्याल रखती थी, पर पिताजी अक्सर उदास रहा करते थे। पहले माँ ने पिताजी की उदासी का कारण यही समझा कि वे अपने भाई की मौत से उदास रहते हैं, पर जल्दी ही माँ को पिताजी के उदास रहने की एक और वजह पता चल गई। मेरी माँ की जान बचाने के लिए पिताजी ने साहसिक निर्णय लेते हुए उनसे विवाह तो कर लिया, पर उससे पहले वे शहर में एक लड़की को अपना दिल दे चुके थे। मेरी माँ ने भी प्रेम किया था। वह प्रेम और उसकी जुदाई की पीड़ा से भली-भांति परिचित थी। पिताजी और साथ ही वह लड़की, जिससे पिताजी ने प्रेम किया था, वे दर्द की किस दौर से गुजर रहे होंगे, यह सोचकर मेरी माँ के कलेजे में हुक उठती।

मेरी माँ ने पिताजी को कई बार समझाया कि वह शहर जायें और जाके उस लड़की को अपना लें। पर पिताजी मेरी माँ को यूँ हवेली में अकेले छोड़कर जाने को तैयार नहीं थे। उन्हें डर था कि उनके बाद हवेली में माँ के साथ कुछ गलत हो सकता है। पर जब एक दिन माँ ने पिताजी को अपनी और उस लड़की की कसम एक साथ दे दी, तो पिताजी शहर जाने को तैयार हो गए।

पिताजी शहर गए तो जल्दी लौटकर नहीं आये। हालाँकि पिताजी में कोई ऐब नहीं था, पर जब वह स्नातक की पढ़ाई के लिए शहर में थे तो एक बार अपने कुछ दोस्तों के बेहद इसरार पर कोठे पर चले गए। यहीं इस कोठे पर एक लड़की से उनकी नजर यूँ टकराई कि वह उसे दिल दे बैठे। वह लड़की भी पिताजी के बांकपन पर दिल हार गई। यूँ पिताजी जिस लड़की के विछोह में हमेशा गमगीन रहा करते थे, वह लड़की यहीं कोठे पर रहती थी। जहाँ वह और उस जैसी कुछ अन्य लड़कियाँ आने वाले लोगों का अपने गायन और नृत्य से दिलजोई किया करती थीं।

उस समय टेलीफोन नहीं हुआ करते थे। शहर से पिताजी माँ को नियमित पत्र लिखते थे, पर कोई भी पत्र मेरी माँ के हाथों तक नहीं पहुंचा। या यह कहो कि पहुँचने ही नहीं दिया गया। तकरीबन डेढ़ साल बाद पिताजी जब घर लौटे, तो उनके साथ छोटी अम्मा और उनकी गोद में एक-डेढ़ महीने की बच्ची भी थी। जिस दिन पिताजी घर आये, उस दिन उन्हें छोटी अम्मा और उनकी गोद में प्यारी-सी बच्ची के साथ देखकर माँ बहुत खुश होती। पर मेरी माँ अब इस दुनिया में कहाँ थी।

मैने उन्हें बीमार होते देखा था। बीमारी में दम तोड़ते देखा था। हालांकि बाद में मुझे पता चला था कि मेरी माँ की बीमारी की वजह उन्हें धीमा जहर दिया जाना था और मेरी माँ की मौत असल में मौत नहीं, हत्या थी। जिस अंदेशे की वजह से पिताजी माँ को अकेले छोड़कर शहर नहीं जाना चाहते थे, वह अंदेशा सही निकला था। लेकिन उस समय मेरी माँ की मौत को मेरी तरह उन्होंने बीमारी की वजह से हुई सामान्य मौत मान लिया था।

उस वक्त हमारा पूरा खानदान मेरी माँ से शादी करने की वजह से पिताजी से पहले ही बेहद नाराज था और अब जब वे अपने साथ कोठे में नाचने वाली को ले आये, तो सबके सब लगभग पिताजी के दुश्मन ही बन गए। न सिर्फ पूरा खानदान पिताजी के खिलाफ था, बल्कि वह अठगांवा, जिसकी भलाई के लिए पिताजी ने अपना पसीना बहाया था, वह भी पिताजी का विरोधी बन बैठा था। हमारे घर में एक तवायफ किसी की ब्याहता की हैसियत से रहे, यह न घर वालों को मंजूर था और न ही गाँव वालों को।

पहले गाँव वालों पिताजी को ऊंच-नीच समझाई। पर जब पिताजी छोटी अम्मा को हवेली में ही रखे रहे, तो गाँव वालों ने ब्राह्मणों की अगुवाई में हमारे घर की लुटिया बंद कर देने की धमकी दी। 'लुटिया बंद कर देने' का अर्थ ये होता कि जिस घर की लुटिया बंद की जाती थी फिर उस घर का कोई भी पानी तक नहीं पीता था। उसके घर का भोजन करना तो बहुत दूर की बात होती थी। तब यह किसी भी खानदान के लिए 'लुटिया बंद करने' वाली प्रथा बेहद अपमानजनक मानी जाती थी। लोग मर जाना पसंद करते थे पर अपने घर पर यह प्रथा नहीं लगने देते थे।

बड़े ताऊ ने पूरे खानदान को इस प्रथा से बचाने के लिए पिताजी को उन कमरों में से एक में रहने को कह दिया जो घर के नौकरों के लिए थे। पिताजी ने खुशी से उस एक कमरे में रहना स्वीकार कर लिया। छोटी अम्मा के साथ रहने से पिताजी किसी भी तकलीफ में खुश रह सकते थे, इसका आभास मुझे उस कच्ची उम्र में भी हो गया था। पर गांव के ब्राह्मणों को बड़े ताऊ द्वारा की गई यह व्यवस्था पसंद नहीं आई। लुटिया न बंद करने के लिए उनकी एक ही शर्त थी कि वे उस तवायफ को घर से निकाल दें।

छोटी माँ एक राजकुमार को राह का भिखारी बनते देख रही थी। उन्होंने पिताजी को समझाने का प्रयास किया कि पिताजी उन्हें वापस शहर में उसी कोठे पे चले जाने दे। लेकिन पिताजी ने उनकी बात को एक सिरे से खारिज कर दिया। जब पिताजी ने उनकी बात नहीं मानी, तो एक दिन जब पिताजी किसी गाँव में किसी से मिलने गए थे तो छोटी माँ गोद में अपनी बच्ची को उठाकर चली गई। उस समय मैं स्कूल गया था और घर के किसी अन्य सदस्य ने यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि छोटी माँ कहाँ जा रही हैं।

जाते हुए छोटी माँ ने पिताजी को अपनी कसम देते हुए खत लिखा कि वे अब कभी भी शहर मुझे इस गाँव में वापस लाने के लिए नहीं आयंगे। उन्होंने ये भी लिखा उनकी सबसे बड़ी इच्छा ये है कि पिताजी गाँव की भलाई और तरक्की के लिए काम करे।

पिताजी छोटी माँ से मिलने शहर तो गए पर उन्हें वापस घर लेकर नहीं आये। छोटी माँ की दी कसम का मान तो उन्हें रखना ही था। वक्त आगे खिसका और इस खिसकते वक्त के साथ मेरे बड़े ताऊ की हत्या कर दी गई। किसी ने हत्यारों को नहीं देखा था। पर अठगांवा में दबी जबान में चर्चा थी कि जमींदार को उस युवक के भाई ने मारा है, जो मेरी माँ का प्रेमी था।

बड़े ताऊ के मरने के बाद पूरे घराने की जिम्मेदारी पिताजी पर आ गई। मैने महसूस किया था की मेरे दोनों ताऊ के बच्चो की आँखों में पिताजी के लिए कोई खास सम्मान नहीं रहता था। यहाँ तक मेरी बुआ और उनके बच्चे भी पिताजी को कोई सम्मान नहीं देते थे। मेरे दोनों ताऊ के बच्चे गाँव के स्कूल से आगे पढने को तैयार नहीं हुआ। वे सब के सब अपने कमरों में आराम फरमाते और ऐश करते। वे सब हर महीने बिना कोई काम या मेहनत किया पिताजी से एक निश्चित रकम लेते, अपने अनाप-शनाप खर्चो के लिए।

पिताजी मुझे पढ़ाना चाहते थे, मैं भी पढ़ना चाहता था। पिताजी ने मुझे शहर भेज दिया। मैंने एक नामचीन स्कूल में बीएससी पाठ्यक्रम में दाखिला ले लिया। हालाँकि मैं अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान केंद्रित किये हुए था, पर मैं उम्र के उस पड़ाव पर था, जहाँ यह ध्यान का भंग हो जाना लाजिमी था। मैं केमिस्ट्री में थोड़ा कमजोर था, तो पिताजी ने मुझे इसकी ट्यूशन लेने की हिदायत दी। जहाँ मैं केमिस्ट्री की क्लास अटेंड करने जाता था, उससे थोड़ी दूर पर संगीत और नृत्य सिखाने का एक विद्यालय था। जिसने मेरा ध्यान भंग किया वह खूबसूरत दोशीजा इसी संगीत के विद्यालय में संगीत और नृत्य सीखने आती थी।

(अगले अंक में जारी)

बाँध-संस्कृति

विनय कुमार तिवारी

"बंधवा पर महवीर विराजै" बचपन में जब इसे सुना था तब तक बांध से परिचित भी नहीं हो पाया था! इसी दौरान उपमन्यु वाली कहानी जरूर पढ़ी थी और जाना था कि, छोटी सी कोई 'बंधी' पानी रोकने के भी काम आती है और ऐसी बंधियों की कितनी जरूरत होती है इसका अहसास उपमन्यु की कथा पढ़कर हो गया था! वाकई! तब ये छोटी-छोटी बंधियाँ एकदम समाजवाद टाइप की होती होंगी।

इसके बाद उस 'महवीर' वाले 'बँधवा' से परिचित हुआ था! वो क्या कि मैंने सुना था, सन अठहत्तर की बाढ़ में इलाहाबाद में गंगा के बढ़ते जलस्तर को देखकर किसी बड़े इंजिनियर ने इलाहाबाद के डीएम साहब को उसी बाँध को काटने की सलाह दी थी कि इससे बाढ़ का पानी फैल जाएगा और जलस्तर घट जाएगा। लेकिन डीएम साहब ने यह कहते हुए मना कर दिया था कि 'भइ, अगर बाढ़ के कारण बाँध को कटना ही है तो वह वैसे भी कट जाएगा। इसे काटने की जरूरत नहीं!' खैर, इसके बाद गंगा का जलस्तर घटना शुरू हो गया था और 'बँधवा' कटने से बच गया था! ऐसे होते हैं हमारे बड़े इंजीनियर और इनकी सलाह! इसीतरह की सलाहों से बड़े-बड़े बाँध बनाए जाते होंगे।

हाँ, अब तक तो अच्छी तरह से बाँधों से परिचित हो चुका हूँ। इनमें रुके पानी से अपन गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत से ऊँचाई से टारबाइन पर गिरते पानी से बिजली बनते हुए जाना है। गुरुत्वाकर्षण-बल ही वह कारण है जिससे कोई भी ऊपर की चीज नीचे चली आती है। यह सहज गति है, प्राकृतिक गति है। हमारी जनता-जनार्दन प्रत्येक पाँच वर्ष बाद कुछ लोगों को पलायन-वेग की गति से ऊपर प्रक्षेपित कर देती है। ये नीचे से ऊपर स्थापित हुए लोग गुरुत्व-बल के विरोधी बन जाते हैं और चीजों पर लगने वाला गुरुत्वाकर्षण बल धरा का धरा रह जाता है। यही ऊपर पहुँचे हुए लोग नीचे वालों के लिए बड़े-बड़े बाँध बनाते हैं और उसमें फाटक भी लगाए होते हैं तथा चीजों को नीचे आने के लिए अपने मनमाफिक ढंग से फाटक को खोलते और बंद करते हैं! तदनुसार ही नीचे वाले हरे-भरे और सुखी होते रहते हैं। मतलब, अगर आप को भी बाँध से परिचित होना है तो गुरुत्वाकर्षण के विरोधी बनिए और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में घुसकर देखिए, नीचे से पलायित होइए, पता चल जाएगा!

इधर अपन भी बाँधों के आसपास घूमकर जायजा ले चुके हैं। वह क्या है कि इन बाँधों के आसपास खूब हरियाली रहती है। इस हरियाली को देखकर मेरा भी मन लकदक हो जाता है! मेरा मानना है कि बाँध से दूर वाले इस सब्जबाग को देखकर अपना भी मन लकदक कर लेते होंगे, तभी तो अपने देश में 'बाँध-संस्कृति' चल पड़ी है! यह बाँध बनाना इसलिए भी जरूरी है कि, इस पृथ्वी पर जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी है, वैसे-वैसे पूंजीवाद भी बढ़ता गया है और छीनाझपटी शुरू हो गई, परिणामस्वरूप अब 'मेड़बंधी' से काम चलने वाला नहीं है। इस पूँजीवादी जमाने में मेड़बंधी तो समाजवादी प्रवृत्ति है, इसका त्याग कर बड़े बाँध वाली संस्कृति अपनाना अब अपरिहार्य हो चुका है।

ये बड़े बाँध हमें प्रतिकूल परिस्थिति में सुरक्षा का वैसे ही भरोसा देते हैं जैसे कि जनता से अर्जित ताकत के बल पर ऊपर जाता गुरुत्व-बल का विरोधी कोई नेता नीचे वालों को आश्वासन देता है! इस बाँध-संस्कृति ने जनसंख्या-वृद्धि और समाजवाद के आपस के व्युत्क्रमानुपाती संबंध का खूब फायदा उठाया, जिसमें आदमी का विस्थापन होता है। तो, यहाँ हर व्यक्ति दूसरे को विस्थापित कर अपने लिए बाँध बनाकर उस पर फाटक लगाए बैठा है! ■

इच्छाधारी हनीप्रीत की तलाश

देवेन्द्र राज सुथार

टी.वी. में, अखबारों में, नेताओं के नारों में, गाँव-गली-गलियारों में सब जगह डेरा सच्चा सौदा प्रमुख फर्जी बाबा राम रहीम गुरमीत सिंह की शिष्या उर्फ दत्तक बेटी हनीप्रीत का ही जिक्र है। मोहल्ले के पांच वर्ष के बच्चे से लेकर अस्सी वर्षीय बुजुर्ग रामू काका जिनके मुंह में दांत नहीं, पेट में आंत नहीं, फिर भी मुंह पर सवाल है- 'बेटा! हनीप्रीत मिली क्या?' हनीप्रीत जैसे हनीप्रीत न होकर कालाधन हो, जिसे हर आड़ा-टेड़ा नेता पकड़कर लाने का दावा करता है। अब तो नेताओं को कालाधन लाऊंगा की जगह यह कहना चाहिए- 'भाईयों और बहनो! मैं हनीप्रीत को लाऊंगा।' जो हनीप्रीत को ढूंढकर लाए, वो ही सच्चा नेता होए।

एक जमाना था जब स्त्रीलिंग शब्द पुलिस का घनिष्ठ संबंध समाज के प्रतिष्ठित डॉन व माफिया के साथ जोड़कर देखा जाता था। अलबत्ता यह कहा जाता था- डॉन को पकड़ना मुमकिन ही नहीं नामुमकिन है। डॉन के पीछे ग्यारह मुल्कों की पुलिस है। अब लगता है ये डॉयलॉग बदलकर ऐसे पेश किया जाना चाहिए- 'हनीप्रीत को पकड़ना मुमकिन ही नहीं नामुमकिन है। हनीप्रीत का पीछा दर्जन भर राज्यों की पुलिस कर रही है।' हनीप्रीत हुस्न की मल्लिका है, जिसकी शराबी आंखें किसी को भी धोखा दे सकती है। जिसके गुलाबी गाल किसी को भी मोहित कर सकते है। जिसके कमल की पखुंडियों जैसे होंठ किसी को भी विचलित कर सकते है। लहराते काले केशों की घनघोर घटाएं जिसकी छांव में कोई भी अपना अस्तित्व भूलकर खो सकता है।

हनीप्रीत की हवा कितनों को ही आसाराम बनने पर विवश कर सकती है। ऐसी आकर्षक, सुन्दर, मनमोहनी, रुपवती हनीप्रीत की भला किसको तलाश नहीं होगी ! पर मिलती ही नहीं है ससुरी ! मिलती है तो बाबाओं को। यह भी कितनी अजब-गजब बात है प्राचीन समय में बाबा, ऋषि-मुनि नवयुवतियों से दूर रहकर तपस्या करते थे। लेकिन आज जमाना बदल गया है। आज तो कोई मामूली से मामूली बाबा भी बिना नवयुवती के साथ अपना दरबार चलाना पसंद नहीं करता। अंग्रेजी शब्द हनी का हिन्दी में अर्थ होता है शहद और प्रीत यानि प्रेम। मतलब प्रेम का शहद। जिसे कौन नहीं चखना चाहेगा? मुझे लगता है हनीप्रीत के पीछे पुलिस को न लगाकर एंटी रोमियो स्कॉड के नाम पर पकड़े गये सड़कछाप मंजनुओं के गिरोह को लगाना चाहिए। और साथ में यह स्कीम रख देनी चाहिए कि पकड़कर लाने वाले को हनीप्रीत के साथ पांच घंटे बिताने का सुअवसर दिया जायेगा। अगर सौभाग्यवश मेरी इस बात का मान रखते हुए सरकार यह ऑफर अमल में लाती है, तो कसम से सबसे पहले मैं ही भागूंगा हनीप्रीत को पकड़ने के लिए।

हनीप्रीत इच्छाधारी नागिन की तरह रंग-रूप बदलकर पुलिस की आंखों को चकमा दे रही है। बरहाल, स्थिति को देखकर लगता है हनीप्रीत जैसा राष्ट्रीय मुद्दा शांतिपूर्वक हल होने से देश की समस्त समस्याओं का समाधान हो जायेगा! हनीप्रीत आते ही जैसे भारत किसी मिसाइल लांच के सफल प्रक्षेपण की भांति विश्व कीर्तिमान रच लेगा! हनीप्रीत मिलते ही जैसे फर्जी बाबाओं को जन्म देने वाले रक्तबीज का सदैव के लिए अंत हो जायेगा!

आज पुलिस के साथ-साथ मीडिया की मोस्ट डिमांडेड गर्ल बन चुकी है हनीप्रीत। कुछेक मीडिया के चैनल वाले बाबा गुरमीत सिंह की गिरफ्तारी से लेकर अब तक हनीप्रीत के पूरे खानदान का पोस्टमार्टम कर चुके हैं। यहां तक कि उन्होंने तो पड़ौसियों को भी नहीं छोड़ा। आज हनीप्रीत और हनीसिंह का दौर चल रहा है। बाबाओं को हनी की तलब है। अधिकांश बाबाओं के मुंह में राम और बगल में कोई न कोई हनीप्रीत है। सही है आज के इस दौर में हनीप्रीत के बिना भला कोई बाबा कब तक रहे? ■

'जय विजय' के सभी रचनाकारों एवं पाठकों को प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें!

-- विजय कुमार सिंघल, सम्पादक

(पृष्ठ ३ का शेष)

पितर स्मरण का पर्व

ज्ञात-अज्ञात पूर्वजों, सजीव-निर्जीव प्राणी तथा वस्तुओं को भी तर्पण देने का विधान है। शास्त्रोक्त मान्यता के अनुसार पितृ पक्ष में अपने पितरों के निमित्त यथाशक्ति श्रद्धापूर्वक श्राद्ध किया जाता है। इससे पितृ संतुष्ट होते हैं तथा व्यक्ति के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। पितरों का उचित रूप से क्रियाकर्म न होने, श्राद्ध नहीं किये जाने से पितृ दोष लगने की मान्यता है। पितृ दोष से बचने के लिए हमें अपने पूर्वजों से इन दिनों में क्षमायाचना करनी चाहिए। हम अपने पूर्वजों का स्मरण करते रहें, भावी पीढ़ी भी अपने पूर्वजों के बारे में भिज्ञ हो, इसके लिए प्रतिवर्ष पितृ पक्ष में अपने पूर्वजों का श्राद्ध और तर्पण यथाशक्ति अवश्य ही किया जाना चाहिए।

यह भी पौराणिक मान्यता है कि पितृ पक्ष में हमारे पूर्वज मोक्ष प्राप्ति की कामना लेकर अपने परिजनों के निकट अनेक रूपों में आते हैं। इस महापर्व में अपने पितरों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता ज्ञापित करने तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध किया जाना चाहिए। ज्योतिषीय गणना के अनुसार जिस तिथि में पूर्वजों का निधन होता है, इन सोलह दिनों में उसी तिथि पर श्राद्ध किया जाना चाहिए। पौराणिक मान्यता के अनुसार उसी तिथि में पुत्र या पौत्र द्वारा श्राद्ध किये जाने पर पितृ लोक में भ्रमण करने से मुक्ति मिलती है और पूर्वजों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः पितृ पक्ष में धार्मिक मान्यता के अनुसार तर्पण एवं श्राद्ध तो किया ही जाना चाहिए। इसमें धार्मिक मान्यता के साथ तार्किक आधार भी स्पष्ट है कि हम तथा हमारी भावी पीढ़ी अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुए उनके बारे में जानकारी भी रखे। ■

(पृष्ठ ५ का शेष)

३५ए जैसे कानून...

लोगों के स्वार्थों को साधने वाली सुनियोजित राजनीति है, क्योंकि अगर इस अनुच्छेद को हटाया जाता है तो इसका सीधा असर राज्य की जनसंख्या पर पड़ेगा और चुनाव में उन लोगों को वोट देने का अधिकार मिलने से जिनका मत अभी तक कोई मायने नहीं रखता था निश्चित ही इनकी राजनैतिक दुकानें बन्द कर देगा।

आखिर ऐसा क्यों है कि जम्मू कश्मीर भारत का हिस्सा होते हुए भी एक कश्मीरी लड़की अगर किसी गैर कश्मीरी लेकिन भारतीय लड़के से शादी करती है तो वह अपनी जम्मू कश्मीर राज्य की नागरिकता खो देती है, लेकिन अगर कोई लड़की किसी गैर कश्मीरी लेकिन पाकिस्तानी लड़के से निकाह करती है, तो उस लड़के को कश्मीरी नागरिकता मिल जाती है। समय आ गया है कि इस प्रकार के कानून पर खुली एवं व्यापक बहस हो।

कश्मीर के स्थानीय नेता जो इस मुद्दे पर भारत सरकार को कश्मीर में विद्रोह एवं हिंसा की बात करके आज तक विषय वस्तु का रुख बदलते आए हैं बेहतर होगा कि आज इस विषय पर ठोस तर्क प्रस्तुत करें कि इन दमनकारी कानूनों का बोझ देश क्यों उठाए ? इतने सालों में इन कानूनों की मदद से आपने कश्मीरी आवाम की क्या तरक्की की? क्यों आज कश्मीर के हालात इतने दयनीय है कि यहाँ के नौजवान को कोई भी ५०० रुपये में पत्थर फेंकने के लिए खरीद पाता है?

देश जानना चाहता है कि इन विशेषाधिकारों का आपने उपयोग किया या दुरुपयोग? क्योंकि अगर उपयोग किया होता तो आज कश्मीर खुशहाल होता, खेत खून से नहीं केसर से लाल होते, डल झील में लहू नहीं शिकारा बहती दिखतीं, युवा एके ४७ नहीं विन्डोज ७ चला रहे होते, और चारु वलि खन्ना जैसी बेटियाँ आजादी के ७० साल बाद भी अपने अधिकारों के लिए कोर्ट के चक्कर लगाने के लिए विवश नहीं होतीं। ■

(पृष्ठ २० का शेष)

जल प्रलय और...

कार्यकर्ताओं के आने जाने व खाने का उत्तम प्रबंध था।

यह विडंबना ही है कि प्राकृतिक आपदा की इस संकट बेला में सभी जनप्रतिनिधि व पार्टियां एकजुट होकर बाढ़ पीड़ितों की सेवा व राहत कार्यों में लगे रहने की बजाय राजनीतिक रैली व एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप में भिड़े हुए हैं। इनकी स्थिति सावन के धृतराष्ट्रों वाली है ,जिन्हें जन समस्याओं से ज्यादा अपने गठबंधन व कुर्सी की चिंता है। ये बाढ़ पीड़ितों की सुध लेने की बजाय अपने-अपने सत्तामोह में बेसुध थे। बेहाल जनता जल प्रलय व जन प्रतिनिधियों के उदासीन रवैये के दोहरी मार को झेलने को मजबूर थी। ■

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहानी : एक था मोनू

था और कुछ ही दिनों में इस नए धंधे में रम गया। विजू दादा का बर्ताव भी मेरे प्रति अच्छा ही था।

एक दिन मैं भोजन करके रात में सोया और जब मेरी नींद खुली तो मैंने अपने आपको एक बेड पर पड़े पाया। मेरी एक टांग काट दी गयी थी, यह समझने में मुझे देर नहीं लगी। मैं बहुत रोया, चीखा-चिल्लाया, लेकिन इससे क्या हो सकता था? सामने वही आदमी विजू दादा बैठा हुआ था। थोड़ी देर बाद वह मेरे पास आया- 'मैं देख रहा था धीरे-धीरे तुम्हारी कमाई कम होती जा रही थी। अब तुम्हारी कमाई दुगुनी हो जाएगी। जो हुआ उसे भूल जाओ और आगे का ध्यान दो।'

मेरे पास और कोई चारा भी नहीं था। वाकई अब मेरी कमाई दुगुनी हो गयी है। लेकिन साहब! क्या कानून हम जैसे गरीबों के लिए ही है? एक गरीब नाबालिग लड़का अगर मेहनत करके ईमानदारी से अपना पेट भरना चाहे तो वह जुर्म हो जाता है जबकि अमीरों के बेटे किसी टीवी शो के लिए कड़ी मेहनत करे तो उसे तालियां और सम्मान के साथ ही ढेर सारा पैसा मिलता है। ये दोगला कानून क्यों? क्या आप कुछ कर पाएंगे कि फिर कोई मोनू भीख मांगने के लिए मजबूर न हो?'

कहकर वह खामोशी से खड़ा हो गया। उसकी बात सुनकर मन द्रवित हो गया था लेकिन उसके सवालों का जवाब मेरे पास भी नहीं था, अतः दस रुपये का एक नोट जबरदस्ती उसके हाथ में ठूंसकर और चायवाले का पैसा देकर मैं जल्दी में होने का बहाना बनाकर अपने घर की तरफ चल पड़ा। ■

स्वच्छता दोहे

बिखरी हो जब गंदगी, तब विकास अवरुध्द
घट जाती संपन्नता, बरकत होती क्रुध्द
वे मानुष तो मूर्ख हैं, करें शौच मैदान
जो अंचल गंदा करें, पकड़ो उनके कान
फलीभूत हो स्वच्छता, कर देती सम्पन्न
जहाँ फैलती गंदगी, नर हो वहाँ विपन्न
बनो स्वच्छता दूत तुम, करो जागरण खूब
नवल चेतना की 'शरद', उगे निरंतर दूब
मन स्वच्छ होगा तभी, जब स्वच्छ परिवेश
नव स्वच्छता रच रही, नव समाज, नव देश
है स्वच्छता सोच इक, शौचालय अभियान
शौचालय हर घर बने, तब बहुओं का मान
सभी जगह हो स्वच्छता, तो सब कुछ आसान
यही आज कहता 'शरद', है स्वच्छता मान

-- प्रो. शरद नारायण खरे

(पृष्ठ २६ का शेष)

पैसा सब कुछ नहीं

कंगाल है। क्या आप सद्‌बुद्धि और सद्‌गुण को धन नहीं मानते? अष्टावक्र आठ जगह से टेड़े थे और गरीब थे, पर जब जनक की सभा में जाकर अपने गुणों का परिचय दिया, तो राजा उनका शिष्य हो गया। द्रोणाचार्य जब धृतराष्ट्र के राज दरबार में पहुँचे, तो उनके शरीर पर कपड़े भी न थे, पर उनके गुणों ने उन्हें राजकुमारों के गुरु का सम्मानपूर्ण पद दिलाया। हम कह सकते है कि यदि व्यक्ति पैसे की हाय छोड़कर अपने जीवन को सादगी एवं सरलता से जिये, तो वह मानसिक शांति के साथ जी सकता है, जिसका आज घोर अभाव दिखाई देता है। सारे मत पंथ, धर्म शास्त्र यह कहते नहीं थकते कि जीवन में कितना भी धन, सम्पत्ति, पुत्र, परिवार इकट्ठा कर लो, लेकिन एक दिन खाली हाथ ही जाना पड़ता है, तो क्यों न मैं धन संग्रह की बेकार मजदूरी से दूर होकर ऐसा काम करूं, जिसका फल और यश मैं अपने साथ ले जा सकूं? एक बार सोचना जरूर! ■

(पृष्ठ १४ का शेष)

असुरक्षित बच्चे...

अच्छे नागरिकों की आधारशिला विद्यालयों में ही रखी जाती है. पर इसी समाज के कुटिल और क्रूर व्यक्ति बच्चों के साथ शर्मनाक हरकत करके स्कूल को बदनाम तो करते ही हैं, शेष बच्चों पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है. ऐसे ही आजकल बच्चे मोबाइल और इन्टरनेट के चलते बहुत बर्बाद हो रहे हैं. ऊपर से कुछ कातिल शातिर गेम भी बहुत से बच्चों को आत्महत्या करने पर मजबूर करने लगे हैं.

बच्चों के लिए माँ की गोद के बाद अपना घर और उसके बाद पाठशाला ही सुरक्षित जगह होती है. ऐसे में हम सबको, अभिभावकों व विद्यालय प्रबंधकों को बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि यही बच्चे आगे चलकर हमारे देश का भविष्य बनने वाले हैं. हम सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि बच्चों को सही वातावरण दिया जाय ताकि ये योग्य नागरिक बनें. ■

विश्व मन की भाषा है हिंदी : प्रो. विनोद कुमार मिश्र

हिंदी दिवस समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय मॉरिशस के महासचिव का विचार

नई दिल्ली। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व-विद्यालय में हिंदी दिवस समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरिशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कहा कि हिंदी विश्व मन की भाषा बन चुकी है। हिंदी के विकास में सभी भारतीय भाषाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी को सोशल मीडिया से जोड़कर तकनीकी की भाषा बनाना जरूरी है। बदलते परिदृश्य में व्यावहारिकता को अपनाकर भाषा का स्वाभिमान जगाने से हिंदी को और बल प्रदान किया जा सकेगा।

१४ सितंबर को गालिब सभागार में हिंदी दिवस समारोह प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। समारोह में साहित्य विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, कुलसचिव कादर नवाज खान मंचासीन थे।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कहा कि विश्व भर के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। हिंदी का बाजार बढ़ रहा है। सच मानें तो आज हिंदी के अच्छे दिन आये हैं। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के हवाले से कहा कि यह मालिक की भाषा है, जिसे हम चला रहे हैं। परंतु विश्व के अनेक देशों में अंग्रेजी से भी काम नहीं चल सकता। सभी देशों में अपनी-अपनी भाषाओं में ही ज्ञान भरा पड़ा है। उन्होंने माना कि प्रतिरोध, ज्ञान और विकल्प की भाषा बनाने के लिए सभी को उपलब्ध तकनीक और संसाधनों का उपयोग करने की आदत ड़ालनी चाहिए। हिंदी को धार्मिकता से कार्मिकता की भाषा बनाने के लिए ऐसा करना जरूरी है।

भारतवंशी और हिंदी फिल्मों का हिंदी के प्रति योगदान का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि पढ़ने, लिखने लायक साहित्य होगा, तो भाषाएं जीवंत रह सकेंगी। उन्होंने हिंदी को रोजगार से जोड़ते हुए कहा कि देश और दुनिया में अनुवाद के रूप में हिंदी दायरा बढ़ रहा है। हमें बाजार का रुख देखकर हिंदी को लाल कपड़े से बाहर निकालना होगा। उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से हिंदी के इतिहास लेखन की परियोजना और अन्य उपक्रमों की जानकारी भी अपने वक्तव्य में दी। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने हिंदी फिल्में और धारावाहिकों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अनेक हिंदी धारावाहिक यूरोपीय देशों में देखे जा रहे हैं और चर्चित भी हैं। हिंदी फिल्में तो दुनिया भर में मशहूर हैं। उन्होंने हिंदी को लेकर अपनी कविताओं का पाठ भी किया। स्वागत वक्तव्य प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने दिया।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी राजेश यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव कादर नवाज खान ने किया। इस कार्यक्रम में अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। ■

टूनबाज़ी... ©क्षितिज बाजपेयी

डॉ सुलक्षणा अहलावत को किया गया सम्मानित

फरीदाबाद। नरेंद्र मोदी विचार मंच की महिला शाखा की प्रदेश अध्यक्ष, शिक्षाविद, कवयित्री एवं समाज सेविका डॉ सुलक्षणा अहलावत को दो सामाजिक संस्थाओं 'वक्त दें-रक्त दें' रक्तदान सेवा सोसायटी और जीवनदायिनी सोशल फाउंडेशन द्वारा सम्मानित किया गया। ये दोनों सम्मान उन्हें सोशल मीडिया में मुहिम चलाकर लगभग दो साल की कैंसर पीड़ित बच्ची के लिए धनराशि एकत्रित करने के लिए प्रदान किये गए।

डॉ सुलक्षणा पेशे से शिक्षिका हैं और मेवात जिले के आरोही मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रेवासन में अंग्रेजी प्रवक्ता हैं। उन्हें लेखन का भी शौक है तथा उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं। उन्हें अनेक संस्थाएँ अपने मंचों से सम्मानित कर चुकी हैं। ■

'आजादी के ७० वर्ष और हिन्दी की दशा' पर विचार गोष्ठी

बहादुरगढ़। हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर) के अवसर पर बहादुरगढ़ में 'आजादी के ७० वर्ष और हिन्दी की दशा' विषय पर एक भव्य विचार गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती शीला राठी (चेयरपर्सन, नगर परिषद, बहादुरगढ़) ने अपने अभिभाषण में युवाओं का आह्वान करते हुए उन्हें हिन्दी को पूर्ण सम्मान देने की बात कही।

मुख्य वक्ता पुष्पवाटिका परिवार के सदस्य व पुष्पवाटिका पत्रिका के साहित्यिक सम्पादक करुणेश वर्मा 'जिज्ञासु' ने हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता, प्रमाणिकता और वैज्ञानिकता की बात रखी तथा गंभीर चिंतन हेतु कुछ प्रश्न उठाये। साथ ही इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमें अपनी सोच हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान के प्रति समर्पित रखना चाहिए। हमें उन रचनाकारों, साहित्यकारों एवं कवियों के बारे में सोचना चाहिए

जिन्होंने अमूल्य सेवा कर हिन्दी साहित्य के भंडार को समृद्ध करने का प्रयास किया है।

स्वयंसेवी संस्था 'स्नेह' की दिल्ली प्रदेश संयोजिका तथा पत्रकारिता की छात्रा आकांक्षा आनन्द ने बेहद ओजस्वी शब्दों में हिंदी के प्रति अपने समर्पण और भावनाओं को व्यक्त किया। आकांक्षा ने हिन्दीसेवी

(शेष पृष्ठ २३ पर)

जय विजय मासिक

कार्यालय- ए-१०७, इलाहाबाद बैंक अधिकारी आवास, हजरतगंज चौराहा, लखनऊ-२२६००१ (उप्र)

मोबाइल-9919997596; ई-मेल-jayvijaymail@gmail.com; वेबसाइट-www.jayvijay.co

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।